

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1993

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1993

Contents

28 February 1993 Vol. 6 No. 1

31 March 1993 Vol. 6 No. 7

31 May 1993 Vol. 6 No. 2

30 June 1993 Vol. 6 No. 4

31 August 1993 Vol. 6 No. 5

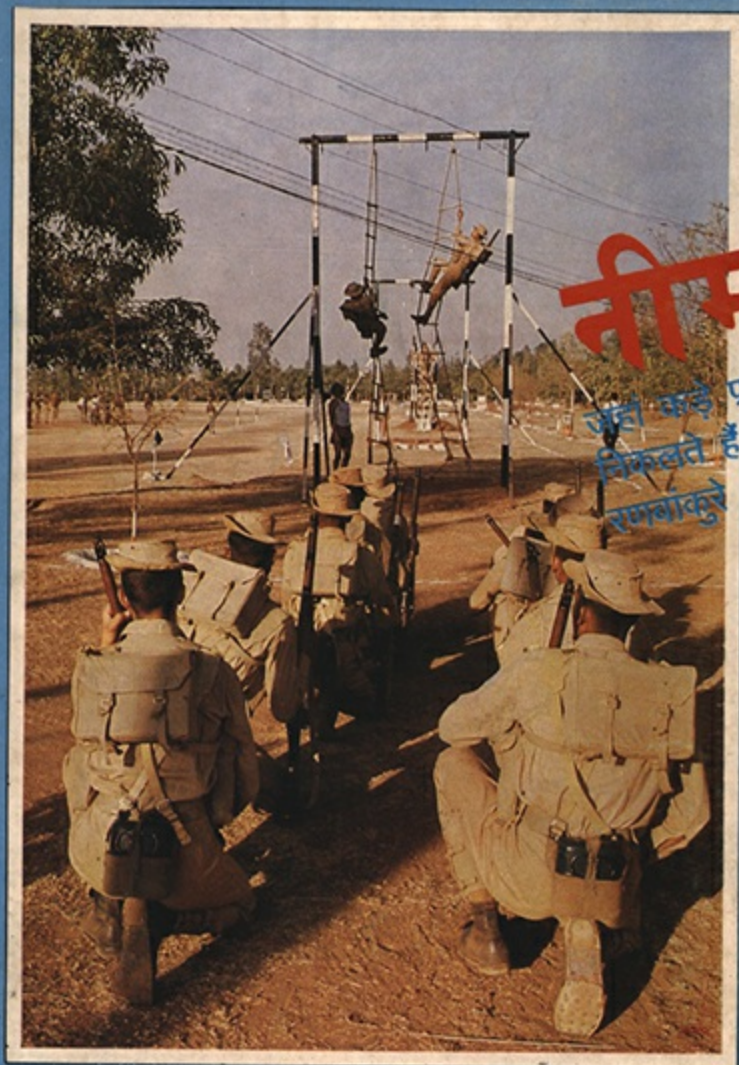
30 September 1993 Vol. 6 No. 6

30 November 1993 Vol. 6 No. 7

31 December 1993 Vol. 6 No. 8

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-6 अंक-1 28 फरवरी, 1993 9 फाल्गुन, शक 1914



नीमच

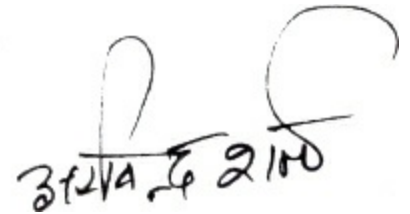
जहाँ कड़े प्रशिक्षण से तप क
निकलते हैं के.रि.पु बल के
रामबाकुरे

छात्र-ए.एस. पनौत्रा (पंजाब केसरी)

सम्पादकीय

अपनी परंपराओं से जुड़ना, अपनी विरासत से साक्षात्कार एक सुखद अहसास है। और नीमच स्थित के.रि.पु. बल की यूनिटों का दौरा इस अहसास की सुखानुभूति है। दिल्ली से कुछ चुनिंदा पत्रकारों तथा दूरदर्शन के लोगों को के.रि.पु. बल के इतिहास से परिचित कराने तथा अपनी समृद्ध परंपरा के साक्षात्कार हेतु नीमच ले जाया गया था। उनके साथ-साथ हमारा भी नीमच का यह पहला दौरा था। यह सत्य है कि नीमच के.रि.पु. बल की हृदयस्थली है। के.रि.पु. बल के प्रत्येक कार्मिक को अपने सेवा काल के दौरान एक न एक बार अवश्य ऐसा अवसर तलाशना चाहिए कि वह एक बार नीमच जा सके। नीमच अपने हृदय में कई स्मृतियों एवं शौर्य गाथाओं को समेटे है। इनका परिचय नीमच में आने के बाद ही मिलता है। इस पूरे दौरे के दौरान सारे कार्यक्रमों की रूपरेखा भी महानिरीक्षक दक्षिण सेक्टर श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने इस प्रकार से बनाई थी कि नीमच का हर पहलु, इतिहास का हर उजागर पक्ष और दैनिक कार्यव्यापार का प्रत्येक पहलु प्रत्यक्ष रूप में पत्रकारों के सम्मुख खड़ा कर दिया गया। इतने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद प्रत्येक पत्रकार किसी फोर्स के इतने भव्य साक्षात्कार से मोहित था, अपने दौरे से संतुष्ट था। इस अंक में इस दौरे पर विशेष रिपोर्ट।

बलिदान के.रि.पु. बल की परंपरा है और उपलब्धियां इसका इतिहास रहा है। के.रि.पु. बल की उपलब्धियों और बलिदानों का एक संक्षिप्त परिचय हमें अपनी वार्षिक परेड के अवसर पर पदक लेने वालों की लम्बी कतार से मिलता है। और यह मौका (वार्षिक परेड) एक ऐसा मौका होता है, जब हम अपने विगत के कार्यकलापों का अवलोकन कर उनकी रोशनी में आगे की ओर कूच करते हैं। बीता वर्ष हमारे लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसी एक वर्ष में पिछले कई वर्षों से पंजाब में आतंकवाद के विरुद्ध लड़ी जा रही लड़ाई के निर्णायक दौर की शुरुआत हुयी, और अंततः वर्ष 1993 के इन दो प्रारम्भिक महीनों में यह लड़ाई लगभग जीती जा चुकी है। आने वाले वर्ष देश के नागरिकों, विशेष कर पंजाब तथा अलगाववादी एवं देशद्रोही गतिविधियों से ग्रस्त राज्यों के नागरिकों के लिए सुख, समृद्धि एवं शांति से पूर्ण होंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

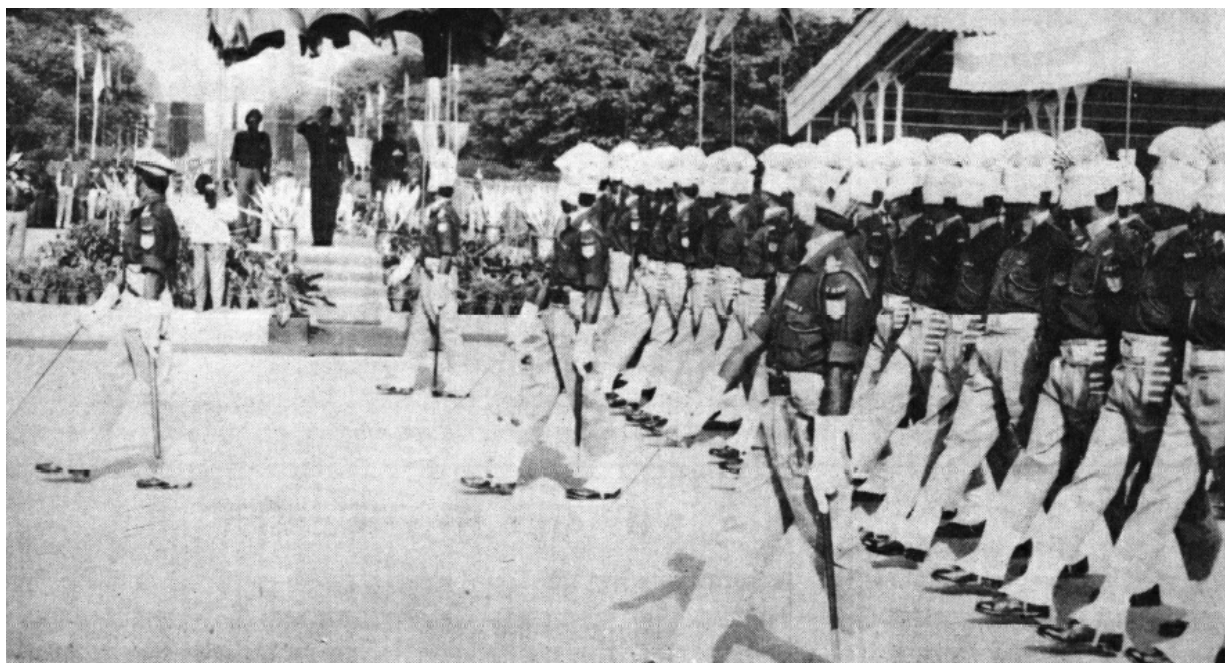


(अ. ना. शर्मा)

53 वां वार्षिकोत्सव

“के.रि.पु. बल जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरा है”

—डी.पी.एन. सिंह (महानिदेशक के.रि.पु. बल)



परेड की सलामी लेते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह का कहना है कि “केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को सरकार ने जहां भी, किसी भी प्रकार के कार्य के लिए भेजा है, यह बल जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरा है। इससे बल का काम और भी दायित्वपूर्ण हो जाता है, उसे देखना है कि उसके कार्यों से जनता को तकलीफ न हो तथा कोई उसकी तरफ अंगुली न उठा सके।”

श्री सिंह बल की 53वीं सालगिरह के अवसर पर 28 दिसंबर '92 को झड़ौदाकलां में बल के ग्रुप केंद्र में आयोजित एक भव्य समारोह के बीच बोल रहे थे।

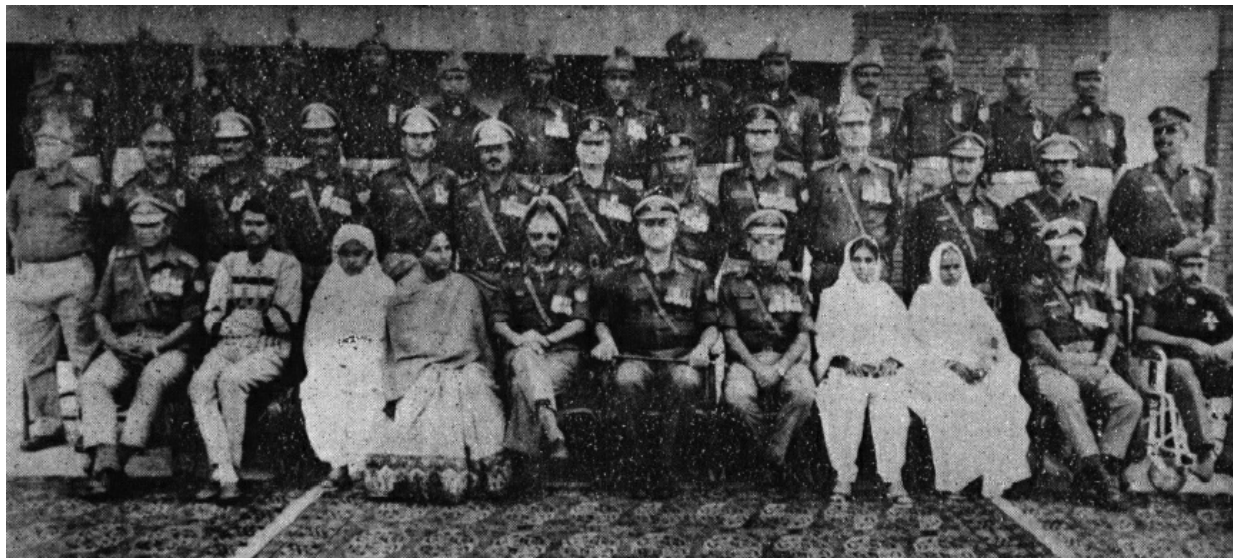
श्री सिंह ने कहा कि के.रि.पु. बल एक बहुमुखी प्रतिभा वाला पुलिस बल है, इसने हर सौंपे गए दायित्व को पूर्ण जिम्मेदारी के साथ सफलता पूर्वक निभाया है। उन्होंने बताया कि पिछला साल बल के लिए सफलताओं से भरा रहा है। सरकार ने फैसला लिया है कि अब बल में अस्थायी कम्पनियां गठित नहीं की जाएंगी तथा बल के

सदस्यों की रोटेशनल टोर्नेंग के लिए भी आठ बटालियनों की व्यवस्था की गई है। सरकार के ये दो निर्णय बल के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

महानिदेशक महोदय ने बताया कि बल की नवगठित इकाई रेपिड एक्शन फोर्स ने अल्प समय में ही बहुत नाम कमाया है, मगर उसे अभी आगे और कठिन चुनौतियों का सामना करना है।

बल की महिला बटालियन के संबंध में उनका कहना था कि देश में इस बटालियन की मांग बहुत ज्यादा है, यह मांग ही इसकी सफलता का सुबूत भी है। महानिदेशक महोदय ने भविष्य में एक और महिला बटालियन के गठन की आशा भी व्यक्त की।

कर्तव्य की बलि वेदी पर अपने प्राण अर्पित कर देने वाले तथा पदक प्राप्त करने वाले बल के वीर कार्मिकों को उन्होंने के.रि.पु. बल के माथे का तिलक बताते हुए उन्हें एक गीत भी समर्पित किया।



विजेताओं के साथ महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह तथा बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी

इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने बल के 36 कार्मिकों को पुलिस पदक भी प्रदान किये। इनमें से 32 कार्मिकों को शौर्य वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए। जिनमें से पांच को यह पदक मरणोपरांत दिए गए। चार कार्मिकों को यह पदक विशिष्ट सेवाओं के लिए प्रदान किए गए।

इससे पूर्व महानिदेशक महोदय ने एक भव्य परेड की सलामी ली। परेड का नेतृत्व कमांडेंट डी.एन.एस. बिष्ट ने किया। परेड में बल के विभिन्न सेक्टरों की छः टुकड़ियों ने भाग लिया, जिनमें नवगठित रेपिड एक्शन फोर्स तथा महिला बटालियन की टुकड़ी भी शामिल थी।

आकर्षक तथा चुस्त परेड के प्रभावित महानिदेशक महोदय ने परेड कमांडर को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क देने की भी घोषणा की।

सी.आर.पी.एफ.-गीत

अनुपम प्रतीक यह 'सेवा-भक्ति' का सी.आर.पी.एफ. कहलाता है।
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भारत माता ही माता है।
इतिहास साक्षी उस लौह-पुरुष ने वरद-हस्त इन पर रखा।
अब भारत क्या संसार नहीं ऐसा फौलाद बनाता है।
मिट्टी पानी इनको गढ़ने को हर कोने से लाते हैं।
भारत का कोना-कोना इनको संकट समय बुलाता है।
यह लाखों वीरों का दल-बल इस महा-धर्म का पालक है।
पूजा-नमाज़ जैसे भी करें पर भारत भाग्य विधाता है।
नारी ने इनमें पाई प्रतिष्ठा नर से पीछे नहीं रही।
वीरांगना वह कर देती है जो वीर नहीं कर पाता हैं।
अकबर प्रताप गुरु गोविन्द सिंह शिवाजी की पुलकेसी की।
इस मातृभूमि की रक्षा में यह निस-दिन शीश चढ़ाता है।
इस जनमीत के बूते से दुर्लभ भी होता है संभव।
बाढ़ अकाल महामारी सब में जन-साथ निभाता है।
इस अथक पथिक का तीन सौ पैसठ दिन ही यों चलते रहना।
है खून का रग-रग में चलना जो देश की जान बचाता है।
हर मौसम फहराने वाला भारत का यह खाकी झन्डा।
जितनी ही आंधी चलती है उतना ही यह लहराता है।
डरते ही हैं डरने वाले मरने वाले मरते होंगे।
इस बल का वीर नहीं मरता वह अमर-शहीद हो जाता है।

डी.पी.एन. सिंह ("गगन")
महानिदेशक, के.रि.पु. बल,

400 कार्मिकों द्वारा रक्तदान



रक्तदान शिविर का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान आज न केवल देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए अपना लहू बहा रहे हैं, अपितु आवश्यकता पड़ने पर पीड़ित मानवता को अपना लहू देने में भी वे किसी से पीछे नहीं हैं। इसी परंपरा पर चलते हुए बल के 400 से अधिक अधिकारियों और जवानों ने 24 दिसम्बर, 92 को आर.के. पुरम स्थित बल के अस्पताल में रक्तदान किया। बेस अस्पताल-I के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डी.एन. कर के निरीक्षण में आयोजित किये गये इस रक्तदान शिविर में रामपुर के उप महानिरीक्षक श्री डी.के. सूरी सहित कई वरिष्ठ अधिकारियों ने भी रक्तदान किया। रक्तदान करने वालों में शामिल 9 बटालियन के सहायक कमांडेंट यादवेंद्र सिंह ने इस शिविर में 12वीं बार रक्तदान किया।

इस रक्तदान शिविर का आयोजन बल की 53वीं जयंती के उपलक्ष्य में किया गया था। रक्तदान शिविर का उद्घाटन के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने किया।

इस मौके पर रेड क्रॉस सोसायटी के निदेशक डा.एम.एल. गुप्ता, बल के महानिरीक्षक जोगिंदर सिंह, जी. झा, एम.के. सिंह, जी.पी. दूबे सहित अन्य कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

53वीं वार्षिक परेड के अवसर पर परेड का नेतृत्व कर रहे, परेड कमांडर

कमांडेंट डी.एन.एस. बिष्ट को महानिदेशक महोदय ने परेड स्थल पर ही महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क देने की घोषणा की है।

कमांडेंट डी.एन.एस. बिष्ट वर्तमान में महानिदेशालय में सहायक निदेशक (प्रशासन) के पद पर कार्यरत हैं।

एस.वी.एम. त्रिपाठी, के.रि.पु. बल के नए अपर महानिदेशक



भारतीय पुलिस सेवा के 1961 बैच के उत्तर प्रदेश काडर के श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 7 जनवरी 93 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में अपर महानिदेशक का पदभार संभाल लिया। इस पद पर नियुक्ति से पूर्व वह उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक थे। श्री त्रिपाठी भारतीय पुलिस सेवा के अपने बैच में प्रथम स्थान पर रहे थे।

अपने भारतीय पुलिस सेवा के लम्बे कार्यकाल के दौरान वह कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे, जिनमें सहायक निदेशक राष्ट्रीय पुलिस अकादमी माऊंट आबू, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मुरादाबाद तथा कानपुर, उप महानिरीक्षक भारत तिब्बत सीमा पुलिस, भारत सरकार के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग में संयुक्त सचिव तथा उत्तर प्रदेश में महानिरीक्षक कार्मिक एवं आर्थिक अपराध, अपर महानिदेशक आर्थिक अपराध तथा भ्रष्टाचार निरोधी विभाग तथा सतर्कता व सुरक्षा विभाग के महानिदेशक के पदभार शामिल हैं।

श्री त्रिपाठी को 1978 में सराहनीय सेवाओं के लिए तथा 1990 में विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है।

नीमच

के.रि.पु. बल की हृदयस्थली

लेख-अनिल गुप्ता छाया-ए.एस. पनोत्रा (पंजाब केसरी), अनिल गुप्ता

राजस्थान की सीमा से सटे मध्य प्रदेश के एक छोटे से शहर नीमच में दोपहर ढलते ही ज्यों-ज्यों अस्त होते सूर्य की लालिमा सुर्ख से सुर्खतम होती जाती है, त्यों-त्यों पूरा इलाका गोलियों की गड़गड़ाहट और बमों के धमाकों में डूबता चला जाता है। किसी अनजान आदमी के लिए यह एकदम नवीन अनुभव है, मगर नीमच के आम नागरिक जानते हैं कि यह आवाजें किसी युद्ध क्षेत्र से नहीं अपितु के.रि.पु. बल के रंगरूटों द्वारा की जा रही चांदमारी एवं युद्धाभ्यास के दौरान दागी जा रही गोलियों की आवाजें हैं। यह सिलसिला कई वर्षों से निरंतर चला आ रहा है। यों तो नीमच अफीम की खेती के लिए जाना जाता है, मगर विख्यात वह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की जन्मस्थली के रूप में है।

27 जुलाई, 1939 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की पहली बटालियन यहीं स्थापित की गयी थी। उस समय यह बल क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के नाम से जाना जाता था। इस दृष्टि से नीमच के.रि.पु. बल कार्मिकों के लिए किसी तीर्थस्थली से कम नहीं। यह एक ऐसा स्थान है जिसने के.रि.पु. बल को जन्म से लेकर पलते-बढ़ते और आज के भव्यतम रूप में आकार ग्रहण करते देखा है। यह के.रि.पु. बल का सबसे बड़ा केंद्र है। अपने सेवा काल के दौरान कम से कम एक बार नीमच की यात्रा संभवतः प्रत्येक के.रि.पु.बल कार्मिक की इच्छा रहती है। नीमच आना अपनी विरासत, अपनी परंपरा, अपने इतिहास और अपनी जड़ों से जुड़ना है।



आईने में प्रतिबिम्ब देखकर निशाना लगाते हुए श्री टी.एस. ढिल्लन

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की समृद्ध परंपरा, बालेदानों भरे इतिहास और भव्यतम स्वरूप के दर्शन समग्र रूप से करने हों, तो नीमच से अधिक उपयुक्त स्थान अन्य कोई नहीं होगा। इसी उद्देश्य से दिल्ली के पत्रकारों एवं दूरदर्शन की एक टीम नीमच गयी।

जन सम्पर्क अधिकारी अ.ना. शर्मा के नेतृत्व में यह दल 14 फरवरी, 1993 को अजमेर होता हुआ 15 फरवरी को नीमच पहुंचा। तीन दिन के बेहद व्यस्त कार्यक्रम के बीच बल के दक्षिण सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.आर. कीर्तिकेयन ने पत्रकारों को के.रि.पु. बल के जीवन, इतिहास, कार्यव्यापार, प्रशिक्षण एवं जीवन चर्या के लगभग हर पहलु से परिचित करा दिया। प्रत्येक पत्रकार बेहद थका होने के बावजूद के.रि.पु.बल के इस भव्य एवं बहुआयामीय स्वरूप के दर्शन से अचंभित था, मोहित था।



के.रि.पु. बल के जवान एल.एम.जी. से अपने फायर कौशल का प्रदर्शन करते हुए।

सर्वप्रथम महानिरीक्षक श्री डी.आर. कीर्तिकेयन ने पत्रकारों को समग्र रूप से के.रि.पु. बल एवं विशेष रूप से नीमच स्थित के.रि.पु. बल की युनिटों का परिचय दिया।

नीमच कंटोनमेंट की स्थापना सन् 1817 में मेजर जनरल डेविड ओक्टरलोनी ने की थी। इस कंटोनमेंट की स्थापना के लिए भूमि उन्हें ग्वालियर राज्य के महाराजा से प्राप्त हुयी। 1817 से 1912 तक यह क्षेत्र सेना तथा कंटोनमेंट के अधिकार क्षेत्र में रहा। नीमच का कुल क्षेत्र 2693.61 एकड़ है, जिसमें 1503.47 एकड़ नागरिक आबादी के लिए है तथा 1190.14 एकड़ क्षेत्र सैन्य क्षेत्र एवं लैंडिंग क्षेत्र है। आजकल इसी 1190.14

एकड़ भूमि पर के.रि.पु. बल को विभिन्न यूनिटें स्थापित हैं।

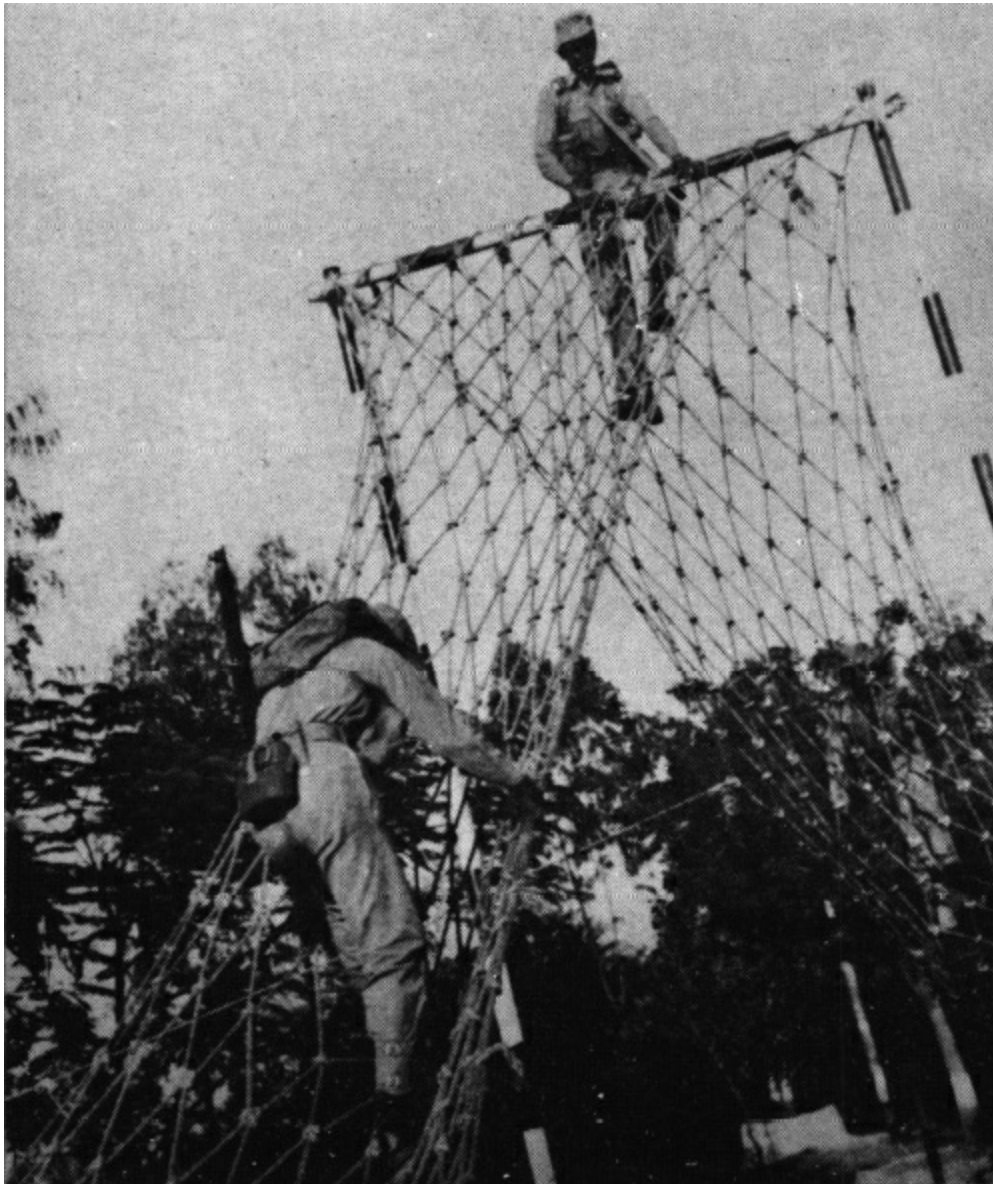
1818 में मेजर जनरल डेविड ओक्टरलोनी ने यहां अपने लिए एक बंगले का निर्माण कराया। आज इस बंगले में के.रि.पु. बल अधिकारियों की मैसेज है। भारी तादाद में फैले स्थानीय लुटेरे जागीरदारों तथा पिंडारियों से निबटने के लिए उसने 1819 में किले का निर्माण प्रारंभ कराया, जिसके निर्माण पर उस समय डेढ़ लाख रुपए खर्च हुए। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों ने मोहम्मद अली बेग के नेतृत्व में 3 जून 1857 को ओक्टरलोनी हाऊस पर हमला कर सरकारी खजाने को लूट लिया तथा किले पर आक्रमण कर दिया, जहांकि अधिकतर अंग्रेज अधिकारी शरण लिए हुए थे। लेकिन कुछ ही समय के बाद ब्रिटिश फौजों ने कैप्टन लायड तथा अर्जुन सिंह के नेतृत्व वाली मेवाड़ की फौज की सहायता से फिर किले पर कब्जा कर लिया। इस किले में फांसी दिए जाने से पूर्व कुछ समय के लिए तात्या टोपे को भी रखा गया था। आज इस किले में के.रि.पु. बल का क्वार्टर गार्ड, भंडार गृह तथा शस्त्रागार है।



पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए महानिरीक्षक श्री डी.आर. कीर्तिकेयन

27 जुलाई 1939 को क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस का गठन किया गया। पहाड़ियों से घिरे नीमच क्षेत्र को इस फोर्स के प्रशिक्षण तथा अन्य गतिविधियों के मुख्यालय के रूप में उपयुक्त पाया गया। क्योंकि यहां से मालवा तथा राजपूताना के रजवाड़ों पर सुगमता से नजर रखी जा सकती थी। मेजर जे.एफ. पर्ट को इस युनिट का कमांडेंट नियुक्त किया गया तथा उन्हें इम्पीरियल पुलिस की तर्ज पर इस फोर्स को गठित

करने का दायित्व सौंपा गया। प्रारंभिक रूप से इस फोर्स में 375 हिंदू, 375 मुसलमान तथा 250 सिक्खों की भर्ती की गई। पहले से ही निर्मित बैरकें तथा इमारतें सी.आर.पी. को सौंप दी गईं। 1942-43 में सी.आर.पी. को सैन्य इमारतें तथा सैन्य क्षेत्र भी सौंप दिया गया। और अंत में बची एकमात्र डिफेंस बिल्डिंग भी 1965 में 4.80 लाख रुपये में के.रि.पु. बल को सौंप दी गई। और इस प्रकार पूरा नीमच स्टेशन के.रि.पु. बल के अधिकार क्षेत्र में आ गया।



अपने प्रशिक्षण के दौरान बल के जवान

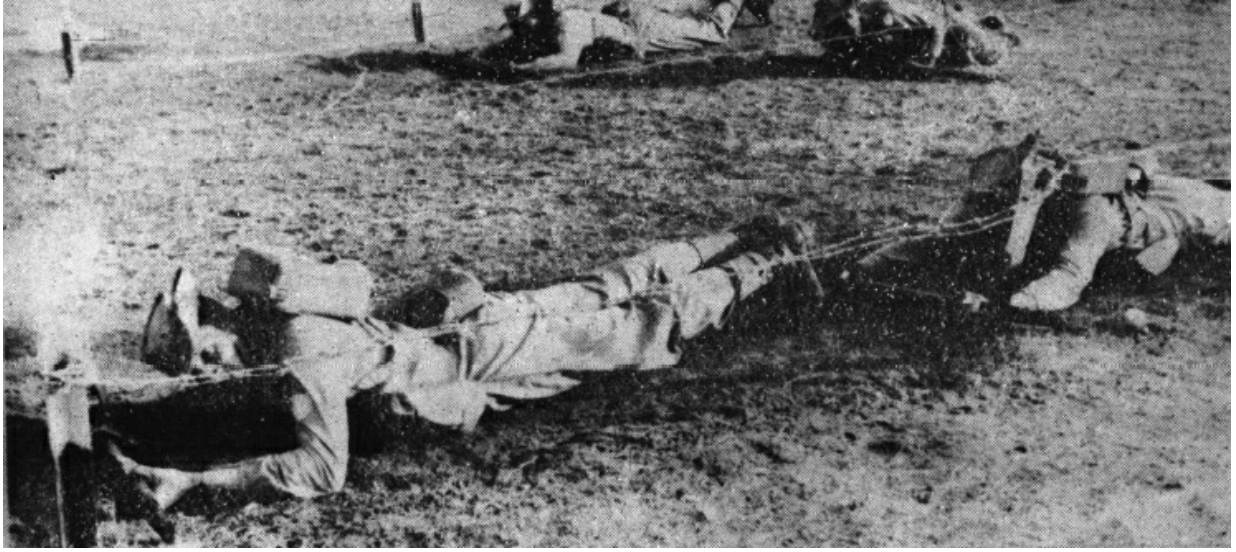
1939 से नीमच में शुरू हुए के.रि.पु. बल के इतिहास ने आज भव्यतम रूप ग्रहण कर लिया है। आज नीमच में एक ग्रुप केंद्र, एक उप महा निरीक्षक कार्यालय, केंद्रीय प्रशिक्षण कालिज-1, रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र-1, 75 बटालियन, 89 बटालियन, 112 बटालियन तथा 4 सिगनल बटालियन स्थित हैं। इस केंद्र की 75 बटालियन को पिछले

वर्ष के लिए के.रि.पु. बल को सर्वश्रेष्ठ पारिचालन बटालियन को टाफी प्रदान की गई है। इन सब के अतिरिक्त यहां पर परिवार कल्याण केंद्र, अस्पताल, स्कूल तथा अन्य कई सहायक संस्थाएं भी काम कर रही हैं।

सी.टी.सी.-1 तथा आर.टी.सी.-1 के रंगरूटों ने पत्रकारों के दिल को कई हैरत अंगेज कारनामे दिखाए। जिनमें कठिन प्रशिक्षण, आतंकवादियों से मुठभेड़, नाकाबंदी, घात, पैट्रोलिंग के दौरान लापरवाही के नतीजे, बिना हथियार युद्ध कौशल, जंगल कैम्प तथा कमांडेंट टी.एस. ढिल्लन के नेतृत्व में निशानेबाजी तथा गोलीबारी का अपूर्व प्रदर्शन भी शामिल था। कैम्प फायर तथा बड़े खाने में जहां पत्रकारों को अधिकारियों तथा जवानों के बीच सीधे सामंजस्य के दर्शन हुए, वहीं नीमच के अपर उप महानिरीक्षक श्री ओ.पी. भट्टा की पत्नी ने पत्रकारों को इस स्टेशन पर जवानों के परिवारों के लिए चलाए जा रहे कल्याण कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। जिम्मेसियम हाल में अंतरराष्ट्रीय स्तर के जिमनास्ट बलराम शील के नेतृत्व में बल के जिम्नास्टों के करतब देख कर पत्रकार अचंभित थे। सिगनल केंद्र का कार्य व्यापार और 4 सिग. बटालियन के कमांडेंट पी. कुमार द्वारा दिए गए ब्यौरे पत्रकारों के लिए अनूठी जानकारी थे।

21 अक्टूबर 1954 को हाट स्प्रिंग में चीनी आक्रमणकारियों का सामना करते हुए शहीद हुए बल के 10 वीर सिपाहियों की याद में नीमच में एक स्मारक स्थापित किया गया है। इस स्मारक पर शहीदों को महानिरीक्षक श्री डी.आर. कार्तिकेयन, उप महानिरीक्षक श्री बराड़ तथा अपर उप महानिरीक्षक श्री ओ.पी. भट्टा द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करना एक भावभीना अनुभव था।

नीमच से वापसी के दौरान चित्तौड़गढ़ का किला तथा उसमें स्थित भव्य इमारतों को देखने का लोभ हम लोग संवरण नहीं कर पाए। भव्य विजय स्तम्भ तथा चित्तौड़ का किला जहां हमारी वीर भोग्या भूमि की एक ऐतिहासिक मिसाल है, वहीं नीमच की भूमि उसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में पल्लवित पुष्पित हो रहे एक राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। इन दोनों ही अनुभूतियों के सैलाब से सराबोर पत्रकारों ने अपने इन अनुभवों को महज खुद तक ही समेट कर नहीं रखा, अपितु मात्र दो दिन बाद ही देश के लगभग सभी प्रमुख अखबारों के माध्यम से उनके यह अनुभव उनके लाखों पाठकों के स्मृति पटल पर अंकित हो गए।



प्रशिक्षण के दौरान कंटीले तारों के नीचे से गुजरते बल के जवान

26 कार्मिकों को पुलिस पदक

भारत के राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 26 अधिकारियों एवं जवानों को उनकी सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से दो कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए तथा 24 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए यह पदक प्रदान किए गए हैं।

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक:

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के स्पेशल सेक्टर के महानिरीक्षक श्री जी. झा तथा श्रीनगर स्थित उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्री एम.एल. गुलेरिया को विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किए गए हैं।

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक:

जबकि सराहनीय सेवाओं के लिए पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं-ग्रुप केंद्र गुवाहाटी के अपर उप महानिरीक्षक जे. बासनेट, आर.टी.सी.-2 आवड़ी (मद्रास) के प्रधानाचार्य आर.के.बी. शर्मा, कमांडेंट के.एस.वी. सुब्रह्मण्यन (3 सिगनल बटालियन), कमांडेंट मोहेंद्र सिंह सेठी (18 बटालियन), कमांडेंट बच्चन सिंह रावत (उप महानिरीक्षक रामपुर के स्टाफ अधिकारी), कमांडेंट सविंदर सिंह (87 बटालियन), कमांडेंट प्रीतम सिंह (अपर महानिदेशक उत्तर पश्चिम जोन कार्यालय), सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) नरेंद्र कुमार अवस्थी (महानिदेशालय), कमांडेंट दामोदरन (106 बटालियन), डिप्टी कमांडेंट इंदरजीत सिंह गिल (23 बटालियन), डिप्टी कमांडेंट लक्ष्मण सिंह नेगी (ग्रुप केंद्र हैदराबाद), सहायक कमांडेंट अनोखे लाल (25

बटालियन), सूबेदार मेजर लेखराज शर्मा (ग्रुप केंद्र इम्फाल), इंस्पेक्टर भूप सिंह (6 बटालियन), इंस्पेक्टर बद्री प्रसाद शर्मा (99 बटालियन), इंस्पेक्टर रणबीर सिंह (27 बटालियन), सब इंस्पेक्टर नथी लाल (सिगनल ग्रुप केंद्र), सब इंस्पेक्टर भगत सिंह (1 बटालियन), हैड कांस्टेबल मूर्ति सिंह (1 बटालियन), हैड कांस्टेबल के. चेलाप्पन (13 बटालियन), हैड कांस्टेबल भोला नाथ (14 बटालियन), कांस्टेबल प्रीतम सिंह (75 बटालियन), कांस्टेबल तुलसीदास (6 बटालियन) तथा वाशरमैन सूरज राम (72 बटालियन)।

124 बटालियन में बैंक

स्टेट बैंक आफ बीकानेर एंड जयपुर ने अपने ग्राहकों की सेवाओं के लिए जयपुर, रामगढ़ स्थित के.रि.पु. बल की 124वीं बटालियन स्थल पर एक विस्तार पटल खोला है।

इस विस्तार पटल के माध्यम से बटालियन के स्टाफ के अलावा नजदीक के लगभग 15 गांवों को भी बैंकिंग सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। विस्तार पटल का उद्घाटन 124वीं बटालियन के कमांडेंट श्री पृथ्वी सिंह चौधरी ने किया। समारोह की अध्यक्षता बैंक के उप महाप्रबंधक नरेश चंद्र शर्मा ने की।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह जनवरी, 1993 में मृत्यु के 51 मामलों में कुल 17,55,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपए की केंद्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के तीन मामलों में कुल 45,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

कल्याण कार्यक्रम हेतु बैठक



नई दिल्ली ग्रुप केंद्र के कल्याण केंद्र का दौरा करती हुयी श्रीमति डी.पी.एन. सिंह

बल के कार्मिकों हेतु कल्याण कार्यक्रमों को तेजी से चलाने तथा नए कार्यक्रम शुरू करने के उद्देश्य से के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की एक बैठक 5 फरवरी, 93 को नई दिल्ली स्थित 40 बटालियन स्थल पर हुयी। बैठक की अध्यक्षता महानिदेशक महोदय की पत्नी श्रीमती डी.पी.एन. सिंह ने की।

बैठक में प्रौढ शिक्षा, परिवार कल्याण, आधारभूत चिकित्सा सुविधा, बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए छात्रावास की सुविधा, कर्तव्य पर मारे गए कार्मिकों की विधवाओं तथा आश्रितों के पुनर्वास जैसी अन्य कई समस्याओं पर विचार किया गया तथा यह निर्णय लिया गया कि इन समस्याओं के समाधान हेतु बल के कार्मिकों की पत्नियों की एक एसोसिएशन बनाई जाए तथा उसी के तहत इन समस्याओं को हल करने के प्रयास किए जाएं।

इसके कुछ दिन बाद इस बैठक में शामिल महिलाओं सहित बल के कई अन्य अधिकारियों की पत्नियों ने नई दिल्ली ग्रुप केंद्र स्थित कल्याण केंद्र का दौरा कर वहां चलाए जा रहे कल्याण कार्यक्रमों का जायजा लिया।

हैदराबाद में रक्तदान शिविर

ग्रुप केंद्र हैदराबाद में 6 फरवरी, 93 को एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन बल के दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री डी.आर. कीर्तिकेयन ने किया। इस कैम्प में बल की महिला कर्मियों सहित विभिन्न रैंकों के लगभग 300 जवानों और अधिकारियों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर पत्रकारों से

बात करते हुए श्री कांतिकेयन ने बताया कि हैदराबाद स्थित बल का बेस अस्पताल हैदराबाद शहर तथा उसके आसपास के इलाकों में इसी तरह के और रक्तदान शिविर आयोजित करेगा।

माह जनवरी '93 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी '93 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां. मदन चंद्र मजुमदार (68 बटा.), उ. नि. अजीत सिंह (19 बटा.), नायक/ड्रा. साहेब राव (12 बटा.), कां. मान सिंह (ग्रु. के. नई दिल्ली), है. कां. भारत उपाध्याय (61 बटा.), है. कां. फतेह सिंह (21 बटा.), नायक ए. चंद्रन (37 बटा.), है.कां. तरसेम सिंह (76 बटा.), है.कां. सत्यानारायण (ग्रु. के. गांधी नगर), कां. देवेंद्र कुमार (1 बटा.), है.कां. पी.के. नाम्बियार (94 बटा.), है.कां./ड्रा. एस.एम. पांडेय (72 बटा.), नायक टेक सिंह (ग्रु. के. बनतालाब), कुक उदय सिंह (13 बटा.), नि. रावत सिंह (16 बटा.) स.उ.नि. (मि.) यमुना प्रसाद (ग्रु. के. नयी दिल्ली), है.कां. के.एल. काले (119 बटा.), ला. नायक हरीराम (119 बटा.), कां. अब्दुल हमीद (119 बटा.), कां. वैद्यनंद (78 बटा.), है.कां. जयसिंह (18 बटा.), कां. मदन लाल (119 बटा.), कां. अभय सिंह (119 बटा.), उ.न. (मि.) जेड.एच. फरीदी (108 बटा.), कां. पी.के. जमातिया (97 बटा.), लां. नायक पी.बी. चंद्रभान (79 बटा.) तथा नायक शिव प्रसाद (58 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह नवंबर, 1992 में 105 बटा. के ला. नायक दीनदयाल तथा माह दिसंबर 1992 में 58 बटा. के कां. बी.डी. मंजुनाथ व ग्रुप केंद्र रामपुर के. कां. मोहम्मद लतीफ की भी मृत्यु हुयी।



I S E 93

**INTERNATIONAL SECURITY EXHIBITION
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI.
SEPTEMBER 1-5, 1993**

Large scale exposition on the latest security technology and state-of-the-art equipment in aid of security duties.

DISPLAY PROFILE

- * Security Systems, equipment and devices for :
- * Access control
- * Bomb detection, removal & disposal
- * Fire safety
- * Personal Protection
- * Building Security
- * Riot Control
- * Safe Communication
- * Fibre optic devices

BENEFICIARIES

- * Public/Private Sector Industries
- * Defence services
- * Paramilitary Forces
- * State Police Forces
- * Banks
- * Fire Fighting Organisations
- * Sea Ports/Air Ports
- * Railways
- * Manufacturers and dealers of security devices.

Sponsored by
MINISTRY OF
HOME AFFAIRS
(Govt. of India)

Organised by
INDIA TRADE
PROMOTION
ORGANISATION

COLLABORATION
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE
13, CGO COMPLEX, LODHI ROAD, NEW DELHI-3



नीमव में के.रि.पु. बल के राहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दक्षिण सेक्टर
के महानिरीक्षक श्री डी.आर. कार्तिकेयन

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-1, सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ोदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-6 अंक-7 31 मार्च, 1993 10 चैत्र शक 1915



—छाया: एस.के. खन्ना

केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री राजेश पायलट 42वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों के रामायण के अवसर पर
के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह से परिचय प्राप्त करते हुए।

सम्पादकीय

खेल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। हमारे खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपने जौहर दिखाते रहे हैं। मगर इसे बार के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में अपने खिलाड़ियों का प्रदर्शन देख कर हमें निराशा हुयी। व्यक्तिगत मुकाबलों में हमारी स्थिति पहले से सुधरी है, मगर टीम मुकाबलों में हम फिर पिछड़ गए। परिणामतः हमें तीसरे स्थान से ही संतोष करना पड़ा। यदि टीम स्तर पर हमारा स्तर थोड़ा भी और बेहतर होता तो निश्चित हमें दूसरा स्थान प्राप्त हो जाता।

बहरहाल, यह समय विगत को याद कर रोने का नहीं, अपितु उससे सबक ले आगे की तैयारी करने का है। अपने खिलाड़ियों को इन खेलों के शीर्ष पर देखने के लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए। इसके लिए जरूरी होगा हम खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने के लिए सतत अभ्यास तथा प्रशिक्षण की सुविधा दें, उन्हें हर संभव सुविधा उपलब्ध कराएं, विशेष कर जिन प्रतियोगिताओं में हम पिछड़ जाते हैं, उन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

यह बात हमें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कोई प्रतियोगिता अकेला खिलाड़ी नहीं जीतता। निस्संदेह उसकी प्रतिभा, उसका संघर्ष, उसका परिश्रम सर्वोपरि होता है, मगर उसको आधार प्रदान करने के लिए, उसकी प्रतिभा को आकार देने के लिए पूरे महकमे को उसी शिद्दत, उसी समर्पण के साथ जुटना पड़ता है। यदि खिलाड़ी जीतता है, तो यह सबकी जीत होती है, तो फिर हार के लिए हम अकेले खिलाड़ी को कैसे दोषी ठहरा सकते हैं।

अस्पताल किसी भी सैन्य जीवन का एक आवश्यक अंग हैं। इन अस्पतालों में मिलने वाली सुविधाओं का सीधा असर युद्ध क्षेत्र में लड़ रहे सैनिकों के मनोबल पर पड़ता है। इस क्षेत्र में के.रि.पु. बल भी अपवाद नहीं है। देश का सबसे बड़ा अर्द्धसैनिक संगठन होने के नाते इसके जवान पूरे देश में मातृभूमि की रक्षा, एकता और अखंडता के लिए प्राणोपन्न से लड़ रहे हैं। देश में तेजी से बढ़ती आतंकवादी एवं अन्य हिंसात्मक गतिविधियों से सबसे पहले सीधे हमीं को भिड़ना पड़ता है। ऐसी सूरत में तत्काल उपलब्ध कराई जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं का महत्व हमारे यहां अत्यधिक बढ़ जाता है। इन्हीं सुविधाओं की पत्रकारों को जानकारी देने के लिए पत्रकारों के एक दल को नई दिल्ली स्थित बेस अस्पताल-I में आमंत्रित किया गया। जहां उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह तथा उपनिदेशक चिकित्सा डा.सैनी ने पत्रकारों को बल में उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं की जानकारी दी। साथ ही पत्रकारों ने अस्पताल में भर्ती आतंकवादी घटनाओं में घायल कुछ जवानों से भी बात की। इस अंक में पत्रकारों के इस दौर से संबंधित एक विशेष रिपोर्ट दी जा रही है।

अ. ना. शर्मा

(अ. ना. शर्मा)

के.रि.पु. बल आई.टी.आई. का वार्षिक उत्सव



आई.टी.आई. के पुरस्कार प्राप्त करने वाले छात्र अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी एवं अन्य अधिकारियों के साथ।

20 फरवरी, 1993 को बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने वजीराबाद नई दिल्ली स्थित के.रि.पु. बल के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के वार्षिक उत्सव का उद्घाटन किया। इस मौके पर छात्रों का आह्वान करते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा कि वे तकनीकी क्षेत्र के तेजी से बदलते परिवेश के साथ तालमेल बनाए रखें। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में योग्यता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार भी प्रदान किए।

सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी की टाफी मोटर मकैनिक ट्रेड के द्वितीय वर्ष के छात्र राजेंद्र सिंह को प्रदान की गई। सर्वश्रेष्ठ वर्कशाप तथा छात्रावास की द्वितीय ट्राफियां भी मोटर मकैनिक ट्रेड को प्रदान की गईं।

इस मौके पर अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के प्रधानाध्यापक श्री

एस.सी. कपूर ने संस्थान के कार्यकलापों को जानकारी दी।

गत वर्ष परीक्षा में सम्मिलित हुए इस संस्थान के सभी 55 छात्रों के उत्तीर्ण हो जाने से संस्थान का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। गत वर्ष मोटर मकैनिक ट्रेड का एक विद्यार्थी राज्य स्तर की प्रतियोगिता में प्रथम रहा था।

के.रि.पु. बल ने 37 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह फरवरी, 93 में देश भर में कुल 37 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी कुल 16 मुठभेड़ों में 18 आतंकवादी मारे गए। इनमें पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

मारे गए आतंकवादियों में भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स आफ खालिस्तान का स्वयंभू ले. जन: हरजीत सिंह उर्फ जेटा, एरिया कमांडर साहिब सिंह उर्फ जमीर सिंह, बब्बर खालसा का कुलबीर सिंह उर्फ खेड़े, खालिस्तान आर्म्ड फोर्स जग्गा चनक ग्रुप का ले. जन. हरप्रीत सिंह उर्फ हरबंत सिंह, पंजावर ग्रुप का सुखजिंदर सिंह बराड़ उर्फ गोल्डी काका, खालिस्तान कमांडो फोर्स का एरिया कमांडर भोला सिंह, जप्फरवाल गुट का एरिया कमांडर सतनाम सिंह उर्फ जंगीयेरा तथा खालिस्तान कमांडो फोर्स का ही स्वयंभू ले. जन. श्याम सिंह उर्फ किरनदीप सिंह जैसे कुख्यात आतंकवादी भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 50 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में गोलीबारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 12 ए.के. 47 राइफलें, दो राकेट लांचर, एक जी.पी.एम.जी., सात राइफलें तथा आठ पिस्तौलें शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के 6 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा आठ जवान गंभीर रूप से घायल हुए।

42 वें अखिल भारतीय पुलिस खेल

सर्वश्रेष्ठ धावक का खिताब के.रि.पु. बल के पास

28 फरवरी, 1993 को लखनऊ में संपन्न हुए 42वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में सर्वश्रेष्ठ धावक का खिताब के.रि.पु. बल के राजेंद्र सिंह को दिया गया।

टीम प्रतियोगिताओं में के.रि.पु. बल की टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ, उसने कुल 142 अंक अर्जित किए। सीमा सुरक्षा बल 189 अंकों के साथ प्रथम तथा पंजाब

पुलिस 175 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही।

महिलाओं की श्रेणी में पंजाब पुलिस प्रथम, के.औ.सु. बल द्वितीय तथा बिहार पुलिस तीसरे स्थान पर रही।

खेलों के समापन के अवसर पर केंद्रीय आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए। अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष तथा आसूचना ब्यूरो के निदेशक श्री सी.जी. वैद्य भी इस मौके पर उपस्थित थे, उन्होंने खेलों के समापन की घोषणा की।

इस वर्ष 42वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों का आयोजन उत्तर प्रदेश पुलिस के तत्वाधान में 21 से 28 फरवरी तक लखनऊ में किया गया।

दौड़-कूद प्रतियोगिताओं का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी ने किया। इस मौके पर उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया था। इसमें अन्य रंगारंग कार्यक्रमों के अतिरिक्त पुलिस के जवानों द्वारा पी.टी. तथा मलखम्ब का भी आकर्षक प्रदर्शन किया गया।

इन प्रतियोगिताओं में केंद्रीय पुलिस संगठनों सहित विभिन्न राज्यों की 24 टीमों ने भाग लिया।



पोल वाल्ट मुकाबले में बल का एक प्रतियोगी



तीव्रतम धावक आर.एस. शर्मा, 100 मीटर मुकाबले के अंतिम क्षणों में।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों के प्रदर्शन के संदर्भ में इस बार उल्लेखनीय बात यह रही कि उसके धावकों का प्रदर्शन तो पहले की अपेक्षा अधिक बेहतर हुआ है, मगर टीम मुकाबलों में हम पिछड़ गए। दौड़-कूद प्रतियोगिताओं में बल की टीम ने पिछले वर्ष की तुलना में अधिक पदक जीते। सर्वश्रेष्ठ धावक राजेंद्र सिंह तथा तीव्रतम धावक आर.एस. शर्मा दोनों ही के.रि.पु. बल के सदस्य हैं। इन प्रतियोगिताओं में के.रि.पु. बल ने 6 स्वर्ण, चार रजत तथा दो कांस्य पदक जीते।

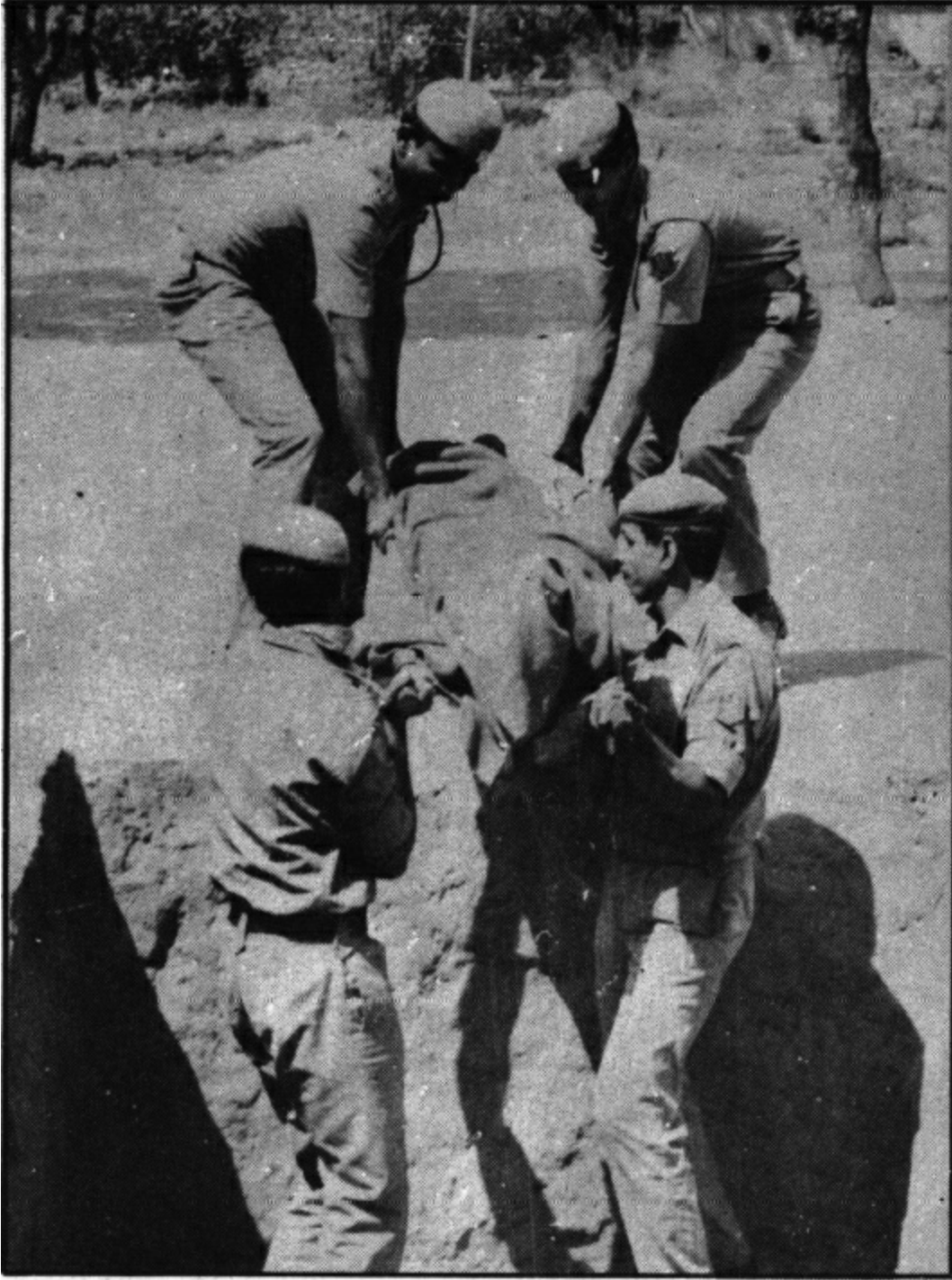
अन्य खेलों के क्षेत्र में, कबड्डी में, के.रि.पु. बल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। बास्केटबाल में चौथा स्थान प्राप्त हुआ, जिमनास्टिक में भी बल को चौथा स्थान प्राप्त हुआ, जूडो प्रतियोगिताओं में बल की टीम तीसरे स्थान पर रही तथा कुश्ती में उसे चौथा स्थान मिला। कांस्टेबल चंदर कोलेको जिमनास्टिक के वाल्टिंग हार्स मुकाबले में रजत पदक मिला। कुश्ती के 52 किग्रा श्रेणी मुकाबलों में बल के है कांस्टेबल जगबीर सिंह को रजत पदक मिला। इसके अतिरिक्त जूडो प्रतियोगिताओं में बल की टीम को एक स्वर्ण, एक रजत तथा दो कांस्य पदक प्राप्त हुए।



सर्वश्रेष्ठ धावक राजेंद्र सिंह, श्री राजेश पायलट के साथ।

पहली बार बल की महिला कांस्टेबल शीजी मोल्क ने हाई जम्प मुकाबलों में कांस्य पदक प्राप्त किया।

के.रि.पु. बल में चिकित्सा सुविधाएं



बमकांड में घायल व्यक्तियों को राहत पहुंचाने के कौशल का प्रदर्शन करते अस्पताल के कार्मिक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह ने 19 मार्च 1993 को दिल्ली के पत्रकारों को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों को दी जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं की जानकारी दी।

उन्होंने पत्रकारों को बताया कि आज के.रि.पु. बल के दिल्ली, हैदराबाद, तथा

गुवाहाटी केन्द्रों में 100-100 बिस्तरों वाले तीन अस्पताल, जम्मू, अजमेर तथा नौमच केन्द्रों में 50-50 बिस्तर वाले अस्पताल तथा 18 अन्य ग्रुप केन्द्रों में 40-40 बिस्तर वाले अस्पताल कार्य कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त बल की प्रत्येक ड्यूटी बटालियन में 10-10 बिस्तरों वाले एक-एक अस्पताल की व्यवस्था है।

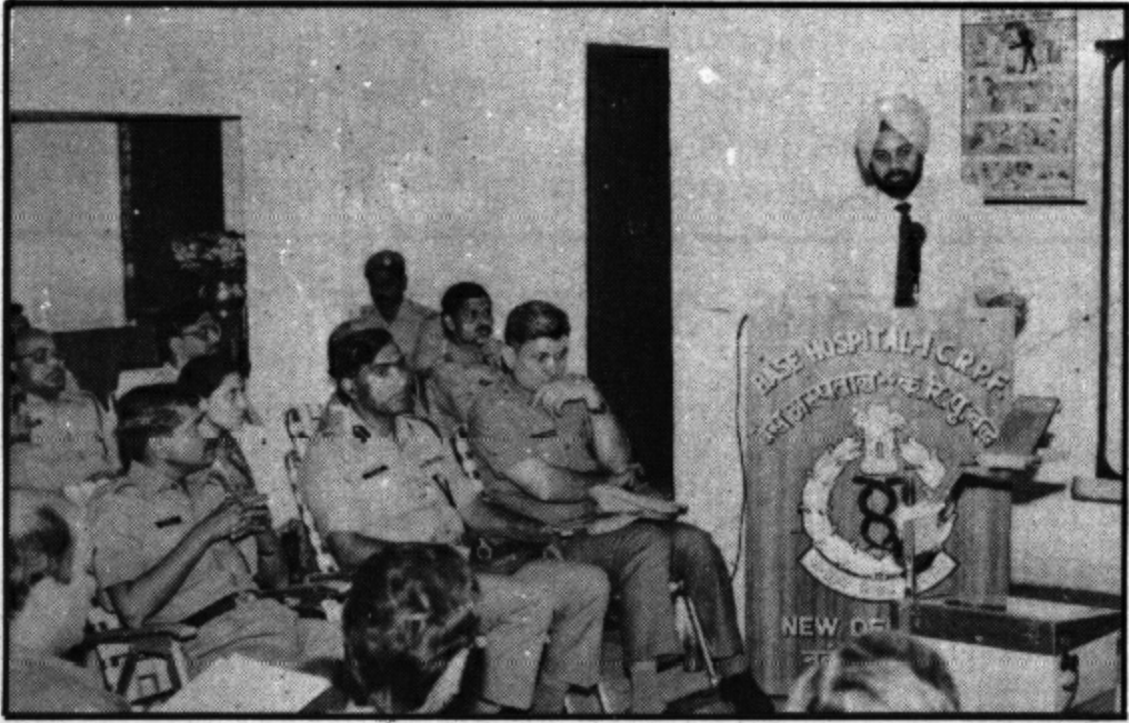
आज के.रि.पु. बल में डाक्टरों की बड़ी तादाद में 100 डाक्टर विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं, तथा ये अपनी सुविधाएं इन सभी अस्पतालों में प्रदान कर रहे हैं।

दिल्ली स्थित बेस अस्पताल -1 के.रि.पु. बल का एक मुख्य अस्पताल है, तथा जहां सभी विशेषज्ञ सुविधाएं उपलब्ध हैं। जिनमें अल्ट्रा-सोनोग्राफी, ओटोएनालाईजर, वेंटिलेटर, ओपरेटिव माइक्रोस्कोप, ओडियोमेट्री तथा स्वचालित ई.सी.जी. मशीन आदि शामिल हैं। इस अस्पताल में पूरे उत्तरी भारत, विशेष कर पंजाब और जम्मू कश्मीर से आतंकवादी मुठभेड़ों में घायल हुए जवानों को इलाज के लिए लाया जाता है। इस अस्पताल में देश के अन्य भागों में स्थित बल के अन्य अस्पतालों से भी मरीजों को विशेष चिकित्सा सुविधाओं के लिए भेजा जाता है।

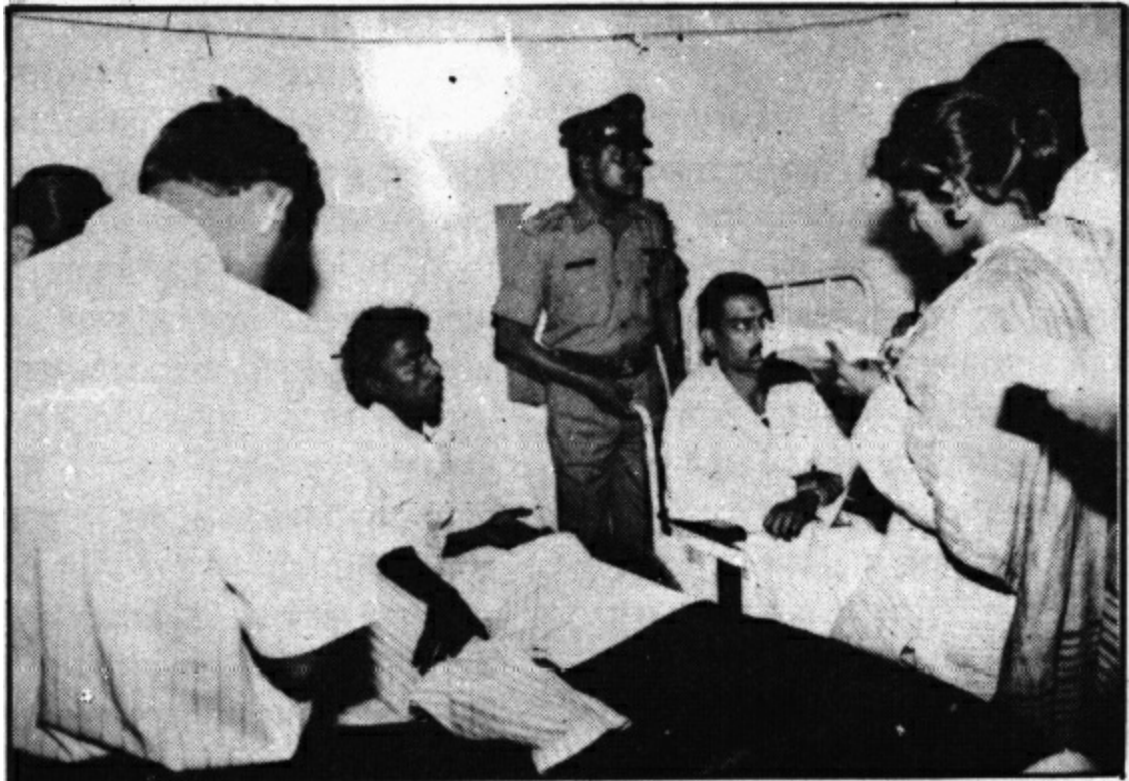
हालांकि दिल्ली स्थित बेस अस्पताल में 100 बिस्तरों की व्यवस्था है, मगर फिर भी यहां रोज लगभग 110 से 130 मरीजों को इन-डोर तथा 400 से 500 मरीजों को ओ.पी.डी. में चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई जाती है।

नागरिकों के लिए चिकित्सा सुविधा

चूंकि नजफगढ़ बहादुरगढ़ मार्ग पर कोई भी अच्छा एवं बड़ा अस्पताल नहीं है, अतः इस मार्ग पर होने वाली दुर्घटनाओं के शिकार मरीजों को इसी अस्पताल में लाया जाता है और इस तरह के मरीज लगभग रोज ही अस्पताल में आते हैं। यह अस्पताल किसी आपात स्थिति में भी नागरिकों को तत्काल चिकित्सा सुविधा प्रदान करता है। प्रसव के दौरान पैदा हुयी आपात स्थिति के मरीजों को भी स्थिति की नाजुकता को देखते हुए यहां भर्ती कर लिया जाता है। पिछले तीन सालों में इस अस्पताल में 327 दुर्घटनाओं के शिकार मरीजों तथा 21 प्रसव के मरीजों के मामलों में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई। मुफ्त टीकाकरण की सुविधा भी यहां आने वाले आस-पास के ग्रामीणों को उपलब्ध कराई जाती है।



पत्रकारों को संबोधित करते हुए उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह



अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रहे घायल जवानों से चर्चा में रत पत्रकार
फील्ड अस्पताल, श्रीनगर

इस अस्पताल की स्थापना रामबाग, जम्मू कश्मीर में की गई है, ताकि इस क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों में घायल जवानों को तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा सके। यहां चार वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी हर समय तैनात रहते हैं।

सीतामढ़ी

बेस अस्पताल-I नई दिल्ली से चार डाक्टरों की एक टीम अपने सहायकों तथा दवाइयों आदि के साथ सीतामढ़ी में दंगा-पीड़ितों को तत्काल सहायता पहुंचाने के लिए भेजी गई थी, इस टीम ने लगभग 7,626 लोगों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई।

पंजाब

पंजाब में बल के डाक्टर अपने जवानों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के अतिरिक्त ग्रामीणों का इलाज भी कर रहे हैं। इस अस्पताल में आपातकालीन दवाओं तथा अन्य उपकरणों का खासा बड़ा भाग आरक्षित रखा गया है। साथ ही किसी भी आपातकालीन स्थिति से निबटने के लिए डाक्टरों की एक टीम भी हरदम तैयार रहती है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण

इस अस्पताल में पूरे वर्ष 20 कांस्टेबलों के एक-एक बैच का तीन महीने का मैडीकल कोर्स चलता रहता है। इन कांस्टेबलों को फर्स्ट एड तथा युद्ध क्षेत्र में तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए तैयार किया जाता है। अब तक 780 कार्मिकों को यह प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

स्वास्थ्य शिक्षा

1. बेस अस्पताल के हर सेक्शन में एक क्लोज सर्किट टी.वी. नेटवर्क की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिसमें प्रतिदिन तीन से चार घंटे का शैक्षिक कार्यक्रम चलाया जाता है।
2. इस अस्पताल के विशेषज्ञ डाक्टर अक्सर दिल्ली स्थित युनिटों का दौरा कर एड्स, टी.वी., मलेरिया तथा अन्य संक्रामक बीमारियों के बारे में प्रारंभिक जानकारीयों एवं बचाव के उपायों एवं परिवार कल्याण के उपायों से कार्मिकों को अवगत कराते रहते हैं।
3. इस अस्पताल के डाक्टर बल के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों तथा माउंट आबू स्थित आंतरिक सुरक्षा अकादमी में अपने क्षेत्रों से संबंधित विषयों पर व्याख्यानो के लिए आमंत्रित किए जाते रहे हैं।

रक्तदान शिविर

एक मानवतावादी दृष्टिकोण के तहत के.रि.पु. बल में रक्तदान शिविरों का आयोजन बड़ी संख्या में किया जाता है। पिछले तीन सालों में इस बेस अस्पताल द्वारा चार बहुद रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 2,225 कार्मिकों ने, जिनमें बल की महिला कार्मिक भी शामिल थीं, रक्तदान किया। ये रक्त बाद में रेडक्रास को पीड़ित मानवता की सहायता के लिए दान कर दिया गया।

भविष्य की विस्तार योजनाएं

एक संगठित अस्पताल योजना के तहत-जिसमें सभी केन्द्रीय पुलिस संगठनों के कार्मिकों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जानी है। सरकार ने के.रि.पु. बल को एक नए अस्पताल तथा तीन अस्पतालों का स्तर बढ़ाने की स्वीकृति प्रदान की है। नव स्वीकृत 50 बिस्तर वाले अस्पताल का निर्माण आइजोल मिर्जोरम में किया जाएगा। जम्मू स्थित 50 बिस्तर वाले अस्पताल को 100 बिस्तरों तक तथा रामपुर और नागपुर के 30-30 बिस्तर वाले अस्पतालों को 50 बिस्तर वाले अस्पतालों में तब्दील किया जाएगा।

अलंकरण

अब तक के.रि.पु. बल के 6 डाक्टरों को उनकी सेवाओं के बदले राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है। जबकि एक चिकित्सा अधिकारी, एक फार्मसिस्ट तथा एक नर्सिंग सहायक सहित अस्पताल के 11 कार्मिकों को अब तक महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की जा चुकी है।

बाद में पत्रकारों ने नई दिल्ली स्थित बेस अस्पताल-1 का दौरा कर आतंकवादी मुठभेड़ों में घायल हुए जवानों से भी मुलाकात की। घायल जवानों में एक की टांगें एक विस्फोट में उड़ चुकी थीं, तो एक जवान रीढ़ की हड्डी में गोली घुस जाने के कारण, लकवाग्रस्त हो चुका था। एक सब इंस्पेक्टर पूरी तरह गोलियों से छलनी शरीर लिए अस्पताल में दाखिल था। पंजाब में हुयी एक आतंकवादी मुठभेड़ में इस सब इंस्पेक्टर के शरीर में 20-22 गोलियां लगी थीं। मगर पत्रकार यह देखकर हैरत में थे कि इस कदर घायल होने के बावजूद हर जवान का नैतिक साहस अभी भी बना हुआ था, तथा ठीक होने पर देश सेवा के लिए वे सभी तत्पर थे।

के.रि.पु. बल के 35 कार्मिकों को शौर्य पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 35 कार्मिकों को पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर में विभिन्न आतंकवादी मुठभेड़ों में दिखाई गई अतुलनीय वीरता, साहस एवं कर्तव्यनिष्ठा के लिए राष्ट्रपति महोदय ने शौर्य वीरता के पुलिस पदक प्रदान करने की घोषणा की है। इनमें से एक को राष्ट्रपति का शौर्य वीरता का पुलिस पदक, चार को शौर्य वीरता का पुलिस पदकबार तथा 30 को शौर्य वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए हैं।

राष्ट्रपाते का शौर्य वीरता का पुलिस पदक

33 बटालियन के उपाधीक्षक श्री विशम्भर सिंह को मरणोपरांत राष्ट्रपति का शौर्य वीरता का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। श्री विशम्भर सिंह को यह सम्मान 22 फरवरी, 91 को पंजाब के गांव भोजीयान में हुई एक मुठभेड़ के दौरान दिखाई गई अतुलनीय वीरता एवं साहस के लिए दिया गया है। इस मुठभेड़ में दो कुख्यात आतंकवादी मारे गए तथा उनसे भारी मात्रा में असला भी बरामद किया गया। इनमें से एक आतंकवादी 100 से अधिक हत्याओं के लिए जिम्मेदार था। मगर इस सफलता के एवज में श्री विशम्भर सिंह के अतिरिक्त दो अन्य पुलिस कार्मिकों को भी अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक बार

कमांडेण्ट डी.ए. धनंजैया (66 बटा.), डिप्टी कमांडेण्ट वी.वी. सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल हरपाल सिंह (66 बटा.) तथा सहायक कमांडेण्ट रामपाल सिंह (76 बटा.) को दूसरी बार शौर्यवीरता का पुलिस पदक प्रदान किया जा रहा है, जो कि पुलिस पदक बार कहलाता है।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक

शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्राप्त करने वाले अन्य कार्मिक हैं-सब इंस्पेक्टर सरजू पांडे (72 बटा.), कांस्टेबल एम.एन. गुंडले (72 बटा.), सब इंस्पेक्टर बजरंगी धर दूबे (3 बटा.), कांस्टेबल अब्दुल कलाम (84 बटा.), कांस्टेबल हरपाल सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल आर.के. पाटिल (66 बटा.), कांस्टेबल पी. सुधाकरन नायर (84 बटा.), सहायक कमांडेण्ट हरदेव सिंह (66 बटा.), लांस नायक मनफूल सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल सी.सी. दुरई (66 बटा.), कांस्टेबल बी.एन. यादव (66 बटा.), हैड कांस्टेबल टी.के. पदतारे (75 बटा.), कांस्टेबल महावीर प्रसाद (75 बटा.), कांस्टेबल पी. गिरीश (76 बटा.), कांस्टेबल यू.के. मंडल (76 बटा.), इंस्पेक्टर सुरेंद्र सिंह (62 बटा.), लांस नायक वी. मोहन (64 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी एच.एस. नेगी (75 बटा.), हैड कांस्टेबल केशव बहादुर (75 बटा.), हैड कांस्टेबल लक्ष्मण राम (75 बटा.), लांस नायक महावीर प्रसाद (75: बटा.), कांस्टेबल राम निवास (75 बटा.) मरणोपरांत, कांस्टेबल सी.आर. मंजुनाथ (75 बटा.), कांस्टेबल जिले सिंह (84 बटा.), सहायक कमांडेण्ट पी.एस. राजौरा (10 बटा.), हैड कांस्टेबल जय करन सिंह (10 बटा.), कांस्टेबल सुनील मोचारी (10 बटा.), सब इंस्पेक्टर जुगल किशोर जोशी (13 बटा.), कांस्टेबल सतनाम सिंह (36 बटा.) तथा हैड कांस्टेबल रण सिंह (70 बटा.)।

इंटर सेक्टर क्रांस कंट्री दौड़

उत्तर पश्चिम जोन विजेता



विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सी. पाल सिंह

17 मार्च, 1993 को आयोजित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की इंटर सेक्टर क्रास कंटी दौड़ प्रतियोगिता की चैंपियनशिप बल के उत्तर पश्चिम जोन ने जीत ली। इस प्रतियोगिता का आयोजन नई दिल्ली वजीराबाद स्थित आर.ए.एफ. की 103 बटालियन स्थल पर किया गया। इस प्रतियोगिता में उत्तर पश्चिम जोन की टीम ने 32 अंक प्राप्त किए, जबकि स्पेशल सेक्टर की टीम 75 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही। दक्षिण क्षेत्र की टीम 141 अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रही।

व्यक्तिगत मुकाबले में दक्षिण सेक्टर के कांस्टेबल राजेश कुमार को प्रथम, उत्तर पश्चिम जोन के कांस्टेबल मुखराम को द्वितीय तथा उत्तर पश्चिम जोन के ही नायक धीरज सिंह को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

इस प्रतियोगिता में पूरे देश से आयी के.रि.पु. बल के 10 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारम्भ आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सी. पाल सिंह ने किया तथा बाद में उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए।

माह फरवरी, 93 में मृत बल के कार्मिक

माह फरवरी, 1993 में के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए।
सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां. चरणजीत (19 बटा. सी.बी.आई. में प्रांतोनेयुक्ते में), कां. वेंकेश्वर (119 बटा.), नायक सोहन सिंह (119 बटा.), कां. ड्राईवर आर.डी. गिरी (119 बटा.), कां. रमेश चंद्र (119 बटा.), कां. रामलगन राम (119 बटा.), कां. ओंकार सिंह (3 बटा.), उ. नि. रमेश लाल (32 बटा.), नायक के. देवदानम (32 बटा.), नायक लाल सिंह (32 बटा.), लां. नायक ए. लेपचा (32 बटा.), लां. नायक मंदादीन (32 बटा.), लां. नायक एम.डी. मादर (32 बटा.), कां. डी.एम. बदर (32 बटा.), कां.सी.एच.घोंगो सिंह (23 बटा.), नायक रे. आपरेटर विजय शंकर यादव (2सिग.), सहायक कमांडेंट एम.एस. नेगी (75 बटा.), लां. नायक रामजी लाल (109 बटा.), नायक शर्मा सिंह (68 बटा.), इंस्पेक्टर एम.सी. कटोच (108 बटा.), कां. ओमप्रकाश (87 बटा.) तथा लां. नायक कै.के. सिंह (87 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार जुलाई, 1992 माह में 2 बटा. के नायक आनंद प्रसाद तथा जनवरी, 1993 माह में नायक रे. आपरेटर पी. मनी (3 सिग.), है.कां.टेलर इसरार अहमद (92 बटा.), कां. करन सिंह (1 सिग.), कां. मारूसिंह (24 बटा.), है. कां. खेम सुंग गुरमा (47 बटा.), है.कां. जसवंत सिंह (47 बटा.) तथा उ.नि. (अस्थायी) घेवर चंद (112 बटा.) की भी मृत्यु हुयी।

हिंदी प्रतियोगिताएं

के.रि.पु. बल के चार कार्मिक सम्मानित



श्री विद्याचरण शुक्ल संतोष कुमार श्रीवास्तव को हिंदी प्रतियोगिता को शिल्ड प्रदान करते हुए

जल संसाधन तथा संसदीय कार्यवाही मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के चार कार्मिकों को अखिल भारतीय स्तर की हिंदी प्रतियोगिताओं में स्थान हासिल करने के लिए सम्मानित किया है। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन केंद्रीय हिंदी सचिवालय ने वर्ष 1992-93 में किया था।

ग्रुप केंद्र रामपुर के संतोष कुमार श्रीवास्तव को 27वीं अखिल भारतीय हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल करने पर एक स्वर्ण पदक तथा एक टाफी प्रदान की गई। ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर के कर्मवीर को हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता का प्रथम परस्कार प्रदान किया गया। ग्रुप केंद्र पिंजौर के के.डी. पटियाल को हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का तीसरा तथा 126 बटालियन के आर.पी. सिंह को हिंदी टाइपिंग तथा ट्राफिटिंग प्रतियोगिता का तीसरा पुरस्कार प्रदान किया गया।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के कुल 19 मामलों में कुल 6,47,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें से प्रति मामला 10,000 रुपये की केंद्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के कुल आठ मामलों में कुल 1,12,500 रुपये देने स्वीकृति किए गए।

बल के कार्मिकों ने आग बुझाई

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय के नजदीक स्थित विद्युत सब स्टेशन में 24 नवंबर, 92 को भयंकर आग लग गई। इस आग से पांच आदमी बुरी तरह झुलस गए। बल के महानिदेशालय में ड्यूटी पर तैनात हैड कांस्टेबल राजमाल सिंह एवं ड्यूटी पर तैनात उनके अन्य साथियों ने तत्काल आग बुझाने में अपना पूरा योगदान दिया तथा घायलों को तत्काल अस्पताल में पहुंचाया। बल के कार्मिकों के तत्काल सक्रिय हो जाने से आग पर जल्दी ही काबू पा लिया गया, तथा और अधिक जानमाल की हानि होने से बच गई। हैड कांस्टेबल राजमाल सिंह तथा उसके साथियों की डेसू एवं अन्य नागरिक अधिकारियों ने भरपूर प्रशंसा की है।

पत्रिका सी० आर० पी० एफ० समाचार स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्युजपेपर्स सेंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

- | | |
|--|--|
| 1. प्रकाशन का स्थान | — नई दिल्ली |
| 2. प्रकाशन की अवधि | — वर्ष में आठ बार |
| 3. प्रिंटर का नाम | — ए. एन. शर्मा |
| 4. नागरिकता | — भारतीय |
| 5. पता | — ब्लॉक-1, सी.जी.ओ.
काम्पलेक्स लोधी रोड, नई
दिल्ली-110003 |
| 6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता | — उपर्युक्त |
| 7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता | — उपर्युक्त |
| 8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।
मैं ए. एन. शर्मा एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं। | महानिदेशक, के० रि० पु० बल,
ब्लॉक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 |
- 31 मार्च, 1993

ह०
ए० एन० शर्मा
प्रकाश के हस्ताक्षर



आखिल भारतीय पुलिस खेलों के हाई जम्प मुकाबले में बल की माहेला प्रातियोगी शीजी माल्क-कांस्य पदक

INTERNATIONAL SECURITY EXHIBITION PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI, SEPTEMBER 1-5, 1993

Large scale exposition on the latest security technology and state-of-the-art equipment in aid of security duties.

DISPLAY PROFILE

- * Security Systems, equipment and devices for :
- * Bomb detection, removal & disposal
- * Personal Protection
- * Riot Control
- * Fibre optic devices

BENEFICIARIES

- * Public/Private Sector Industries
- * State Police Forces
- * Fire Fighting Organisations
- * Railways
- * Access control
- * Fire Safety
- * Building Security
- * Safe Communication

- Defence services
- * Paramilitary Forces
- Banks
- Sea Ports/Air Ports
- * Manufacturers and dealers of security devices.

Sponsored by: MINISTRY OF HOME AFFAIRS (Govt. of India)

Organised by: INDIA TRADE PROMOTION ORGANISATION

COLLABORATION: CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE, 13, CGO COMPLEX, LODHI ROAD, NEW DELHI-3



—छाया: एस.के. खन्ना

बेस अस्पताल - / नई दिल्ली के कर्मचारी किसी बम दुर्घटना के समय घायलों को दी जाने वाली सहायता सुविधाओं के कौशल का प्रदर्शन करते हुए

मुख्य सम्पादक: ए० एन० शर्मा। सम्पादक: अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार: सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ोदा कला, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मैकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

सी. आर. पी. एफ. समाचार

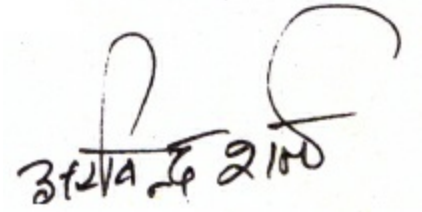
खंड-6 अंक-2 31 मई, 1993 10 ज्येष्ठ, शक 1915



महानिदेशक श्री बी.पी.एन. सिंह, 103 आर.ए.एफ. बटालियन के कमांडेंट
श्री बलवंत सिंह को सर्वश्रेष्ठ आर.ए.एफ. बटालियन की ट्राफी प्रदान करते
हए।

सम्पादकीय

21 मई, हमें, स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की शहादत की याद दिलाता है। यह वह दिवस है जब कि आतंकवाद अपने घृणितम रूप में सामने आया, आतंकवादी अपने इरादों को पूरा करने के लिए किस सीमा तक जा सकते हैं, 21 मई इसका प्रमाण है। आज के दिन हमें यह भी सोचना है कि वे कौन से तत्व हैं जो हमारे समाज में सड़ांध पैदा कर उसे अंदर ही अंदर खाए जा रहे हैं। वे कौन लोग हैं जो राष्ट्रीय स्वाभिमान के सीने पर निर्ममता से गोलियां दाग रहे हैं। ये लोग यदि प्रेम एवं शांति के पैगामों को लगातार अनसुना करते रहेंगे, तो उनकी हर हरकत आने वाले समय में उन्हीं के ताबूत की कील साबित होगी। यह ढपोरशंखी उद्घोषणा नहीं है, यह प्रण है, प्रतिज्ञा है, देश भूमि को जहरीले कंटकों से मुक्त कराने की। हमने ऐसा किया है। पंजाब में दम तोड़ता आतंकवाद, आतंकवाद के विरुद्ध हमारे सतत संघर्ष और समर्पण का प्रमाण है। पंजाब में यह हुआ है और देश के बाकी हिस्सों में भी ऐसा ही होगा इसका हमें विश्वास है। अपने इसी विश्वास को एक नई ऊर्जा और एक नयी शक्ति देने का दिवस है 21 मई।



(अ. ना. शर्मा)

आतंकवाद विरोधी दिवस
आतंकवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष का प्रण



महानिदेशालय के कार्मिकों को आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष के लिए शपथ दिलाते हुए अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने 21 मई 1993 को अपनी-अपनी युनिटों तथा मुख्यालय में आतंकवाद को जड़ से खत्म कर देने की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की दूसरी पुण्य तिथि के अवसर पर देशव्यापी रूप से मनाए जा रहे आतंकवाद विरोधी दिवस के अवसर पर के.रि.पु. बल के तमाम सदस्यों ने आज के दिन आतंकवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष की अपनी प्रतिज्ञा ली।

के.रि.पु. बल मुख्यालय में कार्मिकों को यह शपथ बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने दिलायी। शपथ के बोल है “हम भारतवासी भी अपने देश की अहिंसा एवं सहनशीलता की परंपरा में दृढ़ विश्वास रखते हैं तथा निष्ठापूर्वक शपथ लेते हैं कि हम सभी प्रकार के आतंकवाद और हिंसा का डट कर विरोध करेंगे। हम मानवजाति के सभी वर्गों के बीच शांति सामाजिक सद्भाव तथा सूझबूझ कायम करने और मानवजीवन मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली और विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते हैं।”

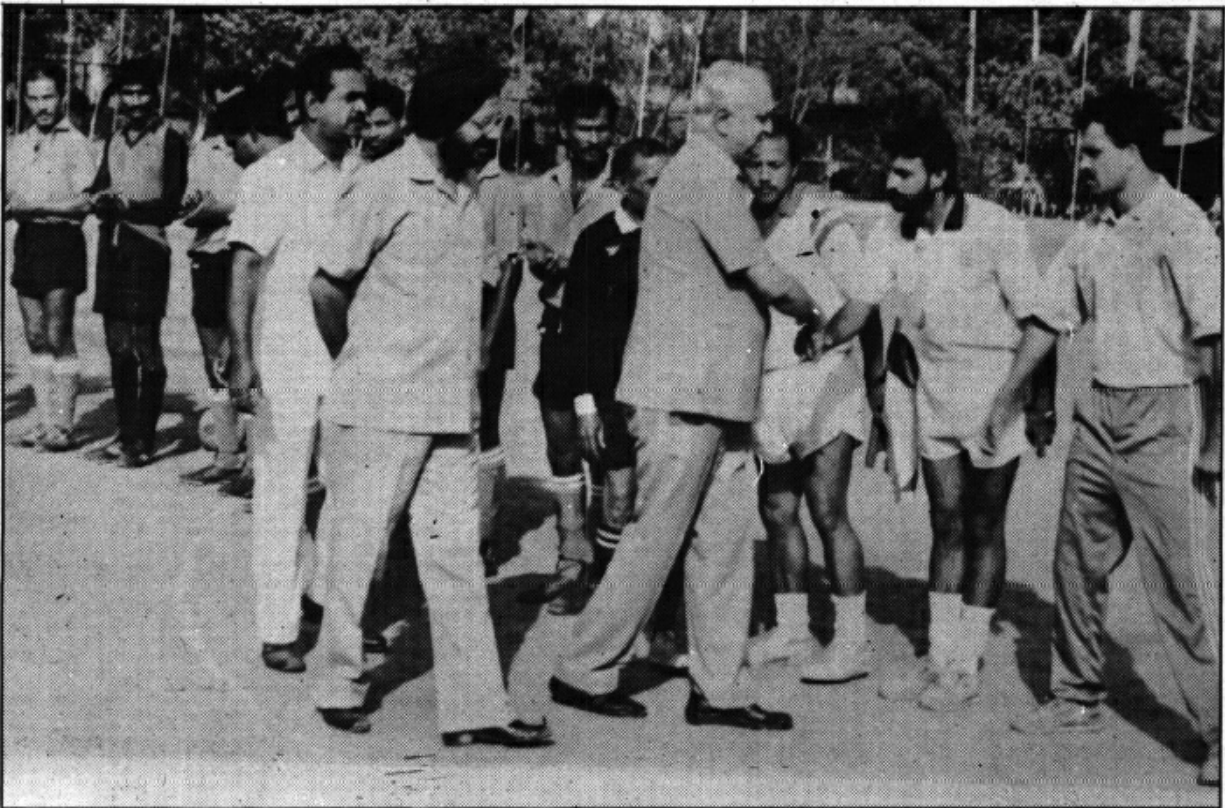
ज्ञातव्य है कि के.रि.पु. बल देश में आतंकवाद तथा देशद्रोही गतिविधियों से सीधे भिड़ने वाला सबसे बड़ा पुलिस बल है। आतंकवाद की बलिवेदी पर सर्वाधिक बलिदान इसी बल ने दिए हैं और आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव पर काबू पाने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जोखिम निधि लाभ

माह, अप्रैल 1993 में केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 36 मामलों में कुल 12,60,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की केंद्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इस माह जोखिम निधि के लिए अक्षमता का कोई मामला नहीं आया, अतः इस मद में कोई राशि स्वीकृत नहीं की गई।

इंटर सेक्टर फुटबाल टूर्नामेंट पूर्वी सेक्टर विजेता



प्रतियोगिता में भाग लेने वाली स्पेशल तथा पूर्वी सेक्टर की टीमों से परिचय प्राप्त करते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह

नई दिल्ली स्थित 50 बटालियन स्थल पर आयोजित इंटर सेक्टर फुटबाल प्रतियोगिता की चैंपियनशिप पूर्वी सेक्टर ने जीत ली।

इस आठ दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री

जोगेंदर सिंह ने 21 मई, 93 को किया। जबकि प्रतियोगिता के समापन के अवसर पर फाइनल मैच देखने के लिए बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

फाइनल मुकाबला बल की स्पेशल सेक्टर तथा पूर्वी सेक्टर की टीमों के बीच हुआ। जिसे पूर्वी सेक्टर ने 2-0 से जीत लिया। मध्यांतर तक स्कोर 1-0 था।



मैच का एक रोमांचक क्षण

श्री डी.पी.एन.सिंह ने विजेता टीमों तथा खिलाड़ियों को पुरस्कार भी प्रदान किये। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं के आयोजन का आशय खिलाड़ियों में खेल भावनाओं को बढ़ाना तथा उनकी प्रतिभा को निखारना है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रतियोगिता में शामिल कुछ खिलाड़ी राष्ट्रीय खेलों में भी शामिल होंगे।

इस प्रातियोगिता में बल की 10 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। जिनमें आर.ए.एफ. तथा स्पेशल सेक्टर की टीमों भी शामिल थीं। प्रतियोगिता लीग कम नाट आउट आधार पर खेली गयी।

फाइनल मुकाबले को देखने के लिए भारी संख्या में के.रि.पु. बल के अधिकारी तथा जवान उपस्थित थे।

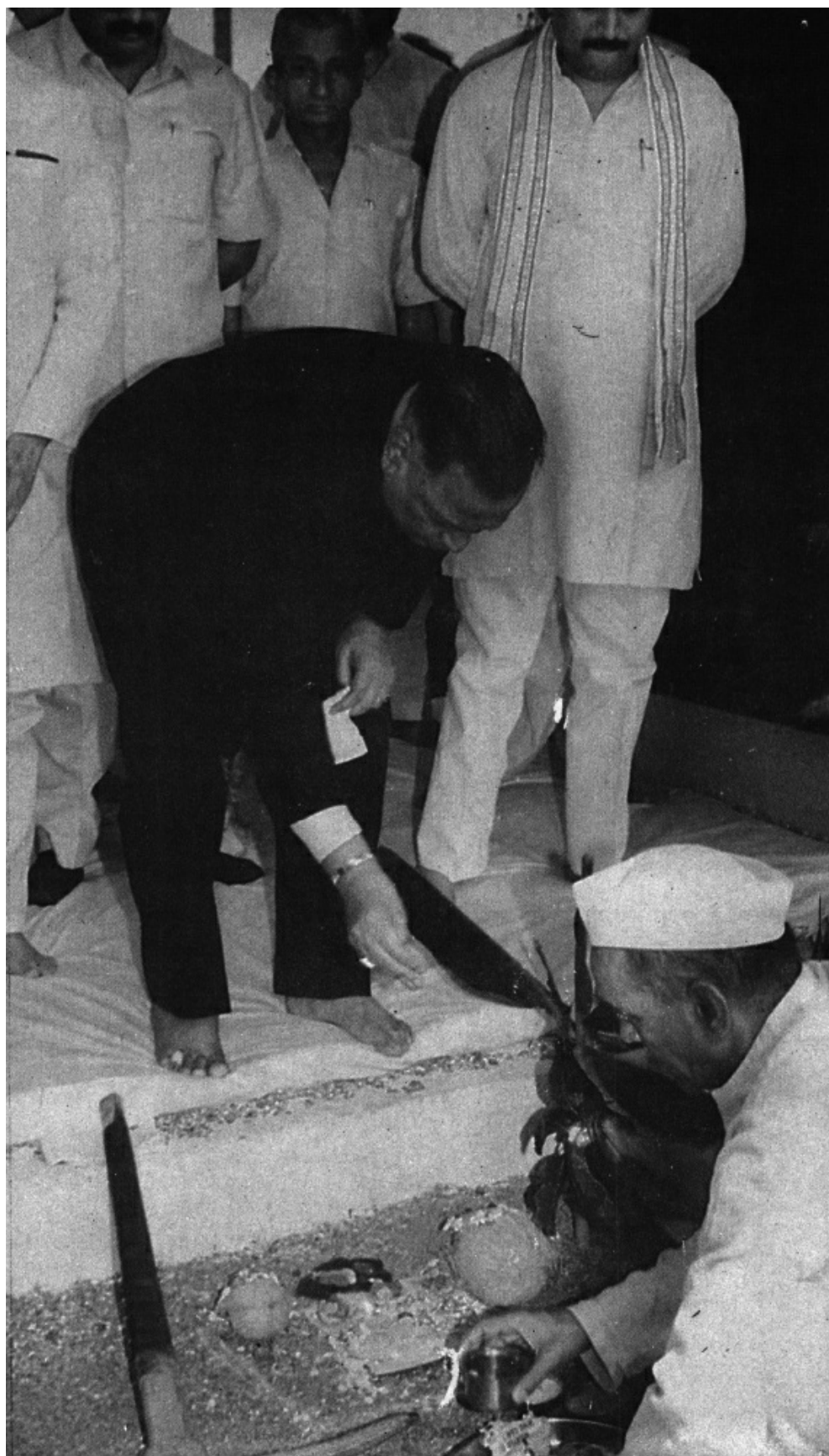
सी.टी.सी. – III का भव्य शिलान्यास



केंद्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण नांदेड में के.रि.पु. बल के तृतीय केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय का शिलान्यास करते हुए।



केंद्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण, महानिदेशक के.रि.पु. बल श्री डी.पी.एन. सिंह से वार्तालाप करते हुए।



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण नांदेड में के.रि.पु. बल के तृतीय केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिलान्यास से पूर्व भूमि पूजन करते हुए।

श्री चव्हाण ने नांदेड में के.रि.पु. बल के तृतीय केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय की आधारशिला रखी

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाणे ने 5 अप्रैल, 93 को नांदेड महाराष्ट्र में एक सादे किंतु आकर्षक समारोह के बीच केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के तीसरे केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय की आधारशिला रखी। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अन्य दो केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय नीमच एवं आवडी (मद्रास) में कार्यरत हैं।

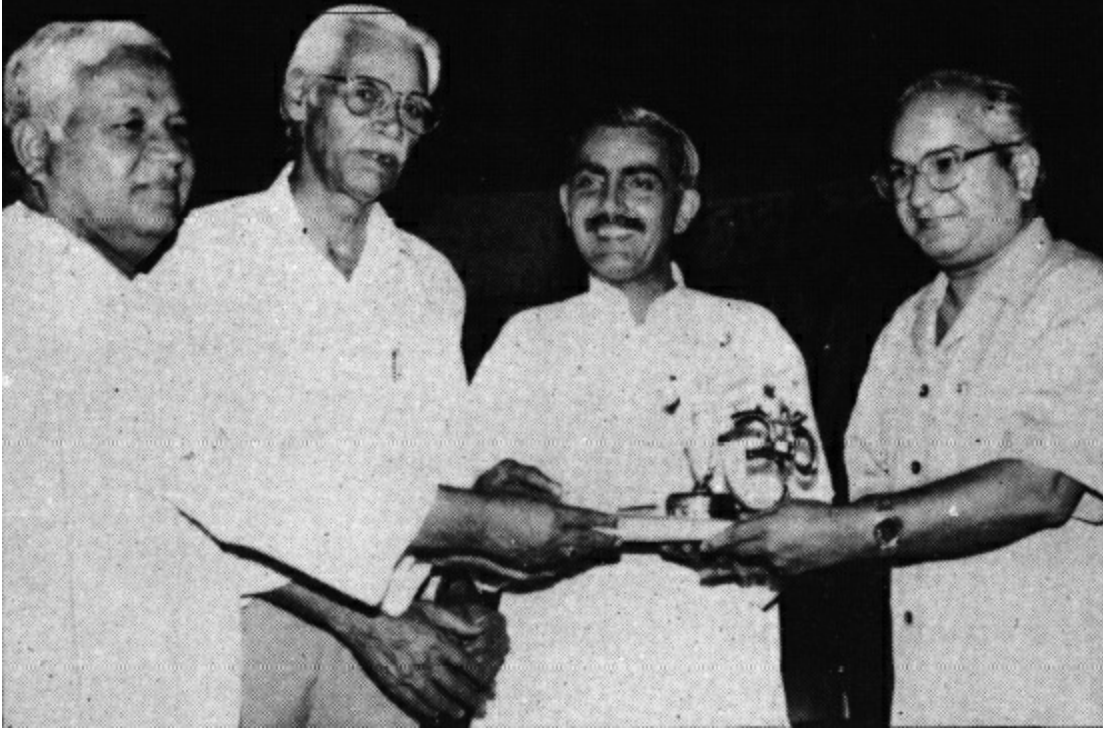
इस मौके पर उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए गृहमंत्री ने के.रि.पु.बल का आह्वान किया और कहा कि देश में बढ़ते आतंकवाद तथा साम्प्रदायिकता को दृष्टि में रखते हुए वह अपने प्रशिक्षण में सुरक्षा के बदलते परिवेश पर विशेष ध्यान दे। गृह मंत्री चाहते थे कि इन संस्थानों में प्रशिक्षुओं को यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि उनकी खाकी वर्दी उनके धर्म, वर्ग एवं जाति से ऊपर है। और उन्हें जाति और धर्म के ऊपर उठ कर देश सेवा के लिए कार्य करना है।

गृह मंत्री का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने कहा कि के.रि.पु. बल अपनी परंपराओं के अनुसार देश की एकता और अखंडता के लिए हर क्षण, अथक रूप से कार्य करता रहेगा।

इस मौके पर महाराष्ट्र सरकार के कई मंत्रियों सहित अन्य कई महत्वपूर्ण व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह में उपस्थित कुछ विशिष्ट अतिथियों में सर्व श्री विदासराव देशमुख (राजस्व मंत्री), अशोक राव चव्हाण (लोक निर्माण विभाग के राज्य मंत्री) तथा माधव राव किमालकर (गृह, राजस्व तथा सहकारिता राज्य मंत्री) भी उपस्थित थे।

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय की इमारत लगभग 12 करोड़ रुपए की लागत से अगले तीन चार वर्षों में बनकर तैयार हो जाएगी तथा इसमें एक साथ 600 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण देने की क्षमता होगी। यह संस्थान विभिन्न श्रेणियों के लगभग 13 प्रशिक्षण कोर्स चलाएगा।

श्री शर्मा को मातृश्री अवार्ड



यू.एन.आई. के प्रबंध निदेशक श्री कुट्टी श्री अ.ना. शर्मा को मातृश्री अवार्ड प्रदान करते हुए।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जनसंपर्क अधिकारी तथा सी.आर.पी.एफ. समाचार के मुख्य संपादक श्री अरविंद नारायण शर्मा को जनसंपर्क के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए मातृश्री अवार्ड प्रदान किया गया है।

पत्रकारों की एक संस्था द्वारा स्थापित यह अवार्ड प्रति वर्ष अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पत्रकारों तथा अखबारों से जुड़े व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है। इस वर्ष इन अवार्डों में जनसंपर्क के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के पुरस्कार को और जोड़ दिया गया।

इस प्रकार जनसंपर्क का पहला मातृश्री अवार्ड प्राप्त करने का गौरव के.रि.पु.बल के जनसंपर्क अधिकारी अरविंद नारायण शर्मा को मिला।

यह अवार्ड पत्रकारों तथा अन्य व्यक्तियों को युनाइटेड न्यूज आफ इंडिया के महाप्रबंधक श्री कुट्टी ने नयी दिल्ली के फिक्की सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किए। इस मौके पर हिंद समाचार समूह के अखबारों के मुख्य संपादक विजय चोपड़ा भी उपस्थित थे।



श्री सुखवंत सिंह पंजाब के मुख्यमंत्री से सम्मान प्राप्त करते हुए।

रेपिड एक्शन फोर्स की 103 बटालियन सर्वश्रेष्ठ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने 11 मई, 1993 को रविंद्र रंगशाला स्थित के.रि.पु. बल की 40 बटालियन स्थल पर रेपिड एक्शन फोर्स की 103 बटालियन को वर्ष 1992 के लिए दिल्ली स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्रदान की। बटालियन की ओर से यह ट्राफी तथा 5000 रुपए का नकद पुरस्कार 103 बटालियन के कमांडेंट बलवंत सिंह ने ग्रहण किया। स्पेशल सैक्टर की 120 बटालियन को द्वितीय सर्वश्रेष्ठ बटालियन को ट्राफी तथा 3000 रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया जिसे कमांडेंट आई.एस.दिल्लन ने प्राप्त किया जबकि 32 बटालियन के कमांडेंट डी.आर. खुराना ने तृतीय सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी तथा 2000 रुपए का नकद पुरस्कार ग्रहण किया।

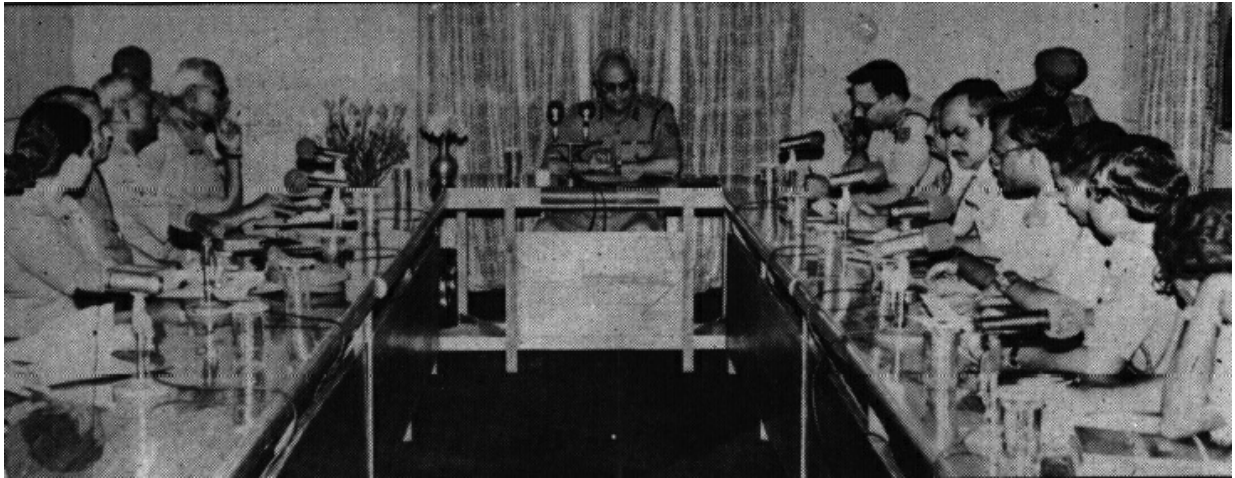
यह पुरस्कार वितरण 40 बटालियन स्थल पर आयोजित के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों की एक कानफ्रेंस के बाद किया गया। इस कानफ्रेंस की अध्यक्षता के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने की। इस कानफ्रेंस में बल की दक्षता और कार्यकुशलता बढ़ाने के कई उपायों और समस्याओं पर विचार किया गया। इस कानफ्रेंस में बम्ब निरोधक दस्ते के निर्माण, रोटेशनल ट्रेनिंग, बल के सदस्यों की आवास समस्या, बुलट प्रूफ वाहनों के प्रावधान तथा स्टाफ अधिकारियों के प्रशिक्षण कोर्स आदि महत्वपूर्ण विषयों पर भी गहन विचार किया गया।

बल के अधिकारी का सम्मान

89 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी सुखवंत सिंह को पंजाब सरकार द्वारा कुश्ती के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया है। ज्ञातव्य है कि श्री सुखवंत सिंह रुस्तम-ए-हिंद तथा हिंद केसरी रह चुके हैं।

उन्हें यह सम्मान पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह ने कदूर साहेब, तरनतारन में पंजाब के पहलवानों को सम्मानित करने के लिए आयोजित किए गए एक समारोह में प्रदान किया। इस मौके पर पंजाब के परिवहन मंत्री श्री जागीर सिंह भी उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार



चिकित्सा अधिकारियों के सम्मेलन का एक दृश्य

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के उच्च स्तरीय चिकित्सा अधिकारियों की एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए 5 मई, 1993 को रविंद्र रंगशाला स्थित 40 बटालियन स्थल पर के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने के.रि.पु. बल के कार्मिकों के स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा सुविधाओं को बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने यह सुविधाएं बल के अस्पतालों तथा ओपरेशनल फील्ड स्थित मेडिकल यूनिटों में बढ़ाए जाने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने बैठक में भाग ले रहे चिकित्सा अधिकारियों को आश्वासन दिया कि सैक्टर स्तर पर व्यापक चर्चा के बाद उनकी समस्याओं पर विचार किया जाएगा तथा उनकी कार्य स्थितियों को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे।

महानिदेशक महोदय ने आगे कहा कि आज के.रि.पु. बल के सभी अस्पतालों को अति आधुनिक चिकित्सा उपकरणों से सज्जित करने की आवश्यकता है। उन्होंने बल के चिकित्सा अधिकारियों को सलाह दी कि वे सैनिक की तरह कार्य करें तथा अपनी असुविधा का ख्याल न रखते हुए हर क्षण बल के कार्मिकों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए तत्पर रहें।

ज्ञातव्य है कि के.रि.पु. बल में आज 100-100 बिस्तर वाले 3 अस्पताल दिल्ली, हैदराबाद तथा गोहाटी में, 50-50 बिस्तर वाले अस्पताल जम्मू, अजमेर तथा नीमच में, 18 ग्रुप केन्द्रों में 40-40 बिस्तर वाले अस्पताल तथा बल की प्रत्येक बटालियन में 10-10 बिस्तर वाले अस्पताल कार्यरत हैं। बल में आज अपने अपने क्षेत्रों में दक्ष लगभग 100 विशेषज्ञ डाक्टर इन सभी अस्पतालों में अपनी-अपनी सेवाएं उपलब्ध करा रहे

हैं।

माह अप्रैल, 1993 में बल के मृत कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अप्रैल, 1993 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त, परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल आई. पिलानी स्वामी (51 बटा.), नायक/ड्राइवर माधो सिंह (46 बटा.), हैड कांस्टेबल आर्मरर सुरेंद्र कुमार शर्मा (76 बटा.), नायक एम. शंकर (69 बटा.), कां. हकीम सिंह (117 बटा.), कां. अमरनाथ सिंह (21 बटा.), इंस्पेक्टर शुभा चंद (113 बटा.), कां. आर.के. तिवारी (28 बटा.), है.कां. हरीश चंद्र सिंह (36 बटा.), नायक/रे.आ. आर.वेंकटाराव (2सिग.), कां.हरी सिंह (14 बटा.), कां. देशराज (68 बटा.), नायक मदन मोहन जोशी (82 बटा.), है.कां. याद राम (71 बटा.), है.कां. ब्रिजबाली प्रसाद (12 बटा.), है.कां. हवा सिंह (49 बटा.), कां. कृष्णा (49 बटा.), है.कां. भगवान सिंह (22 बटा.), कां. के. थंकाचन (गु के. पल्लीपुरम), ला. नायक ब्रह्म प्रकाश (49 बटा.), कां. माझिया राम सोरेम (105 बटा.), है.कां. सोम दत्त (120 बटा.), वाशरमैन तब्बू लाल रजाक (128 बटा.), सब इंस्पेक्टर/क्रिष्टो जयंती लाल (68 बटा.) तथा कां. एस.के. उदाग अति (ग्र. के. इम्फाल)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह मार्च '93 में 53 बटा. के कां. जी. पकीरास्वामी तथा 114 बटा. के कां./बिगुलर धन सिंह मुंडा की भी मृत्यु हुयी।

त्रिपुरा चुनावों में के.रि.पु. बल की भूमिका की प्रशंसा

त्रिपुरा पुलिस के महानिदेशक श्री एम.डी. शर्मा ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को भेजे एक पत्र में हाल ही में त्रिपुरा में सम्पन्न हुए चुनावों के दौरान के.रि.पु. बल के जवानों एवं अधिकारियों द्वारा दी गयी सेवाओं की भरपूर प्रशंसा की है। राज्य विधान सभा में इन चुनावों को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने तथा कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए के.रि.पु. बल की 48 कम्पनियों को तैनात किया गया था।

बल के कार्मिकों की निष्ठा, कठिन श्रम, व्यवसायिक दक्षता एवं जन सहयोग की भावना की प्रशंसा करते हुए श्री-एम.डी. शर्मा ने अपने पत्र में लिखा है कि बल के कार्मिकों की मदद के बिना इस प्रकार सुचारू रूप से, निष्पक्ष, स्वतंत्र एवं शांतिपूर्ण मतदान संभव नहीं था।

के.रि.पु. बल ने 55 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अप्रैल, 1993 को देश भर में 55

आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, जबांके इस दौरान हुयीं 12 मुठभेड़ों में 21 आतंकवादी मारे गए। इनमें पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयीं मुठभेड़ें भी शामिल

मारे गए आतंकवादियों में दशमेश रेजीमेंट का एरिया कमांडर करतार सिंह तथा इंदर सिंह, बब्बर खालसा इंटरनेशनल का स्वयंभू डिग्री चीफ बलदेव सिंह डागरा तथा स्वयंभू एरिया कमांडर मनोहर लाल उर्फ मनोरी, खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजावर गुट) के लखविंदर सिंह उर्फ लक्खा, परगट सिंह तथा पूरन सिंह जैसे खतरनाक आतंकवादी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 52 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में आठ ए.के. 47 राइफलें, एक ए.के. 56 राइफल, एक जी.पी.एम.जी., एक एस.एल.आर., 14 राइफलें, 10 पिस्तौलें/रिवाल्वरें तथा एक माउजर पिस्तौल शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के तीन जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 14 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

100 बटालियन द्वारा वृक्षारोपण

संगरूर, पंजाब स्थित के.रि.पु. बल की 100 बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों ने स्थानीय सिविल अस्पताल में एक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन बटालियन के कमांडेंट एम.पी. चिटनिस ने एक पौधा लगाकर किया।

100 बटालियन के अधिकारियों और जवानों ने यहां लगभग 200 पौधे लगाए। इस मौके पर बोलते हुए कमांडेंट श्री चिटनिस ने कहा कि बटालियन के अधिकारी और जवान न केवल इस बात का भरपूर ध्यान रखेंगे कि इन पौधों की परवरिश ठीक से हो, अपितु भविष्य में भी इसी प्रकार के वृक्षारोपण के कार्यक्रमों का आयोजन करते रहेंगे।

पंजाब जैसे आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्र में जहां कि प्रायः बल की बटालियनें भारी रूप से आपरेशनल कार्यों में व्यस्त रहती हैं, वहां एक बटालियन द्वारा इस तरह के कार्य की सर्वत्र प्रशंसा की गयी है।

के.रि.पु. बल की भूमिका की प्रशंसा

एच.ए.वी. इन्टर कालेज, देवबन्द सहारनपुर (उ.प्र.) के प्रधानाचार्य ने के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को एक पत्र लिखकर रेपिड एक्शन फोर्स की 106 बटालियन की भरपूर प्रशंसा की है। इस बटालियन के कार्मिकों ने एक 10 वर्षीय गुमशुदा बच्चे को तलाश कर कुशलपूर्वक उसके अभिभावकों को सौंप दिया था।

स्कूल के अध्यापक श्री धन प्रकाश का 10 वर्षीय पुत्र हरीश 11 मार्च 1993 को अपने घर से लापता हो गया था। 24 मार्च को बच्चे के घर वालों को पंजाब स्थित 106

बटालियन ने सूचना भेजी कि उनका बच्चा उसके पास है। पंजाब में बच्चे को के.रि.पु. बल की 106 बटालियन में सकुशल देखकर बच्चे के परिजनों के हर्ष की सीमा नहीं रही।

प्रधानाचार्य ने के.रि.पु. बल कार्मिकों द्वारा बच्चे की देखभाल तथा उसे अपने अभिभावकों को सकुशल सौंपने के मानवीय कार्य की भरपूर प्रशंसा की है।

निबंध प्रतियोगिता जीती

ग्रुप केंद्र आवड़ी महानिदेशालय में सम्बद्ध इंस्पेक्टर वी. अशोकन नायर को आसूचना ब्यूरो द्वारा आयोजित पुलिस स्मारक निबंध प्रतियोगिता-1991 का चौथा पुरस्कार प्रदान किया गया है।

प्रतियोगिता में चौथे स्थान पर रहने के लिए उन्हें एक प्रशस्ति पत्र तथा 500 रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया है।

के.रि.पु. बल में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण

निरंतर कटते वनों से पर्यावरण के लिए लगातार पैदा हो रहे खतरे को देखते हुए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया है। हाल के वर्षों में के.रि.पु. बल की देशव्यापी विभिन्न यूनिटों में लगभग साढ़े तीन लाख वृक्ष पाए गए। इनके अतिरिक्त हाल ही में गठित रेपिड एक्शन फोर्स की यूनिटों ने भी अपनी-अपनी यूनिटों तथा उसके आस-पास के क्षेत्र में 13,671 वृक्ष लगाए।

के.रि.पु. बल द्वारा समग्र रूप से लगाए गए वृक्षों में जहां टिम्बर जैसे वृक्ष शामिल हैं, वहीं भारी तादाद में छायादार तथा फलों के पौधे भी लगाए गए हैं। के.रि.पु. बल के सदस्य न केवल अपनी यूनिटों तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में वृक्षारोपण ही करते हैं, अपितु उन वृक्षों की भरपूर देखभाल भी करते हैं। यही कारण है कि के.रि.पु. बल में वृक्षारोपण के बाद मर जाने वाले पौधों की संख्या लगभग नगण्य है।

पर्यावरण की रक्षा तथा उसके रखरखाव के लिए के.रि.पु. बल के भुवनेश्वर ग्रुप केंद्र को कई पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

जब भी के.रि.पु. बल की कोई नयी बटालियन खड़ी की जाती है, तो उसका पहला कार्य अपने आस-पास के क्षेत्र को हरा-भरा बनाने का होती है।

हमारा परिवेश

नशे की लत या ड्रग एब्जूस

एक सामाजिक समस्या -डा. सोनी

पिछले कुछ समय से औषाधियों का दुरुपयोग बहुत ज्यादा हो रहा है व इससे बच्चे व बड़े सभी शिकार हो रहे हैं, ज्यादातर युवा वर्ग जिसमें स्कूल व कालेज के छात्र व छात्रायें भी सम्मिलित हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नशीली दवाओं का सेवन आज के समय में एक बड़ी समस्या बन गई है।

यह एक ऐसी बीमारी है जो दूसरी कई बीमारियों को जन्म देती है। इसमें कई मादक द्रव्यों का मिश्रण होता है जिसमें गैर-कानूनी भांग, गांजा आदि शामिल होते हैं। इसमें तम्बाकू, शराब व नाक द्वारा शरीर में प्रवेश करने वाली वस्तुएं भी शामिल हैं जोकि बड़ी मात्रा में उपलब्ध होती हैं।

सारांश में किसी भी दवा की मात्रा जरूरत से ज्यादा या जरूरत के अलावा, डाक्टर की सलाह के मुताबिक या सलाह के बिना लेना, जिससे शरीर व मस्तिष्क को हानि पहुंचती है उसे सबस्टेंस अब्यूस कह सकते हैं।

यदि इसके कारणों पर ध्यान दिया जाए तो पता चलता है कि यह एक ऐसी समस्या है जिससे कि इसको इस्तेमाल करने वाला धीरे-धीरे इस पर पूर्ण रूप से आधारित हो जाता है और इसके बगैर उसका जीना मुश्किल हो जाता है।

कई अपनी शराब सोहबत वाली मित्र-मंडली के साथ मिलकर इसे गले लगा लेते हैं। कई अपनी घरेलू समस्या को ठीक प्रकार से नहीं निपटा पाने से या इससे दूर भाग कर इन नशीली चीजों को सेवन करके नशे में मस्त हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में कमजोर व डरपोक अपनी समस्याओं का सामना न करने के कारण इसके शिकार हो जाते हैं।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक इसके शिकार ज्यादातर बेरोजगार, मजदूर व कम आय वाले व्यक्ति व युवा वर्ग में 16 वर्ष से 35 वर्ष तक के लड़के व लड़कियां होती हैं। इसमें ज्यादा नशीली काम में आने वाली गांजा व हीरोईन है।

सबस्टेंस अब्यूस हमारे समाज के लिए एक जटिल समस्या बन कर रह गई है जो चाह कर भी पूरी तरह से दूर नहीं हो सकती। जो इसके शिकार हो जाते हैं। उनमें निम्न प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं:-

- (1) किसी काम में उनका दिल नहीं लगता है।
- (2) वजन व खाने की क्षमता में कमी।
- (3) आँखों में ललावट व नजर का कम होना।
- (4) अस्पष्ट बोली।
- (5) इन्जेक्शन के कई-कई निशान व कपड़ों पर खून के निशान।
- (6) घर में इन्जेक्शन, सुई आदि का, हमेशा मिलना।
- (7) उल्टी, घबराहट व शारीरिक दर्द होना।
- (8) हर समय शरीर का गिरना व शिथिल रहना व नींद-सी महसूस करना।
- (9) मन स्थिति का बार-बार बदलना व चिड़चिड़ापन होना।
- (10) व्यक्तित्वहीन व भावनाहीन होना।

(11) याददास्त का कम होना व किसी भी बात पर गौर न कर पाना।

(12) अकेले रहना पसंद करना व ज्यादा समय शौचगृह में बिताना।

(13) घर से वस्तु, पैसा आदि को गायब करना।

यह एक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व चिकित्सीय समस्या है व इसको दूर करने के लिए सभी को एक साथ जुटकर प्रयत्न करने होंगे। इसके लिए कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ेगा। क्योंकि जो लोग इन मादक पदार्थों को बिक्री करते हैं उनका इससे नुकसान होने से वे एक-दूसरे की जान के दुश्मन हो जाते हैं।

इसमें समाज, माता-पिता, अध्यापक, धार्मिक संस्थाएं, मिडिया, समाज-सेवी संस्थाएं आदि इनके गुण व अवगुण का प्रचार हर जगह करके भटके हुए व्यक्तियों, छात्र-छात्राओं को इस नरक से छुटकारा दिलाने में बहुत सहायता कर सकते हैं।

यह सभी सम्बन्धित संस्थाएं उन भटके हुए व्यक्तियों या महिलाओं को सुधारने में बहुत मदद कर सकते हैं। इनके खराब परिणाम इससे खतरा व अपने आपको समाज से अलग रखने का समाज में किसी प्रकार का स्थान न पाने आदि का महत्व बताकर उनकी आंखों पर से पर्दा दूर कर सकते हैं। इसके अलावा अच्छा वातावरण समाज का इनके प्रति प्रेम-प्यार की भावना का आभास दिला सकते हैं। बेरोजगार को कोई रोजगार दिलाने में मदद करके उन्हें व्यस्त रखा जा सकता है। भटके हुए लोगों को राह पर लाने के बाद इन उपरोक्त बातों का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है वरना उनका फिर से इन खराब आदतों के शिकार होने का पूरा-पूरा डर रहता है। यहां एक बार फिर यह बात बताना जरूरी समझता हूं कि ऐसे व्यक्तियों को सही रास्ते पर लाने के लिए जितना उनका इलाज जरूरी है उतना ही उनका सामाजिक उत्थान, साहस अपने जीवन के निर्वाह के लिए काम-काज आदि भी बहुत ही जरूरी है।

हमारी सरकार ने इन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए सलाह, नशा विरोधी केन्द्र व इसके बाद उनकी देखभाल के लिए कई अलग-अलग केन्द्र स्थापित किए हैं मगर सिर्फ सरकार या उसकी चिकित्सा ही पर्याप्त नहीं, बल्कि हम सबका सहयोग भी बहुत जरूरी है।

जहां तक इसकी चिकित्सा का सम्बन्ध है भारतवर्ष में कई सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाएं व चिकित्सालय हैं जो इन बुरी आदतों के शिकार व्यक्तियों को सही राह पर लाने में पूरी-पूरी सहायता करते हैं। इस बीमारी की चिकित्सा के लिए कई पद्धतियां भारत में हैं, परन्तु होम्योपैथी का योगदान बहुत ही सराहनीय है। इस पद्धति के अनुसार रोगी की चिकित्सा उसके रोग व लक्षण के मुताबिक दी जाती है जिससे रोगी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाता है।

हास परिहास

* बाप: 'तुम घर छोड़कर कहां जा रहे हो?'

बेटा : 'मैं कम्पनी की तरफ से सुंदर लड़ाकियों का सर्वे करने जा रहा हूँ। मुझे मत रोकिए।'

बाप : 'रोक.कौन रहा है? मैं तो कह रहा था कि अगर एतराज न हो तो मुझे भी साथ ले चलो।'

* * *

* मैदान में एक लड़का बैठा था। एक व्यक्ति ने उससे पूछा : 'क्या तुम्हारे पिता जी घर में हैं?'

लड़का : 'जी हाँ।'

उस व्यक्ति ने जाकर दरवाजे पर दस्तक दी लेकिन जब दरवाजा नहीं खुला तब उसने मैदान में बैठे हुए लड़के के पास जाकर कहा: 'तुम तो कह रहे थे कि तुम्हारे पिता जी घर पर हैं। लगता है घर पर कोई नहीं है।'

लड़का बोला : 'मैंने तो ठीक ही कहा था कि पिता जी घर पर हैं, लेकिन हम वहाँ थोड़े ही रहते हैं।'

* * *

* पत्रकार एक बुजुर्ग का इंटरव्यू ले रहा था।

'आपकी उम्र कितनी है?'

'एक सौ पांच वर्ष।'

'इतनी लंबी उम्र का रहस्य?'

'मैंने कभी शराब नहीं पी।'

अचानक पास वाले कमरे में शोर हुआ। पत्रकार ने पूछा : 'यह साथ वाले कमरे में शोर कैसा?'

'पिता जी और दादा जी शराब पीकर दंगा कर रहे हैं, जवाब मिला।

* * *

* एक आदमी जूस की दुकान पर गया और बोला : 'लड़ाई होने वाली है, जल्दी से तीन गिलास जूस बना दो।'

जूस पी चुका तो दुकानदार ने पूछा, 'किसकी लड़ाई किससे होने वाली है।'

'तुमसे', जवाब मिला, 'क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं है।'



I S E 93

**INTERNATIONAL SECURITY EXHIBITION
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI.
SEPTEMBER 1-5, 1993**

Large scale exposition on the latest security technology and state-of-the-art equipment in aid of security duties.

DISPLAY PROFILE

- * Security Systems, equipment and devices for :
 - * Access control
 - * Bomb detection, removal & disposal
 - * Fire safety
 - * Personal Protection
 - * Building Security
 - * Riot Control
 - * Safe Communication
 - * Fibre optic devices

BENEFICIARIES

- * Public/Private Sector Industries
- * Defence services
- * Paramilitary Forces
- * State Police Forces
- * Banks
- * Fire Fighting Organisations
- * Sea Ports/Air Ports
- * Railways
- * Manufacturers and dealers of security devices.

Sponsored by
**MINISTRY OF
HOME AFFAIRS**
(Govt. of India)

Organised by
**INDIA TRADE
PROMOTION
ORGANISATION**

**COLLABORATION
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE
13, CGO COMPLEX, LODHI ROAD, NEW DELHI-3**

रजि. नं. 47167/87

महानिदेशक श्री बी.पी.एन. सिंह पूर्वी सेक्टर की टीम को इंदर सेक्टर
—छाया—एस.के. खन्ना फुटबाल प्रतियोगिता-93 की विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए।



मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लॉक-1 सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ोदा कला, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मैकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

सी॰ आर॰ पी॰ एफ॰ समाचार

खंड-6 अंक-4, 30 जून, 1993 9 आषाढ़, शक 1915



श्री डी.पी.एन. सिंह, महानिदेशक के.रि.पु. बल, उप गृह मंत्री श्री रामलाल राही से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए

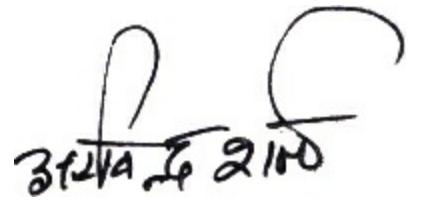
—कलकत्ता—एच.जे. शर्मा

सम्पादकीय

देश के सभी अर्धसैनिक बलों के प्रशासनिक कामकाज में हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में पाया गया। गृह मंत्रालय ने के.रि.पु. बल को इसके लिए राजभाषा शील्ड भी प्रदान की। बल की ओर से यह शील्ड बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने उप गृह मंत्री श्री रामलाल राही से एक भव्य समारोह में प्राप्त की। बल के लिए यह सम्मान हर्ष का विषय तो है ही किन्तु इससे यह तथ्य भी उद्घाटित होता है कि बल के जो जवान अपनी मातृभूमि की अस्मिता की रक्षा के लिए प्राण हथेली पर लिए घूम रहे हैं, वह अपनी राजभाषा के सम्मान के प्रति भी पूर्णतः सजग हैं।

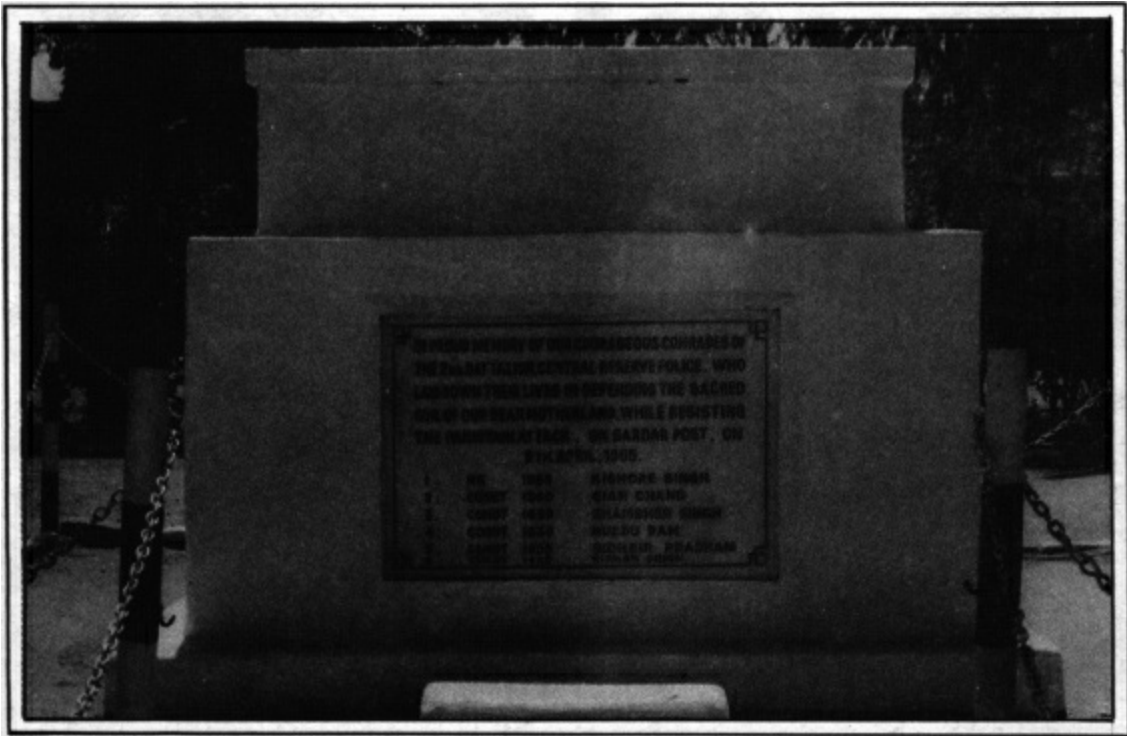
के.रि.पु. बल एक ऐसा बल है, जिसमें देश के हर कोने से आए हर भाषा, जाति तथा वर्ग के लोग हैं। यह हो सकता है कि दक्षिण से इस परिवार में शामिल हुआ कोई जवान शुरू में जब पंजाब में तैनात हो, तो वहां की भाषा उसके लिए अनजान हो, मगर महज दो चार महीनों के बाद ही वही जवान पंजाब के किसी दूर दराज के इलाके में कैम्प फायर के समय भांगड़े की बोलियों पर ठुमके लगाता दिखेगा। इसी प्रकार यदि बल की किसी कम्पनी के लंगर में पूर्वी उत्तर प्रदेश का भईया अपने तमिल साथियों के साथ चटरपटर तमिल बोलता दिखे, तो किसी बाहर के व्यक्ति के लिए तो यह एक अनहोनी बात हो सकती है, मगर के.रि.पु. बल के जवानों और अधिकारियों के लिए यह रोज दिखाई पड़ने वाले सामान्य दृश्य हैं।

इस प्रकार के.रि.पु. बल के सदस्य भाषिणी तौर पर देश के भिन्न-भिन्न इलाकों के बीच की दूरियों को जिस प्रकार कम करने में लगे हैं, उसे देश की एकता और अखंडता की सुरक्षा के उनके प्राथमिक कार्य से किसी भी प्रकार कम करके नहीं देखा जाना चाहिए। हमारे जवान विभिन्न प्रान्तों की संस्कृति, भाषा एवं रहन-सहन की दूरियों को कम करने के लिए सेतु का कार्य करते हैं। इसी लिए जब कभी खबर आती है कि सुदूर दक्षिण स्थित हमारे पल्लिपुरम ग्रुप केन्द्र में हिन्दी का बहुतायत से प्रयोग होता है, तो हमें आश्चर्य नहीं गर्व होता है, क्योंकि एक अघोषित जिम्मेदारी हम पर यह भी है।



(अ.ना. शर्मा)

कच्छ में शहीद स्मारक



गुजरात पुलिस द्वारा कच्छ में स्थापित शहीद स्मारक

कच्छ पुलिस लाइन में कच्छ जिले की गुजरात पुलिस द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 6 जवानों की पुण्य स्मृति में एक शहीद स्मारक स्थापित किया गया है तथा उसका भली-भांति रखरखाव किया जा रहा है। यह शहीद स्मारक के.रि.पु. बल की दूसरी बटालियन के उन 6 जवानों की याद में स्थापित किया गया है, जो कि 9 अप्रैल, 1965 को रन आफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर एक पाकिस्तानी ब्रिगेड से वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए थे। अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले इन वीरों की याद में स्थापित इस स्मारक पर सभी पुलिसकर्मी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। कच्छ पुलिस 21 अक्टूबर को पुलिस स्मारक दिवस के अवसर पर प्रति वर्ष इस स्थल पर बाकायदा श्रद्धार्जलि अर्पित करती है।

ज्ञातव्य है कि उक्त सरकार पोस्ट भुज से 220 किलोमीटर तथा अंतरराष्ट्रीय सीमा से रन आफ कच्छ में 3 किलोमीटर अंदर है तथा अब न्यू सरदार पोस्ट के नाम से जानी जाती है।

आराम

“आराम उनके प्रति विश्वासघात है जो इस संसार से चले गए हैं और जाते समय स्वतंत्रता का दीप सदा प्रज्वलित रखने के लिए हमें दे गये हैं। यह उस ध्येय के प्रति

विश्वासघात है जिसे हमने अपनाया है और जिसे प्राप्त करने को हमने प्रातिज्ञा की है। यह उन लाखों के प्रति विश्वासघात है जो कभी आराम नहीं करते।”

-जवाहर लाल नेहरू

हिन्दी में सर्वोत्तम कार्य हेतु राजभाषा शील्ड

16 जून, 93 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन एनेक्से में आयोजित एक भव्य समारोह के बीच उपगृह मंत्री श्री रामलाल राही ने के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को के.रि.पु. बल द्वारा हिन्दी में किए गए सर्वोत्तम कार्य के लिए राजभाषा शील्ड प्रदान की।

यह आयोजन गृह मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले विभागों तथा पुलिस संगठनों में राजभाषा हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभागों को सम्मानित करने के लिए आयोजित किया गया था। अपने विभागों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए गृह मंत्रालय द्वारा यह सम्मान प्रति वर्ष दिया जाता है।

इस मौके पर बोलते हुए मंत्री महोदय ने अपील की कि हमें अपने विभागीय कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए तथा अपने रोज के कामकाज की हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को शामिल कर उसे अधिकाधिक समृद्ध करना चाहिए। श्री राही ने कहा कि हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से न केवल हिन्दी भाषा समृद्ध ही होगी; अपितु इससे राष्ट्रीय एकता को भी बल मिलेगा। और हम लोग अपने अन्य भाषा-भाषी भाईयों के अधिक करीब आ सकेंगे।

उन्होंने कहा कि यह हर्ष की बात है कि दक्षिण में बहुत सी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दे रही हैं। उन्होंने कहा कि अत्यधिक प्रचलन में आने वाले अंग्रेजी शब्दों को हूबहू हिन्दी में लेने में कोई हर्ज नहीं है।

नेपाली पुलिस अधिकारियों का दौरा



आंतरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक श्री आर.एस. मुशाहारी, नेपाली पुलिस दल को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए।

भारतीय पुलिस की कार्य प्रणाली एवं प्रशिक्षण आदि का जायजा लेने के लिए नेपाल पुलिस के पांच वरिष्ठ अधिकारियों का एक दल 1 जून, 1993 को के.रि.पु. बल आंतरिक सुरक्षा अकादमी, माउंट आबू पहुंचा। इन लोगों को माउंट आबू में बल के अधिकारियों के प्रशिक्षण तथा अन्य कार्यव्यापारों की विस्तृत जानकारी दी गई। इन लोगों को अकादमी के निदेशक तथा अन्य अधिकारियों ने प्रशिक्षण की तकनीकों आदि की जानकारी दी, उन्हें एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया गया। नेपाल की टीम ने भी अकादमी को स्मृति चिह्न प्रदान किया।

अगले दिन यह दल सीमा सुरक्षा बल की टेकनपुर स्थित अकादमी जाने के लिए जयपुर की ओर प्रस्थान कर गया। यह दल देश के लगभग सभी प्रमुख पुलिस प्रशिक्षण स्थलों का दौरा कर रहा है।

के.रि.पु. बल ने 41 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह मई, 1993 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 41 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी पांच मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए। इनमें पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल है।

मारे गए आतंकवादियों में बब्बर खालसा इंटरनेशनल के दिल्ली एरिया का चीफ जोगिन्दर सिंह उर्फ हरभजन सिंह तथा खालिस्तान लिबरेशन फोर्स का मोहन सिंह

उफे मोहना जैसे खतरनाक आतंकवादी भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 29 घातक हथियार तथा भारी संख्या में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में आठ ए.के. 47 राइफलें, चार पिस्तौले/रिवाल्वरें, एक माउजर पिस्तौल, एक राइफल तथा एक राकेट लांचर शामिल है।

इन मुठभेड़ों में बल के चार जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 18 गंभीर रूप से घायल हुए।

गोवा में बल के कार्य की प्रशंसा

गोवा पुलिस के महानिरीक्षक श्री वाई.आर. धूरिया ने के.रि.पु. बल के स्पेशल सेक्टर के महानिरीक्षक श्री जी. झा को लिखे एक पत्र में गोवा स्थित बल की 116 बटालियन की दो कम्पनियों की प्रशंसा की है।

ज्ञातव्य है कि 116 बटालियन की “ए” और “डी” कम्पनियां गोवा में द्वितीय कमान अधिकारी जी.के. दत्ता तथा सहायक कमान्डेन्ट वी.जी. गंगूरे के नेतृत्व में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात हैं।

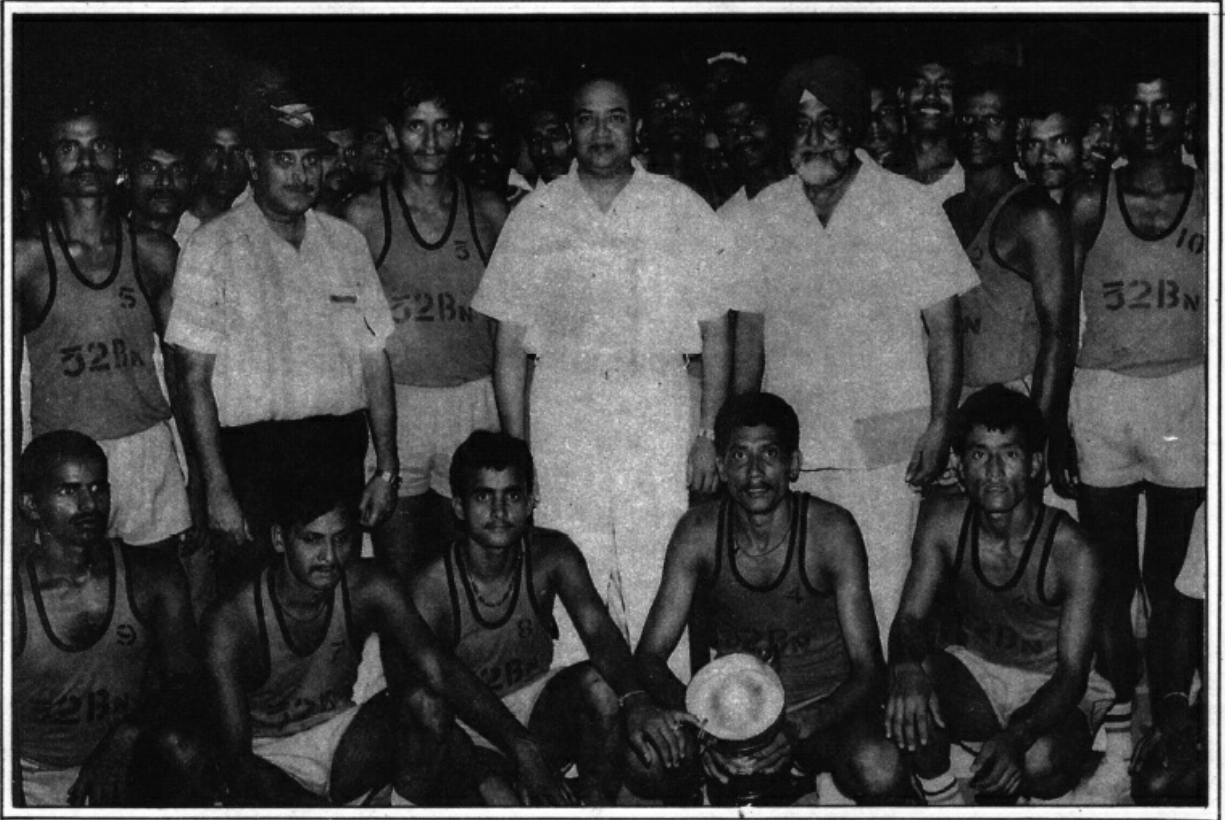
महानिरीक्षक गोवा पुलिस ने लिखा है कि इन दोनों कम्पनियों ने गोवा में कानून व व्यवस्था बनाए रखने में अपूर्व कर्तव्यपरायणता तथा अथक परिश्रम का परिचय दिया है।

जोखिम निधि लाभ

माह मई, 1993 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 41 मामलों में कुल 14,35,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपए की केन्द्रीय कल्याण निधि एवं सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के सात मामलों में कुल 1,05,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

32 बटालियन ने वालीबाल प्रतियोगिता जीती



32 बटालियन की विजेता टीम के साथ श्री ए.ए. सिद्दीकी

6 जून, 1993 को नई दिल्ली में हुए एक रोमांचक मुकाबले में 32 बटालियन ने 12 बटालियन को हरा कर हैदराबाद रेंज की 25वीं इंटर बटालियन वालीबाल टूर्नामेंट की ट्राफी जीत ली। 32 बटालियन ने यह मुकाबला 15-12, 15-8, 13-15, 12-15 तथा 15-7 से जीत लिया।

32 बटालियन के कांस्टेबल नरेश कुमार सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किए गए, जबकि 5 बटालियन के कांस्टेबल पी.वी. अरविंदाक्षण को भी सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

छः दिवसीय मुकाबले के इस फाइनल मैच के अवसर पर केरिपुबल नई दिल्ली के उप महानिरीक्षक, श्री ए.ए. सिद्दीकी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने खिलाड़ियों को प्रतियोगिता में सच्ची खेल भावना से भाग लेने के लिए बधाई दी तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन रविन्द्र रंगशाला नई दिल्ली स्थित 32 बटालियन स्थल पर किया गया था।

के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल का कक्षा 10 का शत-प्रतिशत परिणाम

नई दिल्ली रोहिणी स्थित के.रि.पु. बल स्कूल का सी.बी.एस.ई. की कक्षा 10 का परिणाम शत-प्रतिशत रहा।

इस स्कूल के 34 विद्यार्थी कक्षा 10 की परीक्षा में शामिल हुए थे। वे सभी प्रथम

श्रेणी से उत्तीर्ण हुए हैं। स्कूल के विद्यार्थी आमेत कुमार 92.5 प्रतिशत अंक प्राप्त कर चोटी पर रहे। जबकि 6 अन्य विद्यार्थियों ने पांचों विषयों में विशिष्टता प्राप्त की। 22 विद्यार्थियों के कुल अंक 75 प्रतिशत से अधिक थे।

अंग्रेजी में 13, हिन्दी में 16 में से 3, संस्कृत में 18 में से 18, गणित में 34 में से 18, विज्ञान में 24 में से 21 तथा सामाजिक विज्ञान में 34 में से 18 विद्यार्थियों ने विशिष्टता प्राप्त की।

अंग्रेजी में उच्चतम अंक 87 प्रतिशत, गणित में 95 प्रतिशत, संस्कृत में 97 प्रतिशत, विज्ञान में 94 प्रतिशत तथा सामाजिक विज्ञान में 90 प्रतिशत रहे।

सभी विषयों में कुल मिलाकर 113 ए ग्रेड प्राप्त किये गये। ज्ञातव्य है कि इनमें से अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश से आए हैं।

85 बटालियन ने कुश्ती प्रतियोगिता जीती



85 बटालियन को विजेता टीम की ट्रॉफी प्रदान करते हुए श्री जोगिंदर सिंह

85 बटालियन ने अजमेर रेंज को 27 वें इंटर बटालियन कुश्ती प्रतियोगिता को ओवर आल चैंपियनशिप जीत ली। 33 बटालियन दूसरे स्थान पर रही।

नई दिल्ली में हुए इस 6 दिवसीय टूर्नामेंट में 11 यूनिटों के प्रतियोगियों ने भाग लिया। बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री जोगिन्दर सिंह ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। फाइनल दिवस के मुकाबलों के परिणाम इस प्रकार रहे:-

48 कि.ग्रा. श्रेणी-जगदीश प्रसाद ने कवर सिंह पर विजय प्राप्त की।

52 कि.ग्रा. श्रेणी-बलवन्त सिंह ने रामनिवास पर विजय प्राप्त की।

57 कि.ग्रा. श्रेणी-भूप सिंह ने शिरोमणि को पराजित किया।

62 कि.ग्रा. श्रेणी-कवल राम ने धर्मवीर को पराजित किया।

68 कि.ग्रा. श्रेणी-अब्बास अली ने राम अवध को पराजित किया।

74 कि.ग्रा.श्रेणी-सतीश कुमार ने उमेर सिंह को पराजित किया।

82 कि.ग्रा. श्रेणी-प्रताप सिंह ने राम नवल को पराजित किया।

90 कि.ग्रा. श्रेणी-उदयवीर सिंह ने रमेश चन्द्र को पराजित किया।

100 कि.ग्रा. श्रेणी-जय प्रकाश ने मंगल सिंह को पराजित किया।

130 कि.ग्रा. श्रेणी-सुरेश चन्द्र ने भैरो सिंह को पराजित किया।

121 बटालियन ने प्रतियोगिता जीती

30 जून, 93 को हुए एक दिलचस्प तथा कड़े मुकाबले में 121 बटालियन ने 99 बटालियन को 15-12, 9-15, 15-10 तथा 15-11 में हराकर दिल्ली स्थित बटालियनों के इंटर बटालियन बालीबाल मुकाबले की ट्रॉफी जीत ली।

नाक आउट आधार पर खेले गए इन मुकाबलों में बल की 17 यूनिटों की टीमों ने भाग लिया। इस मौके पर बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को बधाई दी तथा पुरस्कार वितरित किए।

इससे पहले सेमीफाइनल मुकाबलों में 99 बटालियन 89 को तथा 121 बटालियन 32 बटालियन को हराकर फाइनल में पहुंची थी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय खेलों में चमके

श्री डी.पी.एन. सिंह, महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 23 जून, 93 को दो खिलाड़ियों उप निरीक्षक तिलक थापा और हवलदार राम कुमार को अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय खेलों में देश के लिए मेडल प्राप्त करने पर शाबाशी दी।

उप निरीक्षक तिलक थापा ने मिस्क (बेलारूस) में जून माह में आयोजित एक

अंतराष्ट्रीय जूडो प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता यूरोपीय क्षेत्र में बड़ी महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस प्रतियोगिता में जर्मनी, इटली, ब्रिटेन, रोमानिया, रशिया, लूथआनिया, लताविया, जार्जिया और बेलारुस ने भाग लिया। उप निरीक्षक तिलक थापा ने 65 कि.ग्रा. वर्ग में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

ज्ञातव्य है कि उप निरीक्षक थापा ने साउथ एशिया जूडो चैंपियनशिप प्रतियोगिता में, जो कि वर्ष 1992 में नई दिल्ली में आयोजित हुई थी, भारतीय जूडो टीम के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर स्वर्ण पदक जीता और टीम वर्ग में देश को स्वर्ण पदक दिलवाया। इन्होंने वर्ष 1993 में जापान में आयोजित जीगारो कानो अंतराष्ट्रीय जूडो टूर्नामेंट में भाग लिया। श्री थापा ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं, ऑल इंडिया पुलिस गेम्स, फेडरेशन कप और सीनियर नेशनल जूडो चैंपियनशिप में भाग लेकर स्वर्ण पदक जीते।

इस 24 वर्षीय प्रतिभा ने वर्ष 1990 में के.रि.पु. बल में उप निरीक्षक के रूप में कार्य ग्रहण किया था। ये जूडो में ब्लैक बेल्ट द्वितीय डान और “ए” श्रेणी के मान्यता प्राप्त नेशनल रेफरी हैं।

कुश्ती के क्षेत्र में हवलदार राम कुमार ने जूनियर नेशनल कुश्ती चैंपियनशिप में 58 कि.ग्रा. वर्ग में दो बार खिताब जीता। इन्होंने दिल्ली स्टेट कुश्ती चैंपियनशिप, 1993 में भी 58 कि.ग्रा. वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। इसी प्रकार राम कुमार ने जून माह में सांगली (महाराष्ट्र) में आयोजित सीनियर नेशनल कुश्ती चैंपियनशिप की 62 कि.ग्रा. वर्ग में कांस्य पदक जीतकर देश और के.रि.पु. बल का मान बढ़ाया। यह पहलवान कोचिंग के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, पटियाला में 24 जून से सम्मिलित होने के लिए जा चुका है।

स्पेशल सेक्टर ने इंटर सेक्टर हाकी प्रतियोगिता जीती

11 जून, 1993 से 116 बटालियन स्थल रांची में हुए तीसरे छः दिवसीय इंटर सेक्टर हाकी प्रतियोगिता के मुकाबलों की चैंपियनशिप स्पेशल सेक्टर ने जीत ली। बिहार सेक्टर दूसरे स्थान पर रहा।

प्रतियोगिता में बल के सभी सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया।

माह मई, 93 में मृत बल के कार्मिक

माह मई, 1993 में के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतुप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सिपाही गुलामहसन वागी (21 बटा.), सिपाही कमला प्रसाद (153 बटा.), ला. नायक दिवान सिंह (127 बटा.), सिपाही कानू राम (महानिदेशालय), एस.एम./कार्यालय अधीक्षक भूदेव प्रसाद (महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर कार्यालय), सिपाही सुखविंदर सिंह (127 बटा.), सिपाही मोहम्मद हादीशद (127 बटा.), सि. गुरविंदर

सिंह (60 बटा.), सिपाही/टेलर के.एल. तिवारी (49 बटा.), सिपाही/रोडेयो आपरेटर हसन बेग (4 बटा.), लां. नायक ओमप्रकाश (89 बटा.), सिपाही नजाकत हुसैन (69 बटा.), सिपाही/ड्रा. के.सी. सिन्हा (3 बटा.), सिपाही शेख हबीबुर राजामल (10 बटा.), हवलदार मेघनाथ सिंह (66 बटा.), ला.ना. बाबू लाल मीना (108 बटा.), नायक वाई. सबैय्या (ग्रुप केन्द्र-हैदराबाद), सिपाही वी. वाडीवेलु (53 बटा.), सिपाही डी. पाठक (ग्रु.के. दीमापुर), सिपाही धर्म सिंह (49 बटा.), कुक राजगोपालन् नायर (58 बटा.), सिपाही ए.आर.सी. राव (89 बटा.), सिपाही वी.के. भांडीवाड (52 बटा.), सिपाही/पेंटर विनायक शामराव कालबुत (90 बटा.) तथा लान्स नायक बनाराम (41 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह अप्रैल, 1993 में 2 सिगनल बटालियन के हवलदार (रंगरूट) कै. बरामिया की भी मृत्यु हुयी।

के.रि.पु. बल के जवानों ने खोया बच्चा ढूँढ निकाला

एच.ए.वी. इंटर कालिज देवबन्द सहारनपुर के शारीरिक शिक्षा के प्रशिक्षक श्री धन प्रकाश के 10 वर्षीय बच्चे को जो कि अपने गृह नगर से गायब हो गया था, खन्ना अग्रवाल धर्मशाला, पंजाब स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 106 बटालियन के जवानों ने ढूँढ निकाला और उसके अभिभावकों को सौंप दिया। पुलिस द्वारा प्रसारित की गई सूचना के आधार पर बच्चा 106 बटालियन के जवानों को मिल गया। बाद में पूछताछ के बाद उससे मिली जानकारी के आधार पर एच.ए.वी. इंटर कालिज के प्रधानाचार्य को सूचना भेजी गयी तथा उनसे निवेदन किया गया कि वह बच्चे के अभिभावकों को बच्चे को लेने के लिए भेज दें।

एच.ए.वी. इंटर कालिज के प्रधानचार्य ने हाल ही में के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को लिखे पत्र में बल के कार्मिकों के इस मानवतावादी कार्य तथा बच्चे को आतंकवादियों के चंगुल में पड़ने से बचाने के लिए भरपूर प्रशंसा की है।

आपका स्वास्थ्य

मनोरोग और होम्योपैथी

डा. जी.एस. सोनी
डी.एच.एम.एस.

सर्वथा निरोग शरीर की भांति सर्वथा निरोगी मन भी आज बहुत कम मनुष्यों में पाया जाता है। दूसरे शब्दों में जिस प्रकार समाज का अधिक भाग न्यूनाधिक मात्रा में भयंकर शारीरिक रोगों से पीड़ित है उसी प्रकार न्यूनाधिक मात्रा में भयंकर मानसिक रोगों से भी पीड़ित होता जा रहा है। अन्तर केवल इतना ही है कि मानसिक रोगों की

अपेक्षा शारीरिक रोगों के प्रांते हमारा ज्ञान आंधेक है। शारीरिक रोग का पारेणाम तो केवल रोगी को ही भोगना पड़ता है, किन्तु व्यक्ति और समाज दोनों को ही मानसिक रोग के परिणाम भोगने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

होम्योपैथी की शुरू से ही यह मान्यता रही है कि शरीर और मन परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। जब मन बहुत प्रसन्न रहता है तब शरीर व्यापार बहुत सरलता से होते हैं। इसके विपरीत जब मन उन्माद अपस्पर आदि रोगों से पीड़ित होता है तब शरीर पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। यह तथ्य सर्वविदित है कि मन के रोग शरीर पर और शरीर के रोग मन पर प्रभाव डालते हैं। जिस प्रकार कमजोर होने पर विभिन्न प्रकार के रोग आ जाते हैं उसी प्रकार मन कमजोर होने पर अनेक रोगों का ग्रास बन जाता है। और उन्माद तथा विषाद जैसे रोगों का जन्म होता है।

मन तथा शरीर के इस घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण ही शारीरिक उपचार से मानसिक रोगों और मानसिक उपचार से शारीरिक रोगों को दूर किया जा सकता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक “फ्रायड” ने कुछ भावनात्मक तथ्यों पर बल दिया है, जिसके कारण शरीर में कई रोग उत्पन्न होते हैं जैसे हिस्टीरिया। उससे जुड़े हुए कुछ अवरोध हैं जैसे नपुंसकता, कब्ज, स्त्रियों में कामेच्छा का अभाव, भूख न लगना तथा नींद न आना। शारीरिक उपचार से ही मानसिक रोगों को ठीक किया जा सकता है। जैसे यदि नाड़ियां सूख गयी हैं तो बातें करने से काम नहीं चलेगा, शारीरिक चिकित्सा करनी ही पड़ेगी।

मानसिक रोगों में भावों का विशेष स्थान होता है। सुखात्मक भावों से मन और शरीर दोनों का कल्याण पुष्टि और अभिवर्धन होता है और दुखात्मक भावों का प्रभाव मन और शरीर दोनों के लिए घोर हानिकारक होता है। सामान्य भाव और आवेगों में केवल अंशों का अन्तर है, जाति का नहीं। भावनाओं के अधिक प्रबल हो जाने पर वे आवेगों का रूप धारण कर लेती है। दूसरे शब्दों में प्रबल भावनायें ही आवेग हैं। आवेगों की उत्पत्ति विशिष्ट प्रकार की चेष्टाओं की पूर्वावस्था को सूचित करती है। आवेग के कारण मनुष्य कुछ न कुछ विशेष व्यवहार करता है। आवेगों का प्रभाव शरीर के भीतरी और बाह्य दोनों अवयवों पर प्रत्यक्ष दिखायी देता है। ये प्रभाव मुख्यतः स्वतंत्र नाड़ी मण्डल के तन्तुओं और श्रोतहीन ग्रन्थियों के स्राव के कारण उत्पन्न होती है।

आवेग मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। क्रोध, क्षोभ तथा भय। क्रोध में आंखें लाल हो जाती हैं। पसीना छूटता है, आंखें लाल हो जाती हैं। आंखें चौड़ी होने के कारण त्यौरियां चढ़ जाती हैं, व्यक्ति दांत पीसता है। वह हथेलियां रगड़ता है। वह हाथों से दूसरे को पीटने, घसीटने, शस्त्र चलाने, घाव करने अथवा इसी प्रकार के अन्य कार्य करने के लिए उद्यत होता है। मन के अन्य कार्य में क्रोध के साथ और भी कुछ क्षणिक भाव उत्पन्न होते हैं, जैसे हृदय में क्रोध की आग जलती रहने के कारण उसकी नींद चली जाती है। शत्रु को पराजित करने की इच्छा इतनी उग्र हो जाती है कि वह आवेश में आ जाता है। क्रोध से कांपता है। उसके रोए खड़े हो जाते हैं। शरीर से पसीना

छूटता है। यह निष्फल क्रोध की मनोदशा हो जाती है। कभी-कभी यही निष्फलता मस्तिष्क पर इतना अधिक प्रभाव डालती है कि मनुष्य पागल तक हो जाता है।

ऐसे रोगी को पैरेनाइट कहा जाता है। दूसरे प्रकार के रोगी उन्माद में होते हैं। आनन्द में रोगी चंचल, वेगयुक्त, अस्थिर तथा आवेगशील रहता है।

खिन्न मनोदशा का रोगी शिथिल, भीरू और मूढ़ दिखाई पड़ता है। ऐसा लगता है जैसे उसे सोचने में अपार कष्ट उठाना पड़ता है। इस रोगी में तुच्छता, निराशा और ग्रस्त मनोदशा दृष्टिगत होती है। यह स्थिति खिन्न मनोदशा (डिप्रेशन) के नाम से पहचानी जाती है।

उसकी इस खिन्नता का सही कारण वह स्वयं भी नहीं जानता। अतः वह अपनी खिन्नता नहीं छोड़ सकता और न ही उसे टालने के उपाय कर पाता है। अतएव वह अपनी खिन्न दशा का अनुचिंतन करता रहता है और कारणों की कल्पना कर लेता है, जो सच्चे कारण नहीं होते। इसकी खिन्न मनोदशा के सच्चे कारण तो उसके अज्ञात मानस पटल पर अंकित होते हैं।

आवेग शून्य रोगी-इस रोगी का रोग ऊपर बताये गये रोगी से भिन्न है। वह सुन्न, मूढ़ और जड़ होता है। वह दृष्टि शून्य, वाणी शून्य और संवेदन शून्य भी दिखायी देता है। अयार्थता से उसने अपना सम्बन्ध विच्छेद कर रखा है, तथापि वह वीतराग नहीं है। ऊपरी दृष्टि से ऐसे दिखाई पड़ने वाले रोगी में अन्दर घोर संघर्ष चलता भी हो तो हमें दिखाई नहीं देता। ऐसे रोगी को आवेशशून्य और आवेगप्रूफ (विद्वान) कहा जाता है।

पागलों के अतिरिक्त अब हम मानसिक अवस्थता के स्वरूप का दर्शन करने के लिये अपने चारों ओर रहने वाले सयाने दिखाई पड़ने वाले व्यक्तियों की तरफ भी देखें।

कुछ लोग निरन्तर चिन्तामग्न रहते हैं। उन्हें सर्वत्र अनिष्टता के ही संकेत दिखाई देते हैं। वे अपने चिन्तामग्न स्वभाव को झिड़क कर स्वस्थता अनुभव नहीं कर सकते। जबकि दूसरे कुछ बीमार होने का भ्रम अपने भीतर संजोये रहते हैं। उन्हें रोग बदलते रहे हैं और वे डाक्टर बदलते रहते हैं। पर बदलती नहीं है तो उनकी रुग्ण मनोदशा। वे मन की सुख शान्ति खो बैठते हैं। कुछ अत्यन्त मेधावी होने पर भी आशाहीनता अनुभव करते हैं और जीवन में सफल नहीं हो पाते। दूसरे कुछ अत्यन्त कार्यकुशल होते हैं और दूसरों की भूलें बड़ी बारीकी से पकड़ लेते हैं परन्तु अपनी पछाड़ जैसी भूल भी नहीं देख पाते। इतना ही नहीं यदि कोई उनकी गलती की और इंगित करे तो वे धैर्य खोकर गुस्सा हो जाते हैं। कुछ व्यक्ति इतने आवेगशील होते हैं कि स्वयं जो कर रहे हैं उसके परिणाम का विचार करने से पूर्व अनेक प्रकार के मानसिक आवेगों में बह जाते हैं। वे न कहने योग्य बात कर देते हैं और न करने योग्य काम कर बैठते हैं। परिणामतः अपराधी मनोदशा में फंस जाते हैं। दूसरे कुछ लोगों में इसके विपरीत लक्षण भी दिखाई पड़ेंगे। वे न तो किसी का प्यार पा सकते हैं और न किसी को प्यार दे सकते हैं।

इसी प्रकार से हर व्यक्ति में जो मानसिक लक्षण प्राप्त होते हैं वे होम्योपैथों के लिए

बहुमूल्य हैं और इनको आधार बनाकर वह रोगों को शारीरिक ही नहीं मानासेक स्थिति भी ठीक कर उनको मन व शरीर दोनों से स्वस्थ बना सकते हैं।

यह सर्वविदित है कि होम्योपैथी प्रणाली लक्षणों की प्रणाली है जिसमें कि रोगी की चिकित्सा रोगी के लक्षणों के आधार पर की जाती है। मनोरोग में भी यही सिद्धान्त लागू होता है पर कुछ दवाइयां ऐसी होती हैं जो कि हर लक्षण में बहुत कारगर सिद्ध हुई हैं। कुछ मुख्य दवाइयां जो कि इस रोग में बहुत अच्छा काम करती हैं, वह इग्नेशिया, मक्सवोमिका, मेगनेशियाफास, नेटमम्यूर, कोनियम, एम्ब्रागेशिया, जेलसिमियम इत्यादि-इत्यादि हैं जो कि लक्षण के मुताबिक रोगी को दी जाती हैं। जहाँ तक दवाओं की शक्ति (Potency) का प्रश्न है वह जरूरत के मुताबिक दी जाती है। होम्योपैथिक चिकित्सा मनोरोगियों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। क्योंकि यह चिकित्सा रोग को जड़ से निकालकर दूर कर देती है।

नीति रत्न

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्र भाषा पद की अधिकारिणी है।

- सुभाषचन्द्र बोस

मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो यह मैं नहीं सह सकता।

- विनोबा भावे

सबको हिन्दी सीखनी ही चाहिए-इसके द्वारा भाव विनिमय से सारे भारत को सुविधा होगी।

- चक्रवर्ती राजगोपालचारी

देश को किसी सम्पर्क-भाषा की आवश्यकता होती है, और वह (भारत में) केवल हिन्दी ही हो सकती है।

- श्रीमती इंदिरा गांधी

हिन्दी के द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- स्वामी दयानंद

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है। उसे हम सबको अपनाना है।

- लाल बहादुर शास्त्री

हिन्दी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है। हमें इस भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करना ही चाहिए।

- रविन्द्र नाथ ठाकुर

हिन्दी अब सारे भारत की राष्ट्र भाषा बन गई है। हमें उस पर गर्व होना चाहिए।

कविताएं प्रहरी वही है

प्रहरी वही जो सिर पर अपने,
कफन लपेट कर चलता है,
अरि-मस्तक मर्दन करने को,
प्रतिपल तत्पर रहता है।
प्रहरी वही जो मातृभूमि हित,
जीवन अर्पण को तैयार,
केसरिया बाना हो जिसका,
दिल में भरा देश हित प्यार।
प्रहरी वही जो युद्ध भूमि में,
अडिग सदा रहता है,
दृढ़ निश्चय संकल्प के बल पर,
शत्रु दमन करता है।
प्रहरी वही जो संकट घड़ी में,
विचलित कभी न होता,
दुश्मन की छाती को रौंदे,
अपना बल नहीं खोता।
प्रहरी वही जो जनमानस के,
दिल में अपनी छाप जमाये,
सुहृद सखा हो मानव जन का,
बर्बरता नहीं दिखाये।
प्रहरी वही है जिसके कर में,
शोभित शस्त्र अनल हो,
जिसके दिल में मातृभूमि हित,
प्यार अपार प्रबल हो।

प्रहरी वही है जिसके दिग,
कभी स्वार्थ न दस्तक देता,
मानवता की सुरक्षा-हित,
परमार्थ के हित में जीता।
प्रहरी वही धनंजय जैसा,
मन में मोह न लाता,
समय-भूमि में प्रतिद्वन्दी के,
मन में दहशत फैलाता।
प्रहरी वही राणा प्रताप सम,
शीश कभी न झुकाता,
अभिमानी, बलवान पुरुष,
कभी हाथ नहीं फैलाता।
प्रहरी वही, धरा पर जिसकी,
गाथा जन-जन गाये,
सुयश कहानी केरिपुबल की,
सबके मन को भाये।
प्रहरी वही जो कुंवर सिंह के,
साहस को दुहराये,
डगलस यदि आता हो फिर,
तो विचलित होने न पाये।
प्रहरी वही जो रश्मि रथि-बन,
प्रतिद्वन्दी को ललकारे,
आतंकवाद के सूत्रधार को,
पौरुषता से पछाड़े।
प्रहरी वही, जिसकी जिह्वा पर,
आजादी का गीत हो,
अग्निवाण की प्रबल शक्ति से
शत्रुदल भयभीत हो।
प्रहरी वही जो प्रगति के पथ,
आगे बढ़ता जाये,
प्रहरी “प्रभात” की अभिलाषा को,

हिमागोरे पर पहुंचाए।

हंसराज ओझा “प्रभात”
49 बटालियन, केरिपुबल

आशा

जीवन में एक आशा थी,
कुछ बनने की अभिलाषा थी।
वह पूर्ण हुई तो पूर्ण हुई,
गर टूट गई तो क्या हुआ।
हम नई आशा सजायेंगे,
उसको अपने कल में,
सुसज्जित करके जायेंगे।
जाने कितने लोग लिए अभिलाषा जीते हैं,
पर कहां सभी के स्वप्न यहां पूरे होते हैं।
फिर भी एक दिन आएगा,
जो अपना कहलायेगा।
सब तरफ शान्ति थी,
सब तरफ खुशहाली थी।
अचानक एक दिन काली घटा घिर आई,
देश पर ये कैसी मौत की बदली थी छाई।
कैसा था वह शोर सुनो,
कैसी थी वह चीख सुनो।
जब देश में त्राही-त्राही थी,
तब लोगों ने हमें पुकारा था।
जब चारों तरफ से गोलियां
कर रही थी झंकार,
जिन्हें सुनकर दिल दहलता था।
हर तरफ से यही शोर आता था,
हमें बचाओ, हमें बचाओ,

हर व्याक्ते यही चिल्लाता था।
पड़ गया था खतरे में
उस वक्त वतन का ताज।
उस मातृभूमि की धूल में जब,
पूरे सन जाओगे,
होकर भवबंधन मुक्त तुम,
आत्म रूप बन जाओगे।
चाहता है यह राष्ट्र तुमसे बलिदान,
करना होगा तुमको पूरा इसका अरमान।
उठो नौजवान, उठो, उठो, उठो.....

गीतांजलि तोमर
121 बटालियन, केरिपुबल

हास परिहास

एक युवती की डायरी से-

- 1 जुलाई: आज जहाज के कप्तान ने मुझे डिनर दिया।
- 2 जुलाई: कप्तान के साथ ताश खेलती रही।
- 3 जुलाई: कप्तान ने एक प्रस्ताव मेरे सामने रखा।
- 4 जुलाई: कप्तान ने मुझे धमकी दी कि अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगी तो वह जहाज डुबो देगा।

5 जुलाई: मैंने आज 100 लोगों की जिंदगी बचा ली।

एक बार एक आदमी को एक लाख रुपए की लाटरी निकल आई। उसने सोचा कि मैं तो ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूँ, लेकिन अपने बेटे को विदेशी भाषा पढ़ानी चाहिए। वह विदेशी भाषा सिखाने वाले स्कूल में गया और प्रिंसिपल से बोला: 'मैं अपने बेटे को विदेशी भाषा सिखाना चाहता हूँ।'

‘कौन सी? फ्रेंच, जर्मन, इटेलियन, स्पेनिश?’

‘इन सब में से सबसे ज्यादा विदेशी कौन-सी है?’ उसने पूछा।

आओ हंसें

एक साहब ने एक ढाबे में जाकर कहा-“एक हाफ तंदूरी चिकन लाओ लेकिन चिकन छोटा नहीं चलेगा। काफी बड़ा होना चाहिए।”

एक घंटे बाद भी जब चिकन नहीं आया तो उन्होंने बैरे को बुलाया-“क्या बात है? चिकन लाने में इतनी देर क्यों लग रही है?”

बैरा बोला-“साहब, आपको चिकन तब तक नहीं मिलेगा जब तक कोई और ग्राहक दूसरे हाफ का आर्डर नहीं देता। हम आधे के लिए इतना बड़ा मुर्गा बेकार में नहीं मार सकते।”

नरक के मुख्य द्वार पर उम्मीदवारों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। सभी लोगों को ‘एडजस्ट’ करना यमराज के लिए बड़ा मुश्किल पड़ रहा था। नारे लगाती, बेकाबू भीड़ से परेशान आखिरकार यमराज ने भगवान को अपना त्यागपत्र सौंप दिया। भगवान हंसे, इस्तीफा लौटाते हुए यमराज को सलाह दी-“इन सभी का रिकार्ड देखो। नरक में विद्यमान सीटों के अनुसार, इनमें से बेहतर लोगों को यहां जगह दे दो और बाकियों को दिल्ली के यमुनापार क्षेत्र में बसा दो।”

“मेरे पति मुझे बहुत प्यार करते हैं। कहते हैं सात जन्मों तक तुम मेरी पत्नी रहो-यही मेरी दुआ है।”

“यह मर्द होते ही ऐसे हैं। आठवें जन्म के लिए किसी और को कह रखा होगा।”

‘मेरे पिता जी ने कहा है कि यदि मैं पास हो गया तो एक साइकिल ले देंगे।’

‘तब तो तुम आजकल खूब पढ़ रहे होंगे?’

‘नहीं यार।’

‘क्यों?’

‘मैं अपने पिता जी के रुपए बरबाद नहीं करना चाहता।’



I S E 93

**INTERNATIONAL SECURITY EXHIBITION
PRAGATI MAIDAN, NEW DELHI.
SEPTEMBER 1-5, 1993**

Large scale exposition on the latest security technology and state-of-the-art equipment in aid of security duties.

DISPLAY PROFILE

- * Security Systems, equipment and devices for :
- * Access control
- * Bomb detection, removal & disposal
- * Fire safety
- * Personal Protection
- * Building Security
- * Riot Control
- * Safe Communication
- * Fibre optic devices

BENEFICIARIES

- * Public/Private Sector Industries
- * Defence services
- * Paramilitary Forces
- * State Police Forces
- * Banks
- * Fire Fighting Organisations
- * Sea Ports/Air Ports
- * Railways
- * Manufacturers and dealers of security devices.

Sponsored by
**MINISTRY OF
HOME AFFAIRS
(Govt. of India)**

Organised by
**INDIA TRADE
PROMOTION
ORGANISATION**

**COLLABORATION
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE
13, CGO COMPLEX, LODHI ROAD, NEW DELHI-3**



121 बटालियन के आर.के. सिंह, अपर महानिदेशक श्री एस.बी.एम. त्रिपाठी से इंदर बटालियन वालीबाल प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक कें० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली- 110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली- 110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : फलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 फोन : 3275184, 3266571

सी॰ आर॰ पी॰ एफ॰ समाचार

खंड-6 अंक-5

31 अगस्त, 1993

9 भाद्रपद, शक 1915

नीमच में स्थापना दिवस



छाया-एस.के. खन्ना

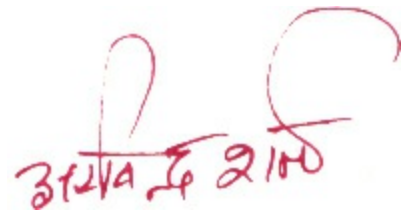
सम्पादकीय

स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए जब प्रधानमंत्री पंजाब में आतंकवाद के खात्मे के लिए देश के सुरक्षा बलों को बधाई देते हैं, तो जहां एक ओर हमारा सीना गर्व से फूल उठता है, वहीं इस शांति को स्थायी बनाए रखने की एक अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ भी अपने कंधों पर महसूस होता है।

कई कठिनाइयों, बलिदानों और स्मृतियों के साथ आज हम इस मुकाम पर पहुंचे हैं। आज जब हम यहां खड़े होकर पूरे राष्ट्र के साथ पीछे मुड़ कर देखते हैं, तो हमें अनायास ही याद आते हैं, अपने वो हजारों साथी जिन्होंने पंजाब को इस मुकाम तक पहुंचाने के लिए पंजाब की हरी-भरी धरती को अपने लहू के छींटों से सींचा है। जिन्होंने पंजाब में धधक रही आतंकवाद की आग को बुझाने के लिए अपने सीने का लहू अंजुरी भर भर कर दिया है। साथ ही हमें याद आते हैं इन शहीदों के परिवार जन। उनके प्रति हमारा मन मस्तिष्क, श्रद्धा और कर्तव्य बोध से भर उठता है। ये परिवार सहारे के अभाव में टूटें न, बिखरने न पाएं, ये हमें तथा समाज को देखना है।

पंजाब आतंकवाद के खूनी दौर के बाद अब पुनर्वास के दौर से गुजर रहा है। आतंकवाद के इस खूनी दौर में पंजाब के बहुत से नागरिकों के परिवार और प्रायः सभी नागरिकों के मन बुरी तरह क्षतविक्षत हुए हैं। इन घावों पर अब हमें तथा समाज को मरहम लगाना है। हमें पंजाब के गांवों में पूरी तरह पैर पसार चुकी उदासी की चादर को नोचकर फेंक देना है और एक बार फिर लौटा देना है पंजाब को वही पुराना चहचहाता, गीतों भरा, खुशगवार, जिन्दादिल, दूध लस्सी, मक्के की रोटी और सरसों का साग वाला माहौल।

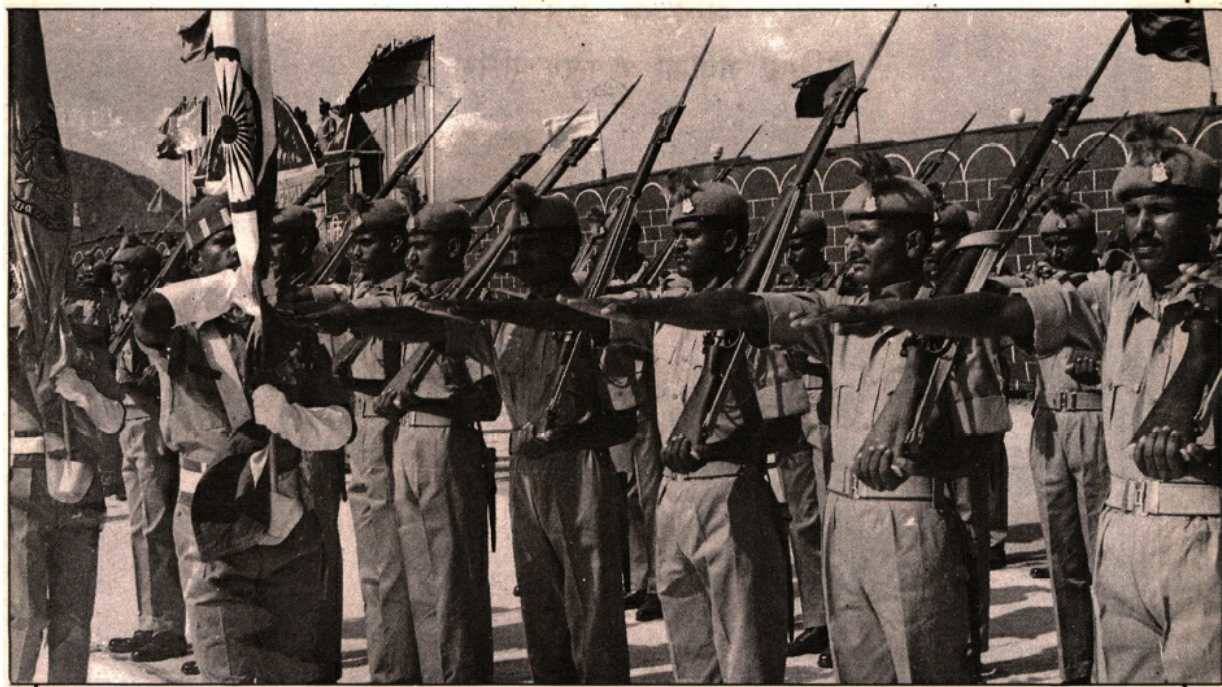
15 अगस्त की इस पवित्र बेला पर हमें संकल्प लेना है कि हम अपने साथियों का बलिदान व्यर्थ न जाने देंगे। जो शहीद हुए हैं, उनकी कुर्बानी हमारे मन में है, हमारे सिर उनके प्रति कृतज्ञता से झुके हुए हैं और सीने कर्तव्यबोध और गर्व से तने हुए हैं। इतिहास साक्षी है हमने परंपराओं का सिर्फ निरवाह ही नहीं किया, अपितु नवीन परंपराएं डाली हैं। हमारा ये प्रयास आगे भी जारी रहेगा। ये हमारी शपथ है।



(अ. ना. शर्मा)

आवरण चित्र-89 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी सुखवंत सिंह को विशेष सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान करते श्री पायलट।

124 बटालियन की शपथ परेड श्री पायलट ने बल के कार्यों की प्रशंसा की



कर्तव्य के प्रति निष्ठा की शपथ लेते 124 बटा. के जवान

केन्द्रीय आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट ने कहा है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पूर्ण कुशलता एवं समर्पण के साथ अपने कर्तव्य को अंजाम दे रहा है। श्री पायलट 26 जुलाई, 1993 को जयपुर स्थित बल की 124 बटालियन के जवानों की कसम परेड की सलामी लेने के बाद जवानों को सम्बोधित कर रहे थे, इस अवसर पर भारी संख्या में एकत्र नागरिकों और अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए श्री पायलट ने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दक्षता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज पूरे देश में जहां कहीं भी कानून व व्यवस्था की समस्या होती है, सबसे पहले के.रि.पु. बल की मांग की जाती है। उन्होंने कहा कि देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए इस बल के जवानों को सतत सजग रहना पड़ता है तथा बहुत अल्प नोटिस पर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचना पड़ता है। उन्होंने कहा कि सरकार इस सबसे उत्पन्न उनकी समस्याओं से वाकिफ है तथा इन समस्याओं के निराकरण के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

उन्होंने बल के परिवार में शामिल हुए 124 बटालियन के जवानों का स्वागत करते हुए आह्वान किया कि वे बल की गौरवशाली परंपराओं को ओर विकसित करें। उन्होंने कहा कि वे अपना कार्य पूर्ण समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ करें तथा अपनी समस्याओं पर विचार का जिम्मा सरकार के लिए छोड़ दें।

इस मौके पर 124 बटालियन के जवानों ने अपने 36 हफ्ते के कड़े प्रशिक्षण के बाद एक आकर्षक एवं चुस्त परेड प्रस्तुत की। परेड का नेतृत्व बटालियन के कमान्डेन्ट श्री पी.एस. चौधरी ने किया। इस मौके पर श्री पायलट ने सर्वश्रेष्ठ कांस्टेबलों को पुरस्कार भी प्रदान किए। आउटडोर गतिविधियों के लिए सर्वश्रेष्ठ टेनी का खिताब कांस्टेबल उमेश कुमार को, सर्वश्रेष्ठ इनडोर टेनी का खिताब मृगंदरा तिवारी को तथा ओवरआल बेस्ट टेनी का खिताब कांस्टेबल रविंद्रराम को दिया गया। हेड कांस्टेबल अर्जुन सिंह सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षक घोषित किए गए।

इस मौके पर बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया, जबकि स्पेशल रेंज के महानिरीक्षक श्री जी. झा ने मुख्य अतिथि को बल की ओर से स्मृति चिह्न भेंट किया।

इस मौके पर भारी संख्या में नागरिक एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस पर पुलिस पदकों से सम्मानित बल के कार्मिक

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक



उप महानिरीक्षक (अब महानिरीक्षक) पारेचालन आर.सी. अग्रवाल



उप महानिरीक्षक भोपाल ई.एस. बखतावर

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक (ग्रु. के. हैदराबाद) ए. गुहा राय



कमांडेंट आर.के. सिंह (11 बटालियन)



सहायक निदेशक (प्रशासन मुख्यालय) एस.एस. रावत



सहायक निदेशक, लेखा एस.सी. शर्मा (महा निरीक्षक कार्यालय लखनऊ)



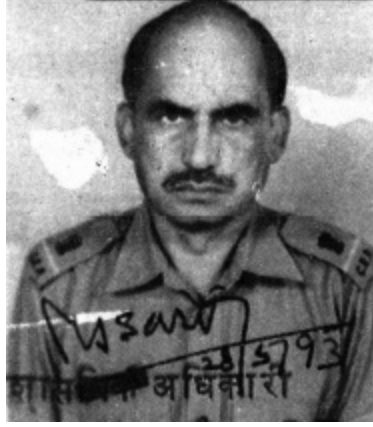
2-IC एस. रामालिंगम (18 बटालियन)



स. कमांडेंट वी.के. शर्मा (आ.सु. अकादमी)



डा. पी.सी. साहू (सी.एम.ओ.) बेस अस्पताल-3



सू.मे. हीरो गुलबानी (अपर महानिदेशक कार्यालय उत्तर पश्चिम क्षेत्र)



सू.मे. एम. गोपाल कृष्णन (यु.के. हैदराबाद)



सू.मे. पी.एन. सिमलोटे (आ.सु. अकादमी)



नि. घनश्याम (82 बटा.)



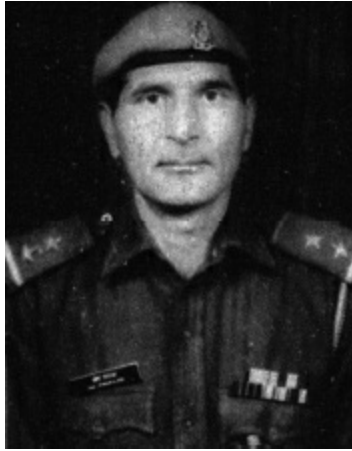
नि. (तकनीक) सुमेर सिंह (1 सिग.)



उ. नि. शंकर दयाल सिंह (10 बटा.)



उ. नि. प्रकाश चंद (26 बटा.)



उ. नि. ओम प्रकाश (ग्रु. के. राम पुर)



उ. नि. एन. गोपीकुट्टन नायर (110 बटा.)



उ. नि. प्रकाश चंद (आ.सु. अकादमी)



है. कां. सुदामा राय (74 बटा.)



है. कां. एच.पी. द्वे (52 बटा.)



है. कां. हीरा सिंह (4 बटा.)



है. कां. योगेश्वर प्रसाद (88 बटा.)



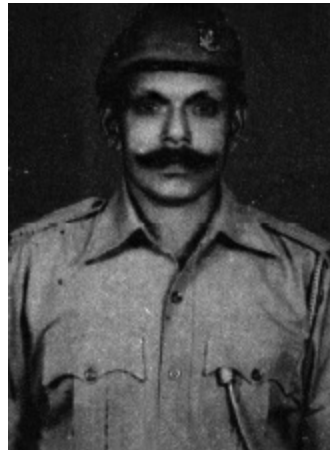
कां. (बिगुलर) एन.सी. जोन (ग्रु. के. आवड़ी)



कां. अली ओसर (10 बटा.)



का. पी. योहनन (62 बटा.)



कुक् एन.के. कुटी नायर (ग्रु. के. पल्लीपुरम)

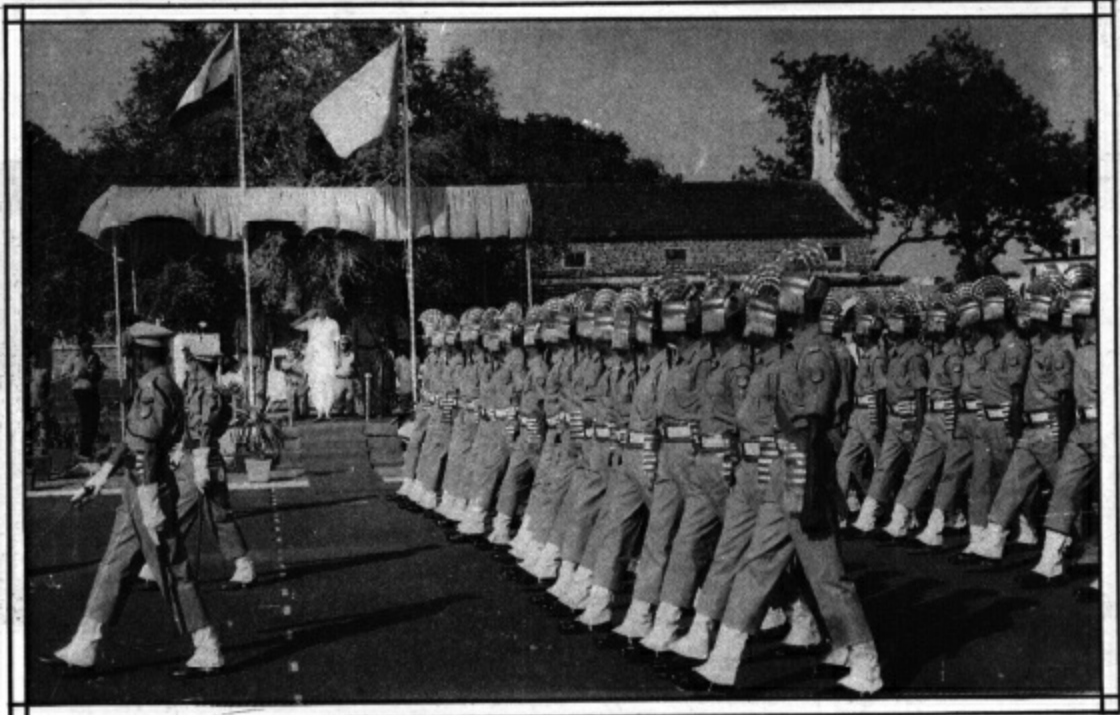


बारबार सुंदर लाल (67 बटा.)

नीचम में 54 वां स्थापना दिवस

श्री पायलट द्वारा के.रि.पु. बल के कार्यों की प्रशंसा

लेख-ए.एन. शर्मा/छाया-एस.के. खन्ना



स्थापना दिवस परेड की सलामी लेते हुए श्री पायलट ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 54 साल के इतिहास में 27 जुलाई, 93 एक महत्वपूर्ण स्थान रखेगा। यह वो दिन है जब एक लम्बे अन्तराल के बाद के.रि.पु. बल के कार्मिकों ने बल की जन्मस्थली नीमच में हर्षोल्लास के साथ अपना स्थापना दिवस मनाया। इस मौके पर केन्द्रीय आन्तरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर प्रस्तुत की गई आकर्षक एवं चुस्त परेड का नेतृत्व कमान्डेन्ट मुख्तियार सिंह ने किया जबकि सहायक कमान्डेन्ट अमृत बरार परेड के मध्य में के.रि.पु. बल का ध्वज लिये चल रही थीं। परेड में विभिन्न बटालियनों की छः टुकड़ियों ने भाग लिया। आर.ए.एफ. की टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ी घोषित किया गया।

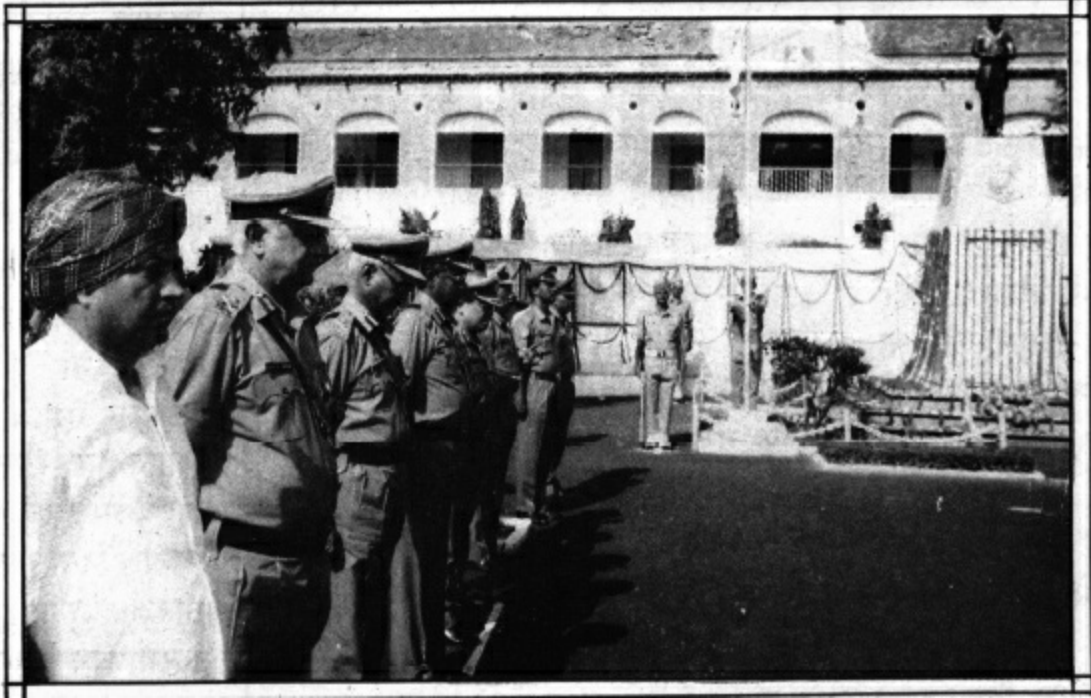
इस मौके पर उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए श्री पायलट ने कहा कि अब प्रति वर्ष स्थापना दिवस समारोह नीमच में ही आयोजित किया जाएगा, क्योंकि नीमच इतिहास की इतनी अमूल्य धरोहरें अपने अंदर समेटे हैं कि इसे इतनी आसानी से विस्मृत नहीं किया जा सकता।

श्री पायलट ने कहा कि बल की परिचालन संबंधी तैनाती की दिक्कतों को दृष्टि में रखते हुए, बल को चार क्षेत्रों में विभक्त किया जाएगा। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में बल के एक हजार कार्मिकों को आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

इस मौके पर श्री पायलट ने बल के कार्मिकों को आश्वासन दिया कि उन्हें भारतीय सेना के ही समान रियायती दामों पर कैंटीन सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। उन्होंने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के केन्द्रीय कल्याण निधि कोष में 54 लाख रुपए का अनुदान देने की घोषणा भी की।

श्री पायलट ने कहा कि अर्द्धसैनिक बलों द्वारा देश को उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं से देश गौरवान्वित हुआ है। उन्होंने बल के कार्मिकों का आह्वान किया कि देश के अंदर तथा बाहर से देश की एकता और अखंडता को तोड़ने की कोशिशों को दृष्टि में रखते हुए उन्हें हर पल, हर क्षण सतर्क रहना चाहिए।

श्री पायलट ने इस मौके पर विशिष्ट सेवाओं के लिए निम्न कार्मिकों को पुलिस पदक भी प्रदान किए। आर.टी.सी. III के प्रिंसिपल वी.पी. रमण, 40 बटालियन के कमान्डेन्ट डी.आर. पाठक, 89 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी सुखवंत सिंह, सहायक कमान्डेन्ट लाल सिंह, इंस्पेक्टर (सेवानिवृत्त) भीम सिंह, हैड कांस्टेबल शिवसिंह, गणेश चन्द्र (सेवानिवृत्त) तथा मोहम्मद अकबर (सेवानिवृत्त)।



नीमच में बल के उच्च अधिकारियों के साथ शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री पायलट।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में हाल ही में एक जोखिम प्रीमिया योजना शुरू की गई है, इसके तहत जो जवान इस योजना में चार किशतों में 820 रुपए जमा करता है, अगर अपने सेवाकाल के दौरान उसकी मृत्यु हो जाती है, तो उसे इस योजना के 25,000 रुपए प्रदान किए जाते हैं। वर्तमान में बल के 35 प्रतिशत कर्मचारी इस योजना के सदस्य बन चुके हैं। मंत्री महोदय ने घोषणा की कि अब आगे से इस योजना से मृतकों के आश्रितों को दी जाने वाली राशि 25,000 रुपये के स्थान पर 30,000 कर दी जाएगी।

इस मौके पर श्री पायलट ने नीमच स्थित शहीद स्मारक पर अपने श्रद्धा सुमन भी अर्पित किए।

बाद में दिल्ली से गए पत्रकारों को संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने सरकार द्वारा के.रि.पु. बल के पुनर्गठन के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि बल के ढांचे का यह पुनर्गठन 15 साल के अंतराल के बाद किया जा रहा है। श्री सिंह ने कहा कि पूरे देश में बल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की गतिशीलता को दृष्टि में रखते हुए बल को चार क्षेत्रों में बांटा जाना एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि हमारी तैनाती का स्वरूप समय की मांग के अनुसार समय-समय पर बदलता रहता है, एक समय हमारी सारी फोर्स का 70 प्रतिशत भाग पंजाब और जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों से संघर्ष करने में लगा था।

श्री सिंह ने कहा कि हमारे जवान आज बड़ी तादाद में मणिपुर तथा नागालैंड में भी तैनात हैं। बाद में सर्वश्री डी.पी.एन. सिंह, डी.आर. कार्तिकेयन तथा एस.वी.एम.त्रिपाठी ने नीमच स्थित बल की यूनिटों तथा अन्य संस्थाओं का दौरा किया।

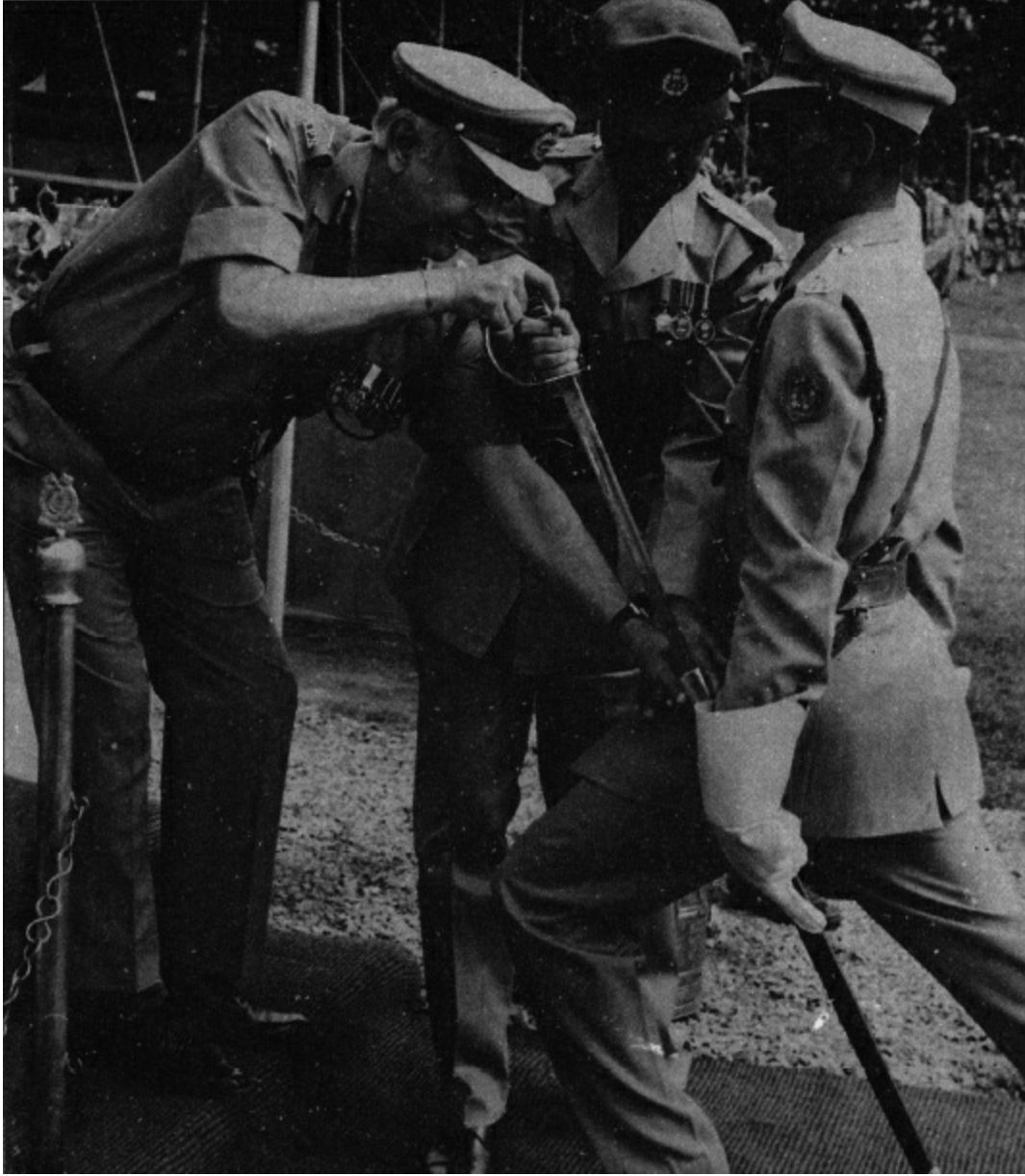
और जवानों द्वारा लगाए गए आनंद मेले में भी भाग लिया तथा नोमच में वन महोत्सव में भाग लेकर पौधे लगाए।

राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड

आंतरिक सुरक्षा अकादमी में 55 सप्ताह का बुनियादी प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा कर चुके 23वें बैच के केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 56 सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड 20 अगस्त, 93 को संपन्न हुयी।

इस अवसर पर के.रि.पु. बल आंतरिक सुरक्षा अकादमी माऊंट आबू में आयोजित एक भव्य समारोह में के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन.सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने दीक्षांत परेड की सलामी ली तथा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय विशेषता प्राप्त करने वाले प्रशिक्षार्थियों को सम्मानित भी किया।

इन प्रशिक्षार्थियों के 55 सप्ताह के बुनियादी प्रशिक्षण में इंडोर तथा आऊटडोर विषय भी सम्मिलित है। सामान्य पुलिस प्रशिक्षण के अतिरिक्त पाठ्यक्रम में प्रति विद्रोहात्मक तथा प्रति आतंकवादी अभियान जैसे विषय भी शामिल हैं। इन प्रशिक्षार्थियों को के.रि.पु. बल का व्यवसायिक अधिकारी बनाने हेतु तैराकी, पर्वतारोहण, बिना हथियार की लड़ाई, जन सम्पर्क, हथियार तथा खेलकूद का प्रशिक्षण भी दिया जाता है और इस प्रकार 55 सप्ताह के इस कड़े प्रशिक्षण के बाद एक सामान्य नागरिक युवक अपनी दीक्षांत परेड के समय एक ऐसे प्रशिक्षित पुलिस अधिकारी में तब्दील हो चुका होता है, जो कि सम्मुख आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए सक्षम होता है। सिर्फ इतना ही नहीं इससे भी बढ़कर कई प्रशिक्षार्थी अनेक विषयों में न केवल विशेष योग्यता प्राप्त कर लेते हैं, अपितु दीक्षांत परेड पर उनकी इस उल्लेखनीय योग्यता के लिए उन्हें सम्मानित भी किया जाता है।



महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह, इमरान मलिक को स्वार्ड आफ आनर भेंट करते हुए।

प्रशिक्षार्थियों के लिए सबसे बड़ा सम्मान स्वार्ड आफ आनर इस बार महानिदेशक महोदय ने इमरान मलिक को भेंट किया, उन्हें इनडोर विषयों में सर्वश्रेष्ठ रहने का सम्मान भी प्राप्त हुआ। आऊटडोर विषयों, डिल तथा शारीरिक प्रशिक्षण में शील निधि झा सर्वश्रेष्ठ ठहराए गए। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी तथा बिना हथियार की लड़ाई का पुरस्कार एम.जे. विजय को दिया गया। शाहनवाज खान सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे। अजय मिश्र को सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज का खिताब दिया गया। हथियार प्रशिक्षण में धीरज कुमार तथा पर्वतारोहण में रामयोफांग डिवडेंग सर्वश्रेष्ठ रहे।

इस मौके पर बल के परिवार में शामिल हुए इन अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक महोदय ने कहा कि जीवन एक मैराथन दौड़ है और प्रत्येक को इसे

जीतने के लिए दौड़ना चाहिए तभी हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि जीवन में कोई अंतिम दौर नहीं होता। संघर्षरत रहकर हमें अच्छे कार्यों के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यक्ति से बड़ी उसकी छाया होती है। व्यक्ति का कद तो स्थिर रहता है, लेकिन उसकी छाया 60 फुट तक हो सकती है। इसी प्रकार जवानों को अपने सेवाकाल में अच्छा नाम अर्जित करने के लिए कड़ी मेहनत के साथ कार्य करना चाहिए ताकि उनके अधीनस्थ कार्य करने वाले छोटे अधिकारियों व जवानों और सहयोगियों पर अच्छा प्रभाव पड़े जिससे उनमें विश्वास और आदर भाव जागृत हो।

परेड का नेतृत्व सहायक कमान्डेन्ट श्री इमरान मलिक ने किया।

वैष्णो देवी मंदिर यात्रियों की सुरक्षा के.रि.पु. बल के जिम्मे

लेख-ए.एन. शर्मा

जम्मू स्थित तीर्थस्थल वैष्णो देवी मंदिर तथा उसके मार्ग की पूरी सुरक्षा की जिम्मेदारी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जिम्मे है। ज्ञातव्य है कि वैष्णो देवी मंदिर काफी ऊंची चढ़ाई के बाद पर्वत पर स्थित है। इस पूरे मार्ग को यात्रियों को पैदल तय करना पड़ता है। इस मार्ग पर यात्रियों की सुरक्षा का जिम्मा भी के.रि.पु. बल के पास ही है। यहां तैनात बल के कार्मिकों को सर्दी, गर्मी, बरसात हर मौसम में रात दिन कार्य करना पड़ता है। त्यौहारों के दिनों में जबकि यहां आने वाले तीर्थ यात्रियों की संख्या अत्यधिक बढ़ जाती है, तो यहां तैनात बल के कार्मिकों की जिम्मेदारी व कठोर श्रम भी साथ-साथ बढ़ जाता है। यहां तैनात पहली बटालियन की एक कम्पनी के जवान हर समय मुस्कुराते हुए यात्रियों की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। उनकी सौहार्दपूर्ण सेवाओं एवं कर्तव्यनिष्ठा से जम्मू कश्मीर प्रशासन इस कदर प्रभावित है कि उसने पहली बटालियन के कमान्डेन्ट श्री एन.एन. मिश्रा से निवेदन किया है कि वह कटरा से वैष्णो देवी तक के मार्ग में बीच-बीच पर महत्वपूर्ण स्थानों पर चौकियां बनाकर वहां अपनी एक और कम्पनी को तैनात करें। कटरा और वैष्णो देवी मंदिर पर स्थित इस कम्पनी की प्लाटूनें एक-दूसरे से वायरलेस के द्वारा जुड़ी हुयी हैं, जिससे बल के कार्मिकों की संचार एवं परिचालन क्षमता बनी रहती है। वैष्णो देवी में बल के कार्मिकों की राज्य की वहां काम कर रही विभिन्न संस्थाओं के साथ अच्छा तालमेल है। मंदिर स्थित बल के जवान स्थानीय पुलिस की मदद से यात्रियों की भीड़ में व्यवस्था बनाए रखते हैं ताकि सभी को सहजता से दर्शन सुलभ हो जाएं तथा किसी प्रकार की अराजकता न फैलने पाये।



वैष्णो देवी मंदिर में एक वृद्धा की मदद करते बल के जवान
कटरा स्थित बल के कार्मिकों की कमान सब इंस्पेक्टर राम अवतार के हाथ में है,
जबकि वैष्णो देवी मंदिर पर इंस्पेक्टर एस.पी. सिंह कम्पनी कमांडर के रूप में तैनात
हैं।

हालांकि जम्मू कश्मीर आतंकवाद से ग्रस्त राज्य है, मगर हमारे जवानों की सजग सतर्क नजरों के कारण, इस इलाके में पूर्ण रूप से शांति बनी हुयी है।

श्री भूदेव चक्रवर्ती उप निदेशक, प्रशासन (महानिदेशालय)

उप महानिरीक्षक श्री भूदेव चक्रवर्ती ने 26 अप्रैल, 1993 को महानिदेशालय में उप निदेशक (प्रशासन) का पदभार संभाल लिया।



कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर श्री चक्रवर्ती 1963 में के.रि.पु. बल में सीधे राजपत्रित अधिकारी नियुक्त हुए। उन्हें देश के 19 राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों को अंजाम देने का अनुभव प्राप्त है। उन्होंने कई बटालियनों को अपना नेतृत्व प्रदान किया और उनके नेतृत्व वाली एक बटालियन ने तीन सालों तक लगातार सर्वश्रेष्ठ बटालियन की टाफी जीती। गुवाहाटी ग्रुप केन्द्र के वह पहले कमान्डेन्ट थे। उनके अन्य महत्वपूर्ण पदभारों में महानिरीक्षक सेक्टर-3 (अब उत्तरी सेक्टर) में सहायक निदेशक, अपर उप महानिरीक्षक रामपुर तथा आवड़ी, उप महानिरीक्षक अगरतला, आइजोल, फिरोजपुर तथा कलकत्ता के पदभार शामिल हैं।

श्री चक्रवर्ती ने अपराध और न्याय-विधि विज्ञान संस्थान से अपराध-विज्ञान का एडवांस कोर्स व सामुदायिक संपर्क कोर्स, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी से वरिष्ठ अधिकारियों का कोर्स, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान से लोक उधम प्रबन्ध कोर्स एवं सामग्री प्रबन्धन में एडवांस कोर्स तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से वरिष्ठ अधिकारियों के लिए सरकार में प्रबन्धन पर विशेष कार्यक्रम कोर्स जैसे कई उच्च व्यवसायिक कोर्स किए हैं।

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, आबू पर्वत में उप निदेशक के रूप में उन्होंने सीधे

नियुक्त राजपात्रेतर अधिकारियों के तीन बैच प्रशिक्षित किए।

श्री चक्रवर्ती की प्रबन्ध एवं व्यवहारवादी विज्ञान के अध्ययन में रुचि है। वे साहित्य में भी रुचि रखते हैं तथा हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत भाषाओं का अच्छा ज्ञान है।

श्री चक्रवर्ती ने कई रक्तदान शिविरों का आयोजन किया है और रेड क्रॉस सोसाइटी को कई अवसरों पर उन्होंने स्वयं भी रक्तदान दिया है। देश के लिए अपनी आंखें दान करने के लिए भी उन्होंने व उनकी पत्नी ने अपने नाम पंजीकृत कराए हुए हैं।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी उनमें काफी उत्साह है और अनेक विद्यालयों में उन्होंने विद्यार्थियों को पर्यावरण पर व्याख्यान दिए हैं।

श्री चक्रवर्ती को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक, रक्षा मैडल, संग्राम मैडल, पुलिस (विशेष ड्यूटी) मैडल की बार, स्वतन्त्रता वार्षिकोत्सव पदक, राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवा पुलिस पदक, महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा महानिदेशक के प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 85 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जुलाई, 1993 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी पांच मुठभेड़ों में 85 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इनमें पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 16 घातक हथियार तथा भारी संख्या में गोली बारूद बरामद किया। बरामद हथियारों में दो .315 बोर की देशी राइफलें, तीन देशी कट्टे, सात पिस्तौलें, तीन एस.बी.बी.एल. गन तथा एक .38 रिवाल्वर शामिल है।

इन सब मुठभेड़ों में बल के दो जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा चार गंभीर रूप में घायल हुए।

29 बटालियन द्वारा पंजाब के बाढ़ पीड़ितों हेतु अनुदान

कलानूर, बटाला स्थित के.रि.पु. बल की 29 बटालियन के जवानों और अधिकारियों ने स्वेच्छा से पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए 25,075 रुपए एकत्र कर मुख्यमंत्री राहत कोष में भेंट किए।

कार्मिकों द्वारा स्वेच्छा से दान दी गई इस राशि का बैंक ड्राफ्ट 29 बटालियन के कमान्डेन्ट सुनील शौरी ने 16 अगस्त, 1993 को चंडीगढ़ में पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह को भेंट किया।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह जुलाई, 1993 में मृत्यु के 24 मामलों में कुल 8,40,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपए की केंद्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल इसी प्रकार अक्षमता के कुल आठ मामलों में कुल 1,20,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

6 कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क



डिस्क प्राप्त करने वाले कार्मिक महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र जोगिंदर सिंह एवं उप महानिरीक्षक ए.ए. सिद्दीकी के साथ

उत्तरी क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक श्री जोगिन्दर सिंह ने 10 अगस्त, 93 को सादे परन्तु प्रभावशाली समारोह में बल के 6 कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की। प्रशंसा डिस्क पाने वाले अधिकारी हैं-उत्तरी क्षेत्र के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री सुखचरन सिंह, डा. एन.सी. मेहन्ती, डा. आर.के. प्रधान, बेस अस्पताल-I, फारमिस्ट शशीधर प्रसाद, बेस अस्पताल-I, नायक रमेश चन्द्र, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली, तथा नायक डी. बेबी, डैट अस्पताल।

माह जुलाई, 1993 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह, जुलाई, 93 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता

हैं।

कांस्टेबल कारपेंटर महेश जोशी (20 बटा.), कांस्टेबल ध्यान चंद (100 .आर.ए.एफ.), नायक/ड्राइवर एस.सी. शर्मा (82 बटा.), नायक रोशन लाल (68 बटा.), कांस्टेबल प्रेमा यादव (14 बटा.), नायक/रेडियो आपरेटर अश्वनि कुमार (1 सिगनल), चपरासी अरुण कुमार (ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट), नायक टी. धननजैया (8 बटा.), उपनिरीक्षक (एम) आर. मनोहर (117 बटा.), हैड. कांस्टेबल विजयपाल सिंह (82 बटा.) उप निरीक्षक सुखदेव सिंह (41 बटा.), कांस्टेबल सुखविंदर सिंह (76 बटा.), हैड कांस्टेबल बी.एस. राम (12 बटा.), कांस्टेबल पी.डी. भाई (12 बटा.), हैड कांस्टेबल बनवारी लाल (106 बटा.) ला.ना. एल.टी. सांगा (14 बटा.), हैड कांस्टेबल रघुवर दयाल (61 बटा.), हैड कांस्टेबल जे.ए. बेलगाम (6 बटा.), फार्मसिस्ट जाय मैथ्यू (3 बटा.), इंस्पेक्टर सुल्तान सिंह (127 बटा.), कांस्टेबल गुरदेव सिंह (74 बटा.), कांस्टेबल जयराम प्रजापति (ग्रुप केन्द्र दीमापुर), कांस्टेबल एस.के. नायर (ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम), कांस्टेबल कविंदर सिंह (1 बटा.), कांस्टेबल शैलेंद्रपाल (118 बटा.) तथा कमान्डेन्ट एल.एन. वैष्णव (उप महानिरीक्षक कार्यालय, नागपुर)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार 1 बटालियन के लांस नायक प्रभु सिंह की भी अप्रैल, 93 में मृत्यु हुई।

नागपुर में वन महोत्सव

ग्रुप केन्द्र नागपुर में 9 जुलाई से मनाए जा रहे वन महोत्सव का उद्घाटन अपर पुलिस उप महानिरीक्षक पी.सी. जोशी ने किया। इस मौके पर एक पौधा लगाने के बाद उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्होंने पर्यावरण संतुलन में वृक्षों की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डाला।

सद्भावना दिवस पर के.रि.पु. बल कर्मचारियों द्वारा शपथ

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी के जन्म दिवस के अवसर पर 20 अगस्त, 93 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की सभी यूनिटों में सद्भावना दिवस मनाया गया। इस मौके पर बल के सभी सदस्यों ने देश की भावानात्मक एकता और सद्भावना को बनाए रखने के लिए सतत कार्य करते रहने की प्रतिज्ञा ली।

नई दिल्ली स्थित बल के महानिदेशालय के कार्मिकों को बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने शपथ दिलायी। इस मौके पर बल के सदस्यों ने शपथ ली कि वे जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा का भेदभाव किए बिना भावात्मक एकता और सद्भावना के लिए कार्य करते रहेंगे। उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि वे सभी प्रकार के मतभेद चाहे वे व्यक्तिगत हों या सामूहिक हिंसा का सहारा लिए बिना बातचीत और संवैधानिक माध्यमों से तय करेंगे।



मार्केट आबू में सीधे नियुक्त राजपथित अधिकारियों की दीक्षांत परेड की सलामी लेते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक कें० रि० पु० बल, ब्लाक- I सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

सी० आर० पो० एफ० समाचार

खंड-6 अंक-6, 30 सितंबर 93 8 अश्विन, शक 1915



उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल बोरा के रि.पु. बल के उप निदेशक (खेल एवं प्रशिक्षण) श्री एन.के. तिवारी को पलिस तैराकी प्रतियोगिताओं की चैंपियनशिप ट्रफी प्रदान करते हुए

—एन.के. तिवारी

सम्पादकीय

यह समय निस्संदेह अपने तैराकों पर गर्व करने का है, क्योंकि इस वर्ष अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में हमने एक बार फिर वह कर दिखाया जो लगातार पिछले 14 वर्षों से कर रहे थे-अखिल भारतीय तैराकी प्रतियोगिता में शीर्ष स्थान पर आना। लखनऊ का के.डी. बाबू सिंह स्टेडियम तरणताल हमारे लिए शुभ रहा, जहां हमारे तैराकों ने उससे कहीं ज्यादा अंतराल के साथ फिर शीर्ष स्थान हासिल किया, जिससे वे पिछले साल पिछड़ गए थे।

प्रतियोगिता में हमारे सभी तैराकों का प्रदर्शन जोरदार रहा, मगर बल के उभरते तैराक राजा राम के प्रदर्शन ने दर्शकों को हैरत में डाल दिया। राजा राम ने तीन नए कीर्तिमान बनाए और प्रत्येक मुकाबले में शानदार प्रदर्शन किया। दर्शकों की निगाहें राजाराम में भविष्य का खजाना सिंह खोजने लगीं। कोई संदेह नहीं कि राजाराम भविष्य में हम सब की अपेक्षाओं पर खरा उतरता हुआ, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाए।

नए खिलाड़ियों को ढूंढना, उन्हें प्रशिक्षण देना, और फिर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करना, के.रि.पु. बल की पुरानी परंपरा रही है। राजाराम इसी परंपरा की ताजा मिसाल है।

खेल के क्षेत्र में ही नहीं, हर उस क्षेत्र में हम, हमारे कार्मिक सदैव अग्रणी रहते हैं, जहां कहीं हमारे सम्मान, देश प्रेम और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न हो। सितम्बर माह राष्ट्रभाषा हिन्दी का महीना है। इस महीने सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों में हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताहों को पूरे जोश खरोश के साथ मनाया जाता है। हिन्दी और गैर हिन्दी भाषी कार्मिकों के लिए इस मौके पर कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। वास्तव में इस अवसर पर हम आकलन करते हैं, अपनी वर्ष भर की उन गतिविधियों का, उन कार्य कलापों का, जो हमने वर्ष भर में हिन्दी में किए हैं। हमें यह कहने में गर्व है किये आकलन हमें बताते हैं कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया है। आइए इस मौके पर हम हिन्दी को अपने कार्यों में प्राथमिकता देने का फिर प्रण लें, क्योंकि हिन्दी को प्रोत्साहन देने की बात तो खूब जोर शोर से की जाती है पर उसे अपने कार्यों में प्राथमिकता देने की बात कोई नहीं करता, जिसकी आवश्यकता है।

31/10/2000

(अ. ना. शर्मा)

आर.ए.एफ. अधिकारियों हेतु सेंसटीविटी कोर्स



अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी से श्रेष्ठता प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए इंस्पेक्टर कल्याण सिंह रेपिड एक्शन फोर्स के अधीनस्थ अधिकारियों के सेंसटीविटी कोर्स के द्वितीय बैच के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने आह्वान किया कि वे विपरीत स्थितियों में अपनी आधारभूत प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखें। वह 21 सितम्बर, 93 को नई दिल्ली स्थित आर.ए.एफ. मुख्यालय में सम्पन्न हुए इस कोर्स के समापन समारोह के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आर.ए.एफ. के अधिकारियों को अपनी इन प्रवृत्तियों पर काबू पाने का पर्याप्त प्रशिक्षण दिया गया है।

इस कोर्स के दौरान आर.ए.एफ. के अधीनस्थ अधिकारियों को भारतीय सांवेधान, सामाजिक संगठन तथा उसकी वास्तविकताएं, आज के समाज में साम्प्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता-भारतीय समाज की आवश्यकता तथा कोर्स में भाग ले रहे प्रशिक्षार्थियों के अन्दर जागरूकता पैदा करने वाले अन्य कई विषयों पर भाषण दिये गये। संचार माध्यम तथा पुलिस सहयोग तथा प्रभावी नेतृत्व और निर्णय लेने संबंधी दक्षता से जुड़े विषयों पर भी प्रशिक्षार्थियों को जानकारी दी गई।

इस कोर्स में शामिल सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। प्रशिक्षण के दौरान 103 बटालियन के इन्सपेक्टर कल्याण सिंह प्रथम रहे जबकि 108 बटालियन के राजगोपाल सिंह द्वितीय स्थान पर रहे।

अपने समापन भाषण से पूर्व अपर महानिदेशक महोदय ने 5 से 14 वर्ष के बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स की प्रदर्शनी को भी देखा। सद्भावना दिवस के सन्देश को दर्शाते इन चित्रों को आर.ए.एफ. कार्मिकों के बच्चों ने बनाया था। आय के आधार पर इन चित्रों को चार श्रेणियों में बांटा गया तथा प्रत्येक श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ चित्र को पुरस्कार भी दिया गया।

इसके अतिरिक्त आर.ए.एफ. ने साम्प्रदायिक सद्भाव पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया था। इस मौके पर इस प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कार दिये गये। साम्प्रदायिक सद्भाव पर ही आयोजित की गई भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों की कम्बोडिया से वापसी

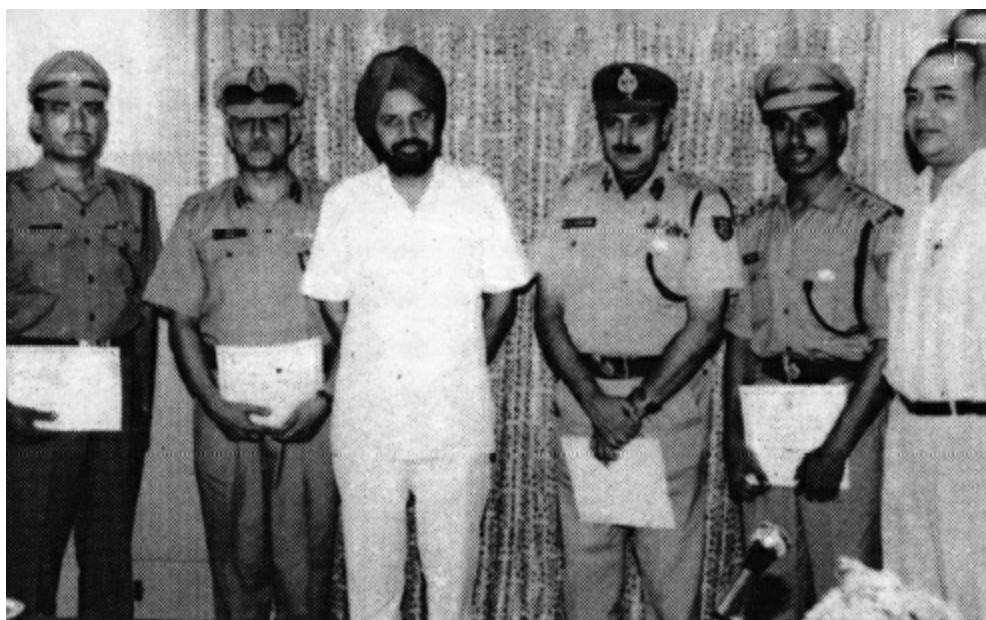


महानिदेशक महोदय को कम्बोडिया से लाए स्मृति चिह्न को भेंट करते हुए बल के कार्मिक कम्बोडिया में संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति सेना (यू.एन.टी.सी.) में शामिल केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 97 कार्मिक कम्बोडिया में लगभग एक वर्ष की अपनी कार्य

अर्वाधे बिता कर लौट आए हैं। इन सदस्यों के एक प्रातिनोधि मंडल ने के.रि.पु. बल महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह से भेंट कर उन्हें अपने कार्य का ब्यौरा देने के अतिरिक्त कम्बोडिया से लाए गए स्मृति चिह्न को भी भेंट किया। महानिदेशक महोदय ने कम्बोडिया में उनके द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा की।

के.रि.पु. बल कार्मिकों को कम्बोडिया में रेलों की सुरक्षा के अतिरिक्त कम्बोडिया पुलिस को सहायता प्रदान करने का कार्य सौंपा गया था। इस कार्य के लिए उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में तैनात किया गया। इस दौरान उन्होंने न केवल कई क्षेत्रों से घायलों एवं बीमारों को निकाल कर सुरक्षित क्षेत्रों में पहुंचाया अपितु उन्हें सुश्रुषा भी प्रदान की। देश के आंतरिक इलाकों में अपने कार्य के दौरान उन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल कर अपने कर्तव्य को अंजाम दिया। बाद में कम्बोडिया में भारतीय पुलिस दल के कमाण्डर डब्ल्यू.एस. ऐली भी 20 सितम्बर, 93 को महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह तथा महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) जी.पी. दूबे से मिले तथा उन्हें कम्बोडिया गये पुलिस दल की ओर से एक स्मृति चिह्न भेंट किया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के चार कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क



उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री जोगिंदर सिंह के साथ सम्मानित अधिकारी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के चार अधिकारियों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई है। इन कार्मिकों को यह सम्मान बल के उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री जोगिन्दर सिंह ने 1 सितम्बर, 93 को रविन्द्र रंगशाला नई दिल्ली स्थित 33 बटालियन स्थल पर आयोजित एक समारोह में प्रदान किए। ये सम्मान प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं:- 32 बटालियन के कमान्डेन्ट डी.के. खुराना, 76 बटालियन के कमान्डेन्ट जे.एस. बिष्ट, 76 बटालियन के उप कमान्डेन्ट ओ.पी. यादव तथा एस.पी.जी. के सहायक

कमान्डेन्ट आर.आर. दत्ता।

ज्ञातव्य है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का यह अपना सबसे बड़ा सम्मान है। इसका प्रारम्भ 1987 में किया गया था। तथा अपने अपने क्षेत्रों में विशेष योगदान देने वाले कार्मिकों को यह सम्मान दिया जाता है। इसकी घोषणा वार्षिक रूप से की जाती है। इस सम्मान की स्थापना के पीछे साहसी, ईमानदार, कर्तव्यपरायण तथा नई-नई दिशाओं में पहल करने वाले कार्मिकों को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य था। इस सम्मान के लिए कार्मिकों को चुनते समय यह देखा जाता है कि उन्होंने परिचालन के क्षेत्र में, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, खेल के क्षेत्र में या फिर प्रशासनिक कामकाज में कोई ऐसी उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की हो, जिससे कि बल की दक्षता एवं गरिमा बढ़ी हो।

हिंदी दिवस समारोह



विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान हासिल करने वाले कार्मिकों के साथ महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने 14 सितम्बर 93, को महानिदेशालय में आयोजित एक भव्य समारोह में विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किए। हिन्दी कार्यशाला प्रतियोगिता में जन संपर्क शाखा की सहायक उप निरीक्षक प्रतिभा चड्ढा को प्रथम पुरस्कार दिया गया जबकि अमरनाथ कुशवाहा तथा सतीश कुमार को क्रमशः दूसरा तथा तीसरा पुरस्कार दिया गया। हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता का प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः राम व्यास राय, ईश्वर सिंह तथा दिनेश चंद्र शर्मा को दिया गया। हिन्दी नोटिंग ड्राफ्टिंग के लिए ये पुरस्कार क्रमशः अनूप सिंह, रामनिवास वर्मा तथा पी.पी. सुनील

को दिए गए तथा हिन्दी टाइपिंग प्रातियोगिता में सी.के. बिष्ट, बाघदमन सिंह तथा हुकम सिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

इन प्रतियोगिताओं का आयोजन 8 अगस्त से किया गया था। इस मौके पर गृह मंत्रालय की राजभाषा सलाहकार समिति के सदस्य श्री आर.एस. गुप्ता भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस मौके पर बोलते हुए महानिदेशक महोदय ने कहा कि हिन्दी को अनुवाद की भाषा न बनाया जाए। यह एक सरल तथा सशक्त भाषा है तथा इसमें अपार क्षमता सन्निहित है, जिसे उभारने की योग्यता हमें अपने आप में ढूँढनी तथा विकसित करनी चाहिए। अतः हिन्दी में मूल रूप से कार्य करने का वातावरण बनाएं। यह अपने आप में एक उपलब्धि तथा देश भक्ति भरा कार्य होगा।

ज्ञातव्य है कि इस वर्ष केंद्रीय कार्यालयों में हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रयोग के लिए के.रि.पु. बल गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की जा चुकी है।

विश्वकर्मा दिवस



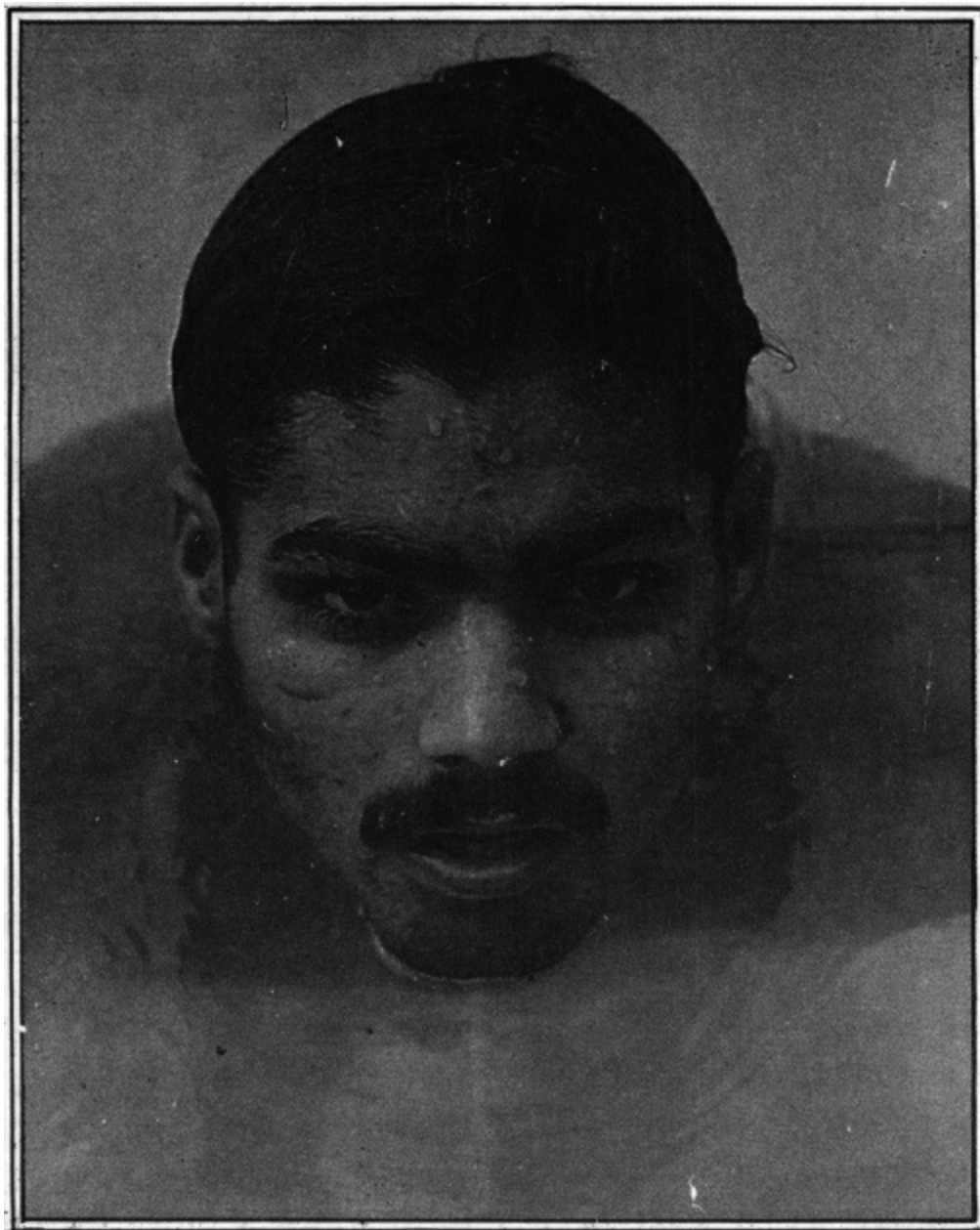
विश्वकर्मा दिवस के अवसर पर वाहनों की पूजा करते हुए उपनिदेशक (प्रशासन) श्री बी. चक्रवर्ती देश व्यापी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की यूनिटों के तकनीकी कार्मिकों ने 17 सितम्बर, 93 को हर्षोल्लास तथा पूर्ण भक्ति भाव के साथ विश्वकर्मा दिवस मनाया। इस मौके पर इन कार्मिकों ने अपने-अपने औजारों तथा मशीनों की पूजा की। महानिदेशालय के कार्मिकों ने आर.के. पुरम स्थित वर्कशाप में एक समारोह आयोजित कर विश्वकर्मा की सामूहिक आराधना की।

इस मौके पर बल के कामेकों ने अपने-अपने वाहनों, मशीनों तथा औजारों के सुचारू तथा सावधानीपूर्वक प्रयोग के लिए विश्वकर्मा के ही अनुरूप विशेषता हासिल करने के प्रयास जारी रखने की शपथ ली।

42वीं अखिल भारतीय तैराकी प्रतियोगिताएं

के.रि.पु. बल फिर सिरमौर

लेख-ए. एन. शर्मा छया-एस.के. खन्ना



तैराकी प्रतियोगिताओं का सितारा के.रि.पु. बल का उदीयीमान तैराक राजाराम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने मात्र एक साल के अंतराल के बाद अखिल भारतीय पुलिस तैराकी एवं क्रास कंटी प्रतियोगिताओं का सिरमौर होने का खिताब फिर जीत लिया। 42 वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी तथा क्रास कंटी प्रतियोगिता की यह चैंपियनशिप उसने अपने प्रबल प्रतिद्वंदी सीमा सुरक्षा बल के 207 अंकों के बदले 256 अंक प्राप्त कर जीती। केरल पुलिस 50 अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रही। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन उत्तर प्रदेश पुलिस के तत्वाधान में 29 अगस्त, 1993 से लखनऊ के के.डी. सिंह बाबू स्टेडियम पूल में किया गया।

प्रतियोगिता के समापन के अवसर पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोती लाल

वोरा मुख्य आंतोथे के रूप में उपास्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितारेत किए तथा खिलाड़ियों के मार्च पास्ट की सलामी भी ली।

प्रतियोगिता का उद्घाटन 25 अगस्त, 93 को उत्तर प्रदेश पुलिस के महानिदेशक श्री वी.के. कपूर ने किया। के.रि.पु. बल के तैराक प्रतियोगिता के प्रारंभ से ही छाये रहे। के.रि.पु. बल के उदीयीमान तैराक राजाराम पूरी प्रतियोगिता के दौरान सबके आकर्षण का केन्द्र बने रहे। उन्होंने पहले ही दिन 100 मीटर तथा 200 मीटर बैक स्ट्रोक में प्रतियोगिता के नए रिकार्ड बनाए।

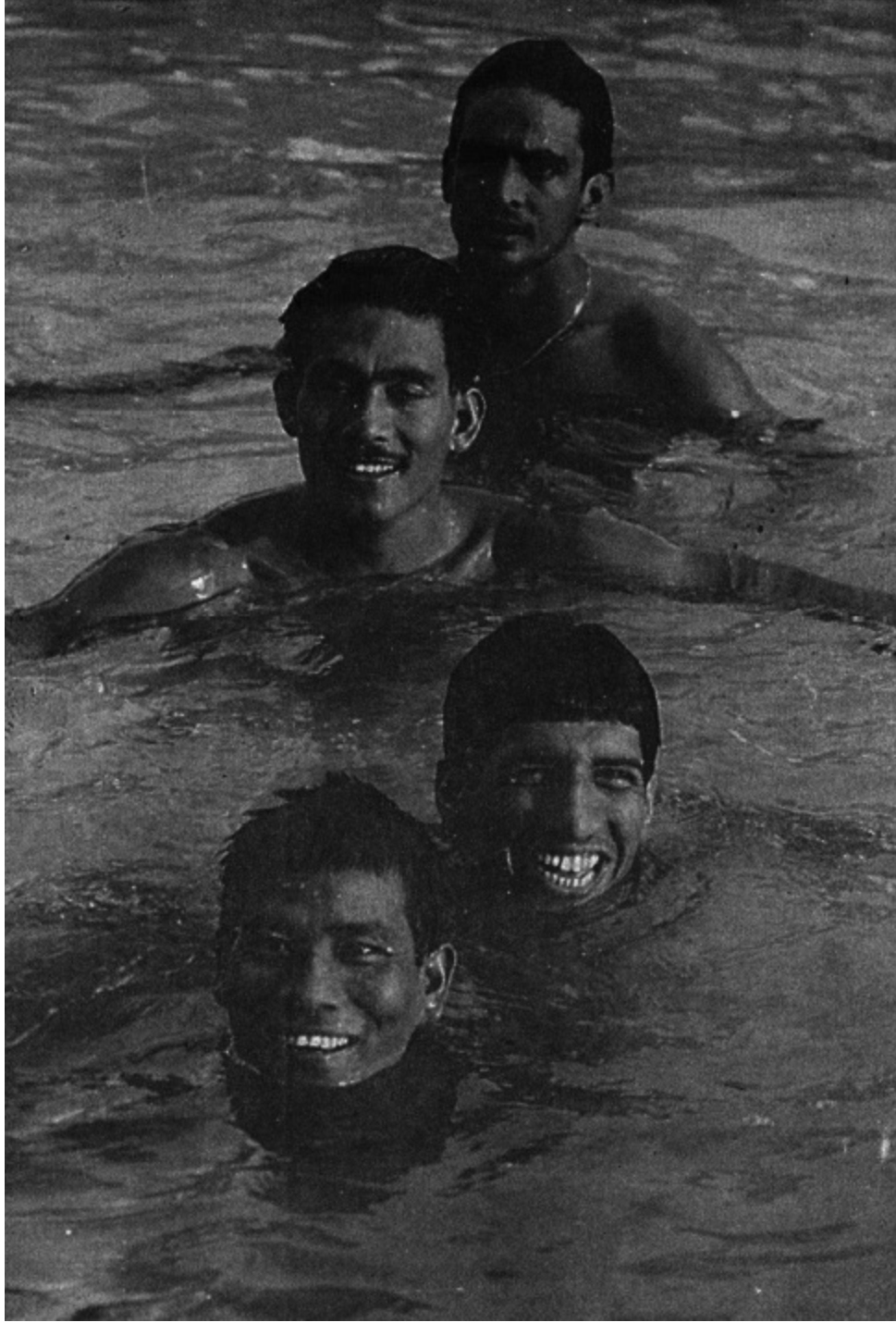
अजीत सांगवान प्रतियोगिता के तीव्रतम तैराक रहे। बल के इस तैराक ने अच्छी शुरूआत का प्रदर्शन करते हुए 50 मीटर फ्री स्टाइल प्रतियोगिता 25.97 सेकण्ड में जीती। खजान सिंह दूसरे स्थान पर रहे। जबकि केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के तैराक संतोष कुमार को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। सीमा सुरक्षा बल के राजीव नागपाल ने पांच स्वर्ण पदक जीतकर व्यक्तिगत चैंपियनशिप जीत ली।

गत वर्ष सीमा सुरक्षा बल ने अपने इसी प्रतिभावान तैराक राजीव नागपाल के बल पर केरिपुबल की कड़ी प्रतिस्पर्धा के मुकाबले बहुत कम अंतर से इन प्रतियोगिताओं की चैंपियनशिप जीत ली थी, तब दोनों टीमों के फाइनल अंकों के बीच का अंतर केवल चार था। लेकिन लखनऊ में के.डी. सिंह बाबू स्टेडियम पूल में केरिपुबल के तैराकों ने एक बार फिर से अपनी उस प्रतिभा का प्रदर्शन कर-जिसके चलते केरिपुबल लगातार 14 सालों तक पुलिस तैराकी का सिरमौर रहा है-अपनी श्रेष्ठता को स्थापित कर दिया।

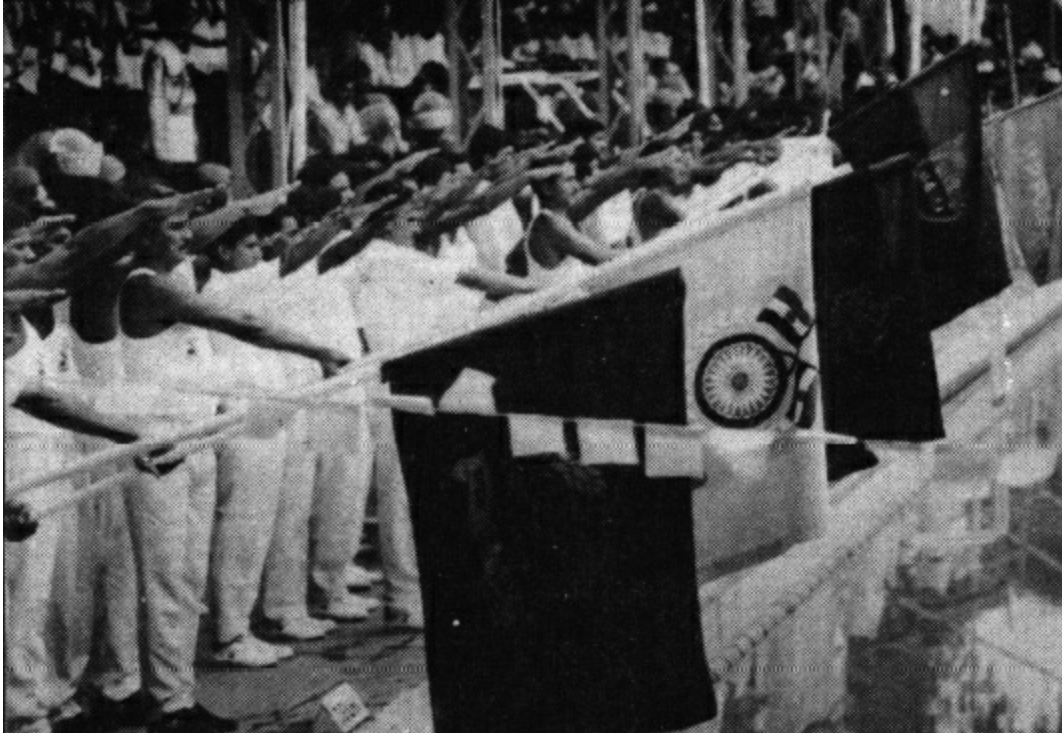


प्रतियोगिताओं के समापन पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा के साथ बल के महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह

प्रतियोगिता के समापन से एक दिन पहले जहां दोनों टीमों के स्कोर में केवल 22 अंकों का अंतर था वहीं प्रतियोगिता के समापन वाले दिन केरिपुबल के तैराकों ने अपने शानदार प्रदर्शन से इस अंतर को 49 के अंक तक खींच दिया। 4x100 मीटर मैडले प्रतियोगिता का अंतिम मुकाबला था, जिससे केरिपुबल के प्रबल प्रतिद्वन्दी सीमा सुरक्षा बल को कुछ उम्मीद थी किन्तु बल के तैराक राजाराम जोकि बैकस्टोक मुकाबलों में पहले ही दो नये रिकार्ड कायम कर चुके थे, ने अच्छी शुरूआत देकर उसकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। रही सही कसर सितारे तैराक खजान सिंह ने पूरी कर दी जबकि प्रतियोगिता के अंतिम चरण में सीमा सुरक्षा बल के राजीव नांगपाल ने बल के प्रेमजीत सिंह को पकड़ने की भरपूर कोशिश की मगर उनका यह प्रयास सफल न हो सका। इस प्रतियोगिता में बल के तैराकों ने 4:19:47 सेकण्ड का समय लेकर अपने सात साल पुराने रिकार्ड को खुद ही तोड़ दिया। प्रतियोगिता में सीमा सुरक्षा बल को दूसरा तथा केरल पुलिस को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।



100 x 4 प्रतियोगिता की विजेता बल की टीम



प्रतियोगिता में खेल भावना से भाग लेने की शपथ लेते तैराक

खजान सिंह ने प्रतियोगिता में पहला स्वर्ण 100 मीटर बटर फ्लाई में जीता। क्रास कंटी प्रतियोगिता में के.रि.पु. बल को चौथा स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता के उन मुक़ाबलों के परिणाम इस प्रकार रहें जिनमें बल के तैराकों को कोई स्थान प्राप्त हुआ:-

50 मीटर फ्री स्टाइल

- अजीत सांगवान (प्रथम) तथा खजान सिंह (द्वितीय)
- 100 मीटर फ्री स्टाइल-इन्सपेक्टर प्रेमजीत सिंह (द्वितीय)
- 200 मीटर फ्री स्टाइल-इन्सपेक्टर प्रेम सिंह (द्वितीय), इन्सपेक्टर रंजीत सिंह (चौथा स्थान)
- 400 मीटर फ्री स्टाइल-इन्सपेक्टर प्रेमजीत सिंह (द्वितीय), इन्सपेक्टर रंजीत सिंह (तृतीय)
- 1500 मीटर फ्री स्टाइल-इन्सपेक्टर प्रेमजीत सिंह (द्वितीय), इन्सपेक्टर रंजीत सिंह (तृतीय)
- 100 मीटर बैक स्टोक-सब-इन्सपेक्टर राजाराम (प्रथम नया रिकार्ड), इन्सपेक्टर अजीत सांगवान (तृतीय)
- 200 मीटर बैकस्टोक-सब-इन्सपेक्टर राजाराम (प्रथम-नया रिकार्ड), इन्सपेक्टर अजीत सांगवान (तृतीय)

100 मीटर बेस्ट स्टोक-सहायक कमान्डेन्ट एस. राधाकृष्णन (प्रथम), सब इन्सपेक्टर रविन्द्रो सिंह (चौथा स्थान)

200 मीटर बेस्ट स्टोक-सहायक कमान्डेन्ट एस. राधाकृष्णन (प्रथम), सब-इन्सपेक्टर रविन्द्रो सिंह (चौथा स्थान)

100 मीटर बटर फ्लाई-सहायक कमान्डेन्ट खजान सिंह (प्रथम), सब-इन्सपेक्टर राजाराम (तृतीय)

200 मीटर बटर फ्लाई-सब-इन्सपेक्टर राजाराम (प्रथम), सब-इन्सपेक्टर प्रदीप राणा (तृतीय)

200 मीटर व्यक्तिगत मैडले-सब-इन्सपेक्टर राजाराम (प्रथम), सहायक कमान्डेन्ट खजान सिंह (तृतीय)

400 मीटर व्यक्तिगत मैडले-सब-इन्सपेक्टर राजाराम (प्रथम-नया रिकार्ड) इन्सपेक्टर प्रेमजीत सिंह (तृतीय)

4x100 मीटर फ्री स्टाइल रिले केरिपुबल प्रथम

4x200 मीटर फ्री स्टाइल रिले-केरिपुबल प्रथम

4x400 मीटर मैडले-केरिपुबल प्रथम-नया रिकार्ड

डाइविंग-कान्स्टेबल टी. शीजू (सातवां स्थान), कान्स्टेबल एन. परचोस (11 वां स्थान)

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह अगस्त, 93 में मृत्यु के 18 मामलों में कुल 6,30,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए, इनमें प्रत्येक मामला 10,000 रुपए की केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ.की राशि भी शामिल है। इसी प्रकार अक्षमता के एक मामले में कुल 15,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

जवानों के लिए स्थापित की गई एक स्पेशल जोखिम निधि योजना “बी” के तहत अगस्त, 93 तक मृत्यु के कुल 47 मामलों में 11,85,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इस योजना के तहत 820 रुपए देकर बल का कोई भी जवान इस योजना का सदस्य बन सकता है। अपने सेवाकाल के दौरान यदि इस योजना के सदस्य की मृत्यु हो जाती है, तो उसे इस योजना से 25,000 रुपए दिए जाते हैं, इस राशि को भी अब 25,000 रुपए से बढ़ाकर 30,000 कर दिया गया है।

बाढ़ पीड़ितों को अनुदान

पंजाब स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 29,43 तथा 105 आर.ए.एफ. बटालियन के सदस्यों ने पंजाब में पिछले दिनों आयी भयंकर बाढ़ एवं तबाही से प्रभावित हुए नागरिकों की सहायतार्थ अपना अपना एक एक दिन का वेतन पंजाब के

मुख्यमंत्रों के राहत कोष में दान कर दिया। इन तीनों बटालियनों के सदस्यों ने कुल 98,687 रुपए एकत्र कर राहत कोष में भेंट किए। जिनमें से 43 बटालियन द्वारा 52,687 रुपए, 29 बटालियन द्वारा 25,075 रुपए तथा 105 बटालियन द्वारा 21,000 रुपए के चेक अलग अलग मौकों पर पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह को भेंट किये गये।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के इस मानवतावादी कार्य की पंजाब के मुख्यमंत्री तथा नागरिकों ने भरपूर प्रशंसा की है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 28 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अगस्त, 93 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 28 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई मुठभेड़ों में 13 आतंकवादी मारे गए। मारे गए आतंकवादियों में “ए” श्रेणी का खुखार आतंकवादी दीदार सिंह भी शामिल है। इन मुठभेड़ों में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुयी मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 19 घातक हथियार तथा भारी संख्या में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में एक ए.के. 56 राइफल, एक एम.के. पांच स्टेनगन, तीन 12 बोर की राइफ्लें, तीन रिवाल्वर, छः पिस्तौल, एक स्टेनगन तथा पांच 12 बोर की गन शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के छः जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 23 गंभीर रूप से घायल हुए।

104 बटालियन द्वारा वृक्षारोपण

अलीगढ़ स्थित रेपिड एक्शन फोर्स की 104 बटालियन स्थल पर 13 अगस्त, 93 को व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के सलाहकार श्री बी.के. गोस्वामी ने 104 बटालियन के 10 हेक्टेयर बंजर पड़े क्षेत्र में एक पौधा लगाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर 104 बटालियन के जवानों ने लगभग 10,000 तथा स्थानीय स्कूलों के बच्चों ने 5,000 फल एवं छायादार वृक्ष लगाए। इस मौके पर बोलते हुए गोस्वामी ने कमान्डेन्ट जेड.एफ. खान का एक इस बात के लिए आभार व्यक्त किया कि उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक अच्छा माहौल बनाया है। कमान्डेन्ट खान ने इस मौके पर मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए इस योजना पर विस्तार से प्रकाश डाला।

आश्रिता को अनुदान



स्व. कांस्टेबल अब्दुल मजीद की पत्नी को अनुदान राशि का चेक भेंट करते महानिरीक्षक श्री एस.सी. चौबे लखनऊ में आयोजित एक सादे एवं भावभीने समारोह में 20 जुलाई, 93 को 67 बटालियन के कांस्टेबल अब्दुल मजीद की पत्नी को केन्द्रीय सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एस.सी. चौबे ने 1,37,000 की अनुदान राशि का चेक भेंट किया। कांस्टेबल अब्दुल मजीद जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों का सामना करते हुए शहीद हो गए थे।

11 जून, 91 को कांस्टेबल अब्दुल मजीद श्री नगर के जनाकदल क्षेत्र में अपना पार्टी के साथ पेट्रोल ड्यूटी पर तैनात थे कि उनकी पार्टी पर आतंकवादियों ने आधुनिक हथियारों से फायर करना शुरू कर दिया। अब्दुल मजीद अपनी जान की परवाह न करते हुए आतंकवादियों पर लगातार फायर करते रहे जिससे आतंकवादियों को पीछे हटना पड़ा तथा पीछे हटते हुए आतंकवादी एक संकरी गली से जान बचाकर भाग गये। किन्तु अब्दुल मजीद इस कार्रवाई में छाती, नाक तथा पेट के निचले हिस्से में कई गोलियाँ लगने से बुरी तरह घायल हो गए तथा अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई। अब्दुल मजीद की अदम्य वीरता, साहस तथा कर्तव्यपरायणता के लिए जम्मू कश्मीर सरकार ने उनकी आश्रिता श्रीमति शहजान बेगम को यह 1,25,000 की राशि 12,000 रुपये के ब्याज सहित अनुदान स्वरूप भेंट की है।

ग्रुप केन्द्र बनतलाब का 25 वां स्थापना दिवस

ग्रुप केन्द्र बनतलाब में 1 सितम्बर, 93 को ग्रुप केन्द्र के 25 वर्ष पूरे होने पर एक शानदार समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर एक मेलों का आयोजन

किया गया, जिसमें ग्रुप केन्द्र बनतलाब स्थित के.रि.पु.बल की प्रत्येक यूनिट ने अपना स्टाल लगाया। मेले का उद्घाटन अपर उप महानिरीक्षक एम.एस. बोपाराय ने किया। मेले में 52 बटालियन, ग्रुप केन्द्र, 92 बटालियन, परिवार कल्याण केन्द्र तथा केन्द्रीय विद्यालय के स्टाल विशेष आकर्षण के केन्द्र थे। इस मेले में बल की यूनिटों के सदस्यों ने रंगारंग कार्यक्रम भी पेश किया।

50 बटालियन को ट्राफी



50वीं बटालियन को विजेता ट्राफी प्रदान करते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 50 बटालियन ने 2 सितम्बर, 93 को नई दिल्ली में हुए बल की दिल्ली स्थित बटालियनों के फुटबाल मुकाबले में 32 बटालियन को 2 के मुकाबले 0 से हरा कर प्रतियोगिता की ट्राफी जीत ली। विजेता टीम ने दोनों गोल मध्यांतर के बाद दागे। पहला गोल कांस्टेबल सी.एच. किपगन तथा दूसरी गोल कांस्टेबल लक्ष्मण मुरमुर ने दागा।

यह सात दिवसीय प्रतियोगिता 27 अगस्त, 93 को प्रारम्भ हुयी थी तथा इस का समापन बल की कालकाजी स्थित 50वीं बटालियन स्थल पर हुआ। दिल्ली स्थित बल 16 बटालियनों की टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने 50 बटालियन को विजेता ट्राफी तथा 32 बटालियन को दूसरा पुरस्कार प्रदान किया।

इस मौके पर के.रि.पु. बल के अधिकारी व जवान भारी संख्या में उपस्थित थे।

25 अस्थायी बटालियनों का गठन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल । अक्टूबर, 93 से 31 दिसम्बर, 93 तक के तीन महीनों के लिए 25 अस्थायी बटालियनों को गठन कर रहा है। इन बटालियनों का गठन आगामी विधान सभा चुनावों के दौरान कानून व व्यवस्था बनाए रखने की दृष्टि से किया जा रहा है।

इन बटालियनों के लिए देश भर में फैले विभिन्न केन्द्रों में 12,000 कांस्टेबलों, 1625 फोलोअरस तथा 125 तकनीकी व्यक्तियों की भर्ती 2 से 7 अक्टूबर, 93 तक की जाएगी।

बाढ़ पीड़ितों हेतु अनुदान

पंजाब स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 98 बटालियन के सदस्यों ने पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए 33,917 रुपए एकत्र किए। बल के जवानों द्वारा स्वेच्छा से एकत्र की गई इस धन राशि के चैक को बटालियन के कमान्डेन्ट श्री विनोद सेठ ने 8 सितम्बर, 93 को पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह को भेंट किया।

ज्ञातव्य है कि जुलाई माह में पंजाब में आयी भयंकर बाढ़ से हुयी तबाही के बाद के पुनर्वास कार्यों के लिए पंजाब स्थित बल की अन्य युनिटों के सदस्यों ने भी इसी प्रकार धन एकत्र कर मुख्यमंत्री राहत कोष में सहायता दी है।

हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 1 अप्रैल, 92 से 31 मार्च, 93 तक हिन्दी डिक्टेसन प्रतियोगिता आयोजित की गई, इस प्रतियोगिता में 24 बटालियन के कमान्डेन्ट श्री एस.आर. साहनी प्रथम रहे, उन्हें 500 रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर के अपर उप महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद, नीमच रेंज के कमान्डेन्ट (स्टाफ) के.के. मेहता, 78 बटालियन के कमान्डेन्ट धूम सिंह तथा 121 बटा. के उप कमान्डेन्ट एस.एस. तोमर को भी 300-300 रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

माह अगस्त, 93 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिकों की माह अगस्त '93 में मृत्यु हुयी। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतुष्ट परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक धनवीर सिंह (121 बटा.), धोबी जी. बालास्वामी (90 बटा.), कां./माली अजीत कुमार (ग्रु.के. बनतलाब), कां टी.बी. कुकी (6 बटा.), है.कां.जे.पी. टोपनो (46 बटा.) कां. बी.एस. सोलंकी (96 बटा.), नायक रघुवीर सिंह (96 बटा.), सफाई कर्मचारी राजेश कुमार (7 बटा.), कां. वी. प्रतिभान (3 बटा.), सफाई कर्मचारी विजय पाल बाल्मीकि (27 बटा.), कां.श्याम सुंदर (113 बटा.), स.उ.नि. (रे.आ.) नवरंग सिंह (4 सिग.), कां. सल्लाम इबुवाहमा (11 बटा.), कां. रामनंद यादव (70 बटा.), नायक

एन. तिरके (10 बटा.), नायक एस.एल.वैरल (25 बटा.), रंगरूट पाटेल दोद्दा गोवड़ा (128 बटा.), इंस्पेक्टर (एम) एम.यू. खान (33 बटा.), है. कां. चारी राम (119 बटा.), कां. डी. शंकर (119 बटा.) नायक एच. चक्रवर्ती (72 बटा.) कां. ज्वानम जाय (44 बटा.), ला.ना. शमशाद खान (112 बटा.), कां./ड्रा. बलजिंदर सिंह (71 बटा.) तथा कां. हरिदासन नायर (84 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह जून, 1993 में कां. मुश्ताक अहमद (97 बटा.), है.कां. किशोरी लाल (97 बटा.), लांस नायक बलवंत सिंह (36 बटा.) व स.उ.नि. (एम) बशिद अहमद (74 बटा.) तथा माह जुलाई, 93 में कां. कविंदर सिंह (1 बटा.) और वाटर कैरियर राजेंद्र प्रसाद (97 बटा.) की भी मृत्यु हुयी।

128 बटालियन की दीक्षांत परेड

भारत की एकता और अखंडता की रक्षार्थ सी.आर.पी.एफ. के जवानों व अधिकारियों ने अनेक कुर्बानियां दी हैं। पंजाब में एक लम्बे संतोष के बाद आज जो शांति का माहौल नजर आ रहा है इसकी प्राप्ति के लिए सी.आर.पी.एफ. ने अपना बहुमूल्य और अहम् योगदान दिया है, ये शब्द 20 अगस्त, 1993 को सरायखास पंजाब में के.रि.पु. बल की 128 बटालियन स्थल पर पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ने कहे।

श्री गिल सरायखास में सी.आर.पी.एफ. की 128 वीं बटालियन की पासिंग आऊट परेड के समय सलामी लेने के उपरांत जवानों व अधिकारियों को सम्बोधित कर रहे थे।

परेड के निरीक्षण के बाद इस नई बटालियन के नौजवानों ने देश व ड्यूटी के प्रति शपथ ली। इस सारे प्रशिक्षण के दौरान प्रथम आने वाली कम्पनी “एफ” के कमांडर को श्री गिल ने अवार्ड देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर जवानों ने लेजीयम भी प्रस्तुत किया, जूडो-कराटे के दांव पेंच भी दिखाए गए और अन्त में पी.टी. का एक आकर्षक शो भी किया गया। सी.आर.पी.एफ. के डी.आई.जी. श्री एस.एस. विर्क ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

फुरसत में

सुनो हिन्द के वासी

हे सिन्धु हिमालय हिन्द तुम्हीं,
हिन्दी के सृजन हारे हो।
हे भारतवंश के भारतीय तुम,
हिन्दी बोलने वाले हो।

हिन्दी ही संस्कार तुम्हारा,
तुम हिन्दी के रखवाले हो।
कर जोड़ करो प्रणाम इसे,
भारती के पुत्र निराले हो।
यहां गंगा, जमुना, सरस्वती,
तीन रंगों का तुम्हें संग मिला।
यहां चौबिस घंटे का चक्र रहे,
उस चक्र सुदर्शन का संग मिला।
मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, उड़िया
या बंग कहो।
हैं हिन्दी के ये संग सभी,
हिन्दी इनका है अंग कहो।
हिन्दी पी.एम. है इनका,
सब सी.एम. बन के संग रहो।
मिल गई आजादी हिन्दी को,
सब कार्य करके दिखलायेंगे।
जो खोया है कुछ दिन पहले,
वह सम्मान तभी हम पायेंगे।
है पंख हिन्दी के रंग निराले,
सब रंगों की अपनी गरिमा है।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
हिन्दी ही हिन्दी की महिमा है।

लांस नायक सच्चिदानन्द सिंह
ई/24 वीं. वाहिनी

कुछ दिलाना होगा

मनोबल ऊंचा उठाना होगा,
जवानों का हौसला भी बढ़ाना होगा।
टर्न-आउट बढ़िया बनाना होगा,
तो वाशिंग भत्ता भी बढ़ाना होगा।
जवानों को चुस्त एवं दुरुस्त बनाना होगा,

तो प्राशेक्षण भी दिलाना होगा।
ऊँटी भी दिलानी होगी,
छुट्टी भी कटानी होगी।
कष्ट भी उठाना होगा,
तभी घर जाना होगा।
जवान को समृद्धशाली बनाना होगा,
तो बैनीफिट भी दिलाना होगा।
खतरा भी उठाना होगा,
तो रिस्क फंड भी बढ़ाना होगा।
नाम भी कमाना होगा,
मनोरंजन भी कराना होगा।
आत्मा जगानी होगी,
उदारता दिखानी होगी।
जागरुकता लानी होगी,
हिम्मत भी दिखानी होगी।

निरीक्षक मीना राम यादव
ई/124 बटा. नोगांव (आसाम)

हिन्दुस्तानी सैनिक

हमें झुका सकेगा न जमाना,
कि जमाने में दम नहीं,
जमाना खुद हमसे है,
जमाने से हम नहीं।
देश की रक्षा करते हैं
हम भारतीय जवान,
नारा लगाते हैं,
हमारा जय-जय हिन्दोस्तान
आन्तरिक शांति व
बाह्य सुरक्षा का वादा देते हैं।
शपथ लेते हैं,
वे देश की खातिर मरने की,

विपत्तियों का सामना करने व
मौत से न डरने की,
रहते हैं हरदम तैयार वे
सब कुछ न्यौछावर करने को,
दुखों को मिटाकर,
अपने देश को सुखों से भरने को,
ओ भारत के सैनिकों उठो
हमें बनाना है भारत देश महान,
देश भक्ति का काम करके,
उग्रवाद का करना है समाधान,
उठो और प्रतिज्ञा करो,
उग्रवाद को खत्म करने की,
देश की सेवा और सुरक्षा पर
जान न्यौछावर करने की।
करोगे देश भलाई का काम,
तभी होगा तुम्हारा उद्धार।

दिनेश शर्मा
एफ/107 बटा. संगरूर

रजि. नं. 47167/87



संद्भावना दिवस के अवसर पर बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को देखते हुए अपर महानिदेशक श्री एस.बी.एम त्रिपाठी तथा आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सी. पाल सिंह

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० औ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली- 110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली- 110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 फोन : 3275184, 3266571

सी० आर० पी० एफ० समाचार

खंड-VI

अंक-7

30 नवंबर 1993

9 अग्रहायण, शक 1915



श्री पी. एन. रामकृष्णन, उपमहानिरीक्षक, तृतीय अंतर सेक्टर दौड़ कूद मुकाबलों के दौरान अपर महानिदेशक श्री एस. बी. एम. त्रिपाठी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

छाया-डी. एन. तिवारी

सम्पादकीय



अब से 34 वर्ष पूर्व 21 अक्टूबर 1959 को हाट स्प्रिंग्स की बर्फीली चट्टानों पर के.रि.पु. बल के 10 वीर जवानों ने अपनी वीरता की एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी थी, जो आज तक देश के सभी पुलिस कर्मियों के हृदय में प्रेरणा की मशाल बन कर धधक रही है।

ये जवान सीमा पर आजादी के सुरक्षा प्रहरी के रूप में तैनात थे। युद्ध क्षेत्र में पीठ दिखाने की अपेक्षा उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर कर देना कहीं बेहतर समझा। और उन्होंने हंसते हंसते अपने प्राण दे दिए, ताकि हम जी सकें। वह स्थान जहां वे शहीद हुए, एक स्मारक बन गया।

ज्यों ज्यों हमारी आन्तरिक सुरक्षा पर घात प्रतिघात बढ़ते जा रहे हैं, त्यों त्यों देश के पुलिस कर्मियों का कार्य अधिक तनावपूर्ण, अधिक जोखिमपूर्ण होता जा रहा है। साथ ही अपनी मातृभूमि पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले बहादुर पुलिस कर्मियों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी होती जा रही है। जहां 1960 के दशक में कर्तव्य पर मारे गए पुलिस कर्मियों की कुल संख्या 1,543 थी, वहीं यह संख्या 1980 के दशक में 7,144 तक जा पहुंची।

अकेले 1987 से 1992 तक के पांच वर्षों में 5,283 पुलिसकर्मी आतंकवादियों, देशद्रोही तथा समाज विरोधी तत्वों के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। अकेले के.रि.पु.बल के 637 कार्मिक इस अवधि में कर्तव्य की बलिवेदी पर शहीद हो गए।

21 अक्टूबर, पुलिस स्मारक दिवस, हमारे इन्हीं बहादुर साथियों को याद करने का, उन्हें श्रद्धांजलि देने का, उन से प्रेरणा लेकर स्वयं को पुनः राष्ट्र सेवा में अर्पित कर देने की प्रतिज्ञा को दोहराने का दिवस है।

अलीगढ़ 21/10

(अ. ना. शर्मा)

आर.ए.एफ. प्रथम वर्ष में ही उपलब्धियों के शिखर पर



अलीगढ़ में अपनी प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर हिंसक भीड़ पर काबू पाने के अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए आर.ए.एफ. के जवान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने 7 अक्टूबर 93 को अलीगढ़ में रेपिड एक्शन फोर्स की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित एक भव्य परेड की सलामी ली। परेड का मुख्य आकर्षण अपनी नई साज-सज्जा तथा उपकरणों के साथ गाड़ियों में सवार परेड में शामिल आर.ए.एफ. के जवान थे। परेड का नेतृत्व उप कमान्डेन्ट रेशम सिंह ने किया।

परेड के बाद श्री डी.पी.एन. सिंह ने बल के 22 कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के

पुलिस पदक प्रदान किये।

इस मौके पर आर.ए.एफ. के जवानों ने दंगे पर उतारू छात्रों की हिंसक भीड़ पर काबू पाने के अपने जौहर का प्रदर्शन भी एक डेमोस्ट्रेशन के माध्यम से किया।

इस मौके पर महानिदेशक महोदय ने कम लागत के एक आवासीय खण्ड के मॉडल का भी उद्घाटन किया। इस आवासीय खण्ड का निर्माण आर. ए.एफ. के कार्मिकों ने स्वयं सेवा के आधार पर किया था।

इस मौके पर आर.ए.एफ. के अधिकारियों तथा अन्य कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक महोदय ने कहा कि अपने अल्प कार्यकाल के दौरान आर.ए.एफ. ने जो ख्याति अर्जित की है, उसे वे न केवल बनाए रखें अपितु उसमें और बढ़ोत्तरी करें। उन्होंने आह्वान किया कि वे आगे आने वाले विधानसभा चुनावों में अपनी तैनाती के दौरान अपनी उसी कार्य कुशलता का परिचय दें।

इस मौके पर स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों के अतिरिक्त केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री एस. वी.एम. त्रिपाठी सहित के.रि.पु. बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन

गुवाहाटी स्थित के.रि.पु. बल बेस अस्पताल-3 ने स्थानीय लायंस क्लब के साथ मिलकर 18 नवम्बर 93 को एक निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.के. महापात्र की देख रेख में आयोजित इस शिविर में डा.के. सिन्हा तथा डा.पी.सी. साहू ने 117 रोगियों की आंखों का परीक्षण किया।

इस से पूर्व बारापानी मेद्यालय में भी इसी अस्पताल के तत्वाधान में 5 नवम्बर को परिवार कल्याण शिविर का आयोजन भी किया गया।

जोखिम निधि लाभ

माह अक्टूबर, 93 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 19 मामलों में कुल 6,65,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इन में से प्रति मामला 10,000 रुपए की केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के चार मामलों में कुल 60,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि “बी” स्पेशल कल्याण निधि से भी मृत्यु के 5 मामलों में 1,50,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

माह नवम्बर, 93 में भी मृत्यु के 26 मामलों में केन्द्रीय जोखिम निधि से 9,10,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रति मामला 10,000 रुपए की केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार नवम्बर, 93 माह में ही जोखिम निधि “बी” स्पेशल कल्याण निधि से मृत्यु के सात मामलों में कुल 2,10,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

89 बटा ने हाकी प्रतियोगिता जीती

14 अक्टूबर 93 को वजीराबाद स्थल पर खेले गये के.रि.पु. बल की दिल्ली स्थित इन्टर बटालियन हाकी प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में 89 बटालियन ने 90 बटालियन को 2-1 से हराकर प्रतियोगिता की ट्रॉफी जीत ली। मध्यांतर तक स्कोर 1-1 था।

श्री एम.एस. यादव पुलिस महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र के.रि.पु. बल ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

यह प्रतियोगिता 9 अक्टूबर को 103 आर.ए.एफ. बटालियन के वजीराबाद स्थित स्थल पर प्रारम्भ हुई जिसमें दिल्ली स्थित 11 टीमों में भाग लिया। ये टीमें पूल “ए” तथा पूल “बी” में विभाजित थी एवं सभी मैच नाक आउट आधार पर खेले गये।

पुरस्कार वितरण से पूर्व श्री यादव ने प्रतियोगी टीमों के आकर्षक मार्च पास्ट परेड की सलामी ली। इस मौके पर बोलते हुए श्री यादव ने पूरी प्रतियोगिता में खेल भावना बनाए रखने के लिए खिलाड़ियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं के आयोजन का आशय खिलाड़ियों के मनोबल को बढ़ाना तथा उनकी प्रतिभा को निखारना है।



तृतीय अंतर सेक्टर तैराकी प्रतियोगिता उत्तर पश्चिम जोन ने ट्राफी जीती

11 से 14 सितंबर 93 तक कलकत्ता में हुयी के.रि.पु. बल की तृतीय अंतर सेक्टर तैराकी प्रतियोगिताओं की ट्राफी उत्तर पश्चिम जोन ने 180 अंक प्राप्त कर जीत ली। पश्चिमी सेक्टर 118 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रहा, जबकि 78 अंक प्राप्त करने पर पूर्वी सेक्टर को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

कलकत्ता के सुभाष सरोवर तरणताल में आयोजित किए गए इस मुकाबले का उद्घाटन बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम.के. सिंह ने किया जबकि समापन समारोह के अवसर पर पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्रीमति के.आर.के. प्रसाद ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

इस प्रतियोगिता में बल की 10 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। पश्चिमी सेक्टर के इंस्पेक्टर प्रेमजीत सिंह को 72 अंक प्राप्त करने पर सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता के दौरान 10 नए रिकार्ड बनाए गए तथा प्रतियोगिता के अन्त में वाटरपोलो मैच भी खेला गया।

इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले तैराकों के प्रदर्शन के आधार पर आगामी अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली टीम के तैराकों का चयन भी किया गया।

बल के दो कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद ने 8 से 10 नवम्बर 93 तक बनतलाब स्थित 52 बटालियन के वार्षिक निरीक्षण के दौरान 52 बटालियन के कमान्डेन्ट एफ.जे. बाबा तथा नायक बदरूल हसन खान को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की।

इस अवसर पर महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद ने एक शानदार परेड का निरीक्षण किया और उसकी सलामी ली।



उत्तर पश्चिम जोन की टीम के कैप्टन को चैंपियनशिप ट्रॉफी प्रदान करते हुए श्रीमति के. प्रेमलता प्रसाद

तृतीय अंतर सेक्टर एथलेटिक्स प्रतियोगिता

स्पेशल सेक्टर ने खिताब जीता

16 से 19 अक्टूबर 93 तक सी.टी.सी.-1 नीमच में चली केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तृतीय इंटर सेक्टर दौड़कूद प्रतियोगिताओं की ट्राफी स्पेशल सेक्टर ने 208 अंक प्राप्त कर जीत ली। दक्षिण सेक्टर 159 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर तथा उत्तर पश्चिम जोन 87 अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहा। महिलाओं के वर्ग में 88 महिला बटालियन ने 237 अंक प्राप्त किए तथा वह प्रथम स्थान पर रही, जबकि आर.ए.एफ. की महिला टीम 69 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही।

प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ धावक दक्षिण सेक्टर के इंस्पेक्टर राजेंद्र सिंह को घोषित किया गया। जबकि महिला वर्ग में यह सम्मान 88 बटालियन की नायक जैसी पी.ए. को मिला।

प्रतियोगिता का उद्घाटन बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने किया। जबकि समापन समारोह के अवसर पर बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

इस प्रतियोगिता में बल के 10 सेक्टरों तथा दो महिला टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान दो नए रिकार्ड भी स्थापित किए गए। जेवलिन थ्रो में भाला 67.14 मीटर दूर फेंक कर सब इंस्पेक्टर राकेश कुमार ने नया रिकार्ड बनाया। दूसरा रिकार्ड शाटपुट में नायक रघुवीर सिंह ने 15.63 मीटर की दूरी तक गोला फेंक कर बनाया।

प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबलों के परिणाम इस प्रकार रहे।

हैमर थ्रो:-(प्रथम) पूर्वी सेक्टर के इंस्पेक्टर ओम प्रकाश (56.94 मीटर), (द्वितीय) पूर्वी सेक्टर के कांस्टेबल प्रदीप कुमार (56.30 मीटर), (तृतीय) उत्तर पश्चिम जोन के हैं. कांस्टेबल गणदीप सिंह (36.84 मीटर)

100 मीटर (महिला) :-(1) 88 बटालियन की कांस्टेबल डाल्फिना टी. एम. (14.03 सैकंड), (2) 88 बटालियन की का. सुबैदा बीवी (14.34 सैकंड), (3) 88 बटालियन की रूपाली घोष (14.90 सैकंड)

110 मीटर बाधा:- (1) इंस्पेक्टर राजेंद्र सिंह, दक्षिण सेक्टर, 15.12 सैकंड, (2) इंस्पेक्टर के. शियोधनन, पश्चिम सेक्टर, 15.25 सैकंड, (3) ला. नायक पी. सदानंदन, दक्षिण सेक्टर, 15.40 सैकंड।



स्पेशल सेक्टर को विजेता ट्रॉफी प्रदान करते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह



बाधा दौड़ के एक रोमांचक मुकाबले में इंस्पेक्टर राजेंद्र सिंह



रघुवीर सिंह-गोला फेंक में नया रिकार्ड

100 मीटर दौड़:- (1) इंस्पेक्टर प्रभजोत सिंह, पाश्चिम सेक्टर, 11.00 सैकंड, (2) कां.एस.के. इनोबा सिंह, दक्षिण सेक्टर, 11.10 सैकंड, (3) कां.एन.के. अग्निहोत्री, स्पेशल सेक्टर, 11.20 सैकंड

4 x 100 मीटर रिले :- (1) स्पेशल सेक्टर, 43.29 सैकंड, (2) दक्षिण सेक्टर, 43.71 सैकंड, (3) बिहार सेक्टर, 44.00 सैकंड।

3000 मीटर स्टीपल चेस:- (1) है.कां. अमृत पाल, उत्तर पश्चिम जोन, 9. 10.66 मिनट, (2) सहायक कमान्डेन्ट शमशुद्दीन, दक्षिण सेक्टर, 9.18.97 मिनट, (3) कां.आर.के.जेना, पूर्वी सेक्टर, 9.36.80 मिनट

4 x 400 मीटर रिले :-(1) आर.ए. एफ., 3.24.78 मिनट, (2) उत्तर पश्चिम जोन, 3.26.25 मिनट, (3) स्पेशल सेक्टर, 3.26.96 मिनट।

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल में बाल दिवस समारोह



विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता बच्चों के साथ उपमहानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्धकी (दाएं) एवं प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश (बाएं)

12 नवंबर 93 को सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहणी में बाल दिवस मनाया

गया। इस समारोह को अध्यक्षता के.रि.पु. बल के पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्धकी द्वारा की गई।

इस समारोह का आरम्भ स्कूल के विद्यार्थियों में प्रभावकारी मार्च पास्ट से हुआ- जिनके पीछे विभिन्न आयु वर्ग वाले बच्चे, जिन्होंने चित्रकारी प्रतियोगिता और स्पोर्ट्स मीट में भाग लिया आ रहे थे। मुख्य अतिथि श्री सिद्धकी द्वारा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये।

बच्चों और अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए श्री सिद्धकी ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि उन्हें हमारे महापुरुषों द्वारा बनाये गये सिद्धांतों पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के समाज में पण्डित जवाहर लाल नेहरू द्वारा बताये गये सिद्धांतों और उपदेशों की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है और यदि हम उनके बताये मार्ग पर चलें तो हम बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सहायता कर सकते हैं।

स्कूल के प्रिंसिपल सूरज प्रकाश ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया तथा उनको आश्वासन दिया कि उनके विद्यार्थी स्वर्गीय पण्डित जवाहर लाल नेहरू के बताए गए आदर्शों पर चलने के लिए प्रयास करेंगे।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

के.रि.पु. बल, भुवनेश्वर के उप महानिरीक्षक श्री ए. पटनायक को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई है। उन्हें यह डिस्क अपरमहानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने सितम्बर 93 में ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर में प्रदान की।

अक्टूबर/नवंबर'93 में बलकी उपलब्धियां

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अक्टूबर 93 में, 131 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। देश भर में इस दौरान हुयी छः आतंकवादी मुठभेड़ों में 12 आतंकवादी मारे गए। मारे गए आतंकवादियों में घोषित देशद्रोही के.एन.एफ. का चेयरमैन नेहलूम, जिसके सिर पर 10,000 का इनाम घोषित था तथा खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट का ले.ज. जगतार सिंह जैसे आतंकवादी भी शामिल थे।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 69 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में आठ ए.के. 47 राइफलें, एक ए.के. 74 राइफल, 15 पिस्तौलें व रिवाल्वरें, एक स्टेनगन, 38 डबल बरल देशी बंदूकें, एक माउजर, तीन राइफलें तथा दो देशी दो इंच मोटार भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के दो जवान गंभीर रूप से घायल हुए।

इसी प्रकार बल के जवानों ने माह नवम्बर, 93 में देश भर में 64 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान आतंकवादियों के साथ हुयी चार मुठभेड़ों में एक आतंकवादी मारा गया।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 80 घातक हाथियार तथा भारी मात्रा में सजीव गोली बारूद बरामद किया। बरामद हथियारों में 59 राइफलें तथा बंदूकें, 16 पिस्तौलें और रिवाल्वरें, चार देशी लांचर तथा एक कारबाइन शामिल है।

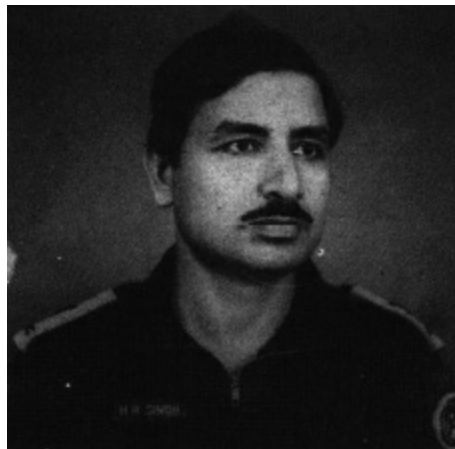
इस अवधि में बल के नौ वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 13 गम्भीर रूप से घायल हुए।

बल का धावक प्रथम

25 नवम्बर 93 को उदयपुर राजस्थान में सम्पन्न हुयी रथ इंडियन ओपन क्रास कंटी दौड़ प्रतियोगिता में बल की 103 आर.ए.एफ. बटालियन के कांस्टेबल गोपी लाल मीना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस प्रतियोगिता के आयोजक तथा रथ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के मैनेजर ने इस सम्बन्ध में 103 बटालियन के कमान्डेन्ट को एक पत्र लिखकर अपनी बधाई प्रेषित की है।

बल के कार्मिक को पुलिस पदक

स्काइन कमांडर हरीराम सिंह 11 स्पेशल रेंजर्स ग्रुप राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड को 46वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति ने उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया।



हरीराम सिंह

श्री सिंह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में 1975 में सीधे राजपत्रित अधिकारी के रूप में नियुक्त किए गए थे तथा वर्तमान में वे 1989 से राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड्स में प्रतिनियुक्ति पर हैं।

संसदीय राजभाषा समिति का दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति ने 28 सितम्बर 93 को बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की जानकारी लेने के लिए निरीक्षण किया। समिति के सदस्यों के साथ महानिरीक्षक श्री एम.एस.

यादव एवं अन्य उच्च अधिकारियों को हिन्दी प्रगति की सूचनाओं से संबंधित प्रत्येक मुद्दे पर विस्तार से चर्चा हुयी। तथा सरकार द्वारा राजभाषा के सम्बन्ध में जारी किए गए विभिन्न आदेशों के परिप्रेक्ष्य में के.रि.पु. बल कार्यालयों में हिन्दी की प्रगति की सराहना की गई। समिति ने हिन्दी की विशेष प्रगति के सम्बन्ध में कुछ सुझाव दिए जिनका पूरा पूरा अनुपालन करने का समिति को आश्वासन दिया गया।

के.रि.पु. बल की गश्त पार्टी की प्रशंसा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 120 अग्निलरी बटालियन की एक टुकड़ी 17 नवम्बर, 93 को नई दिल्ली के दयानंद विहार इलाके में गश्त पर थी। इस गश्त पार्टी ने मध्य रात्रि को पार्किंग में खड़ी एक कार को देखा, जिसके दरवाजे पर चाबी लटक रही थी। गश्त पार्टी के सदस्यों ने तत्काल चाबी निकाल कर कार के मालिक श्री बीरबल नाथ को सौंप दी, जो रात को कार पार्क करते समय चाबियां कार में ही भूल गए थे।

बल के सदस्यों की इस कार्रवाई से श्री बीरबल नाथ अत्यधिक प्रभावित हुए तथा उन्होंने 120 अग्निलरी बटालियन के कमान्डेन्ट को 500 रुपए का चेक भेजकर, गश्त पार्टी के सदस्यों को उनकी कर्तव्यपरायणता तथा सतर्कता के लिए सम्मानित करने के लिए कहा है।

माह अक्टूबर, नवम्बर 93 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अक्टूबर और नवम्बर 93 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सब इंस्पेक्टर डी.पी. थापा (128 बटा.), लां.नायक. मामराज (123 बटा.), कां.लोकपाल सिंह (सी.टी.सी. 2), रंगरूट नितेश एस. खारवाडे (आर.टी. सी. 1/53 बटा) लां. नायक अरूण काले (ग्रुप केन्द्र नागपुर), नायक/रे. आ.पी. पिल्लानी के.आर. (प्रथम सिगनल), अस्थायी रंगरूट सुभाष (124 अग्निलरी बटा.), कां./ड्रा. जंग बहादुर सिंह (14 बटा.) कां. ए.के. शेटी (115 बटा.), है. कां. उदय राम (124 बटा.), कां. राजबीर सिंह (93 बटा.), कां. गुरदयाल सिंह (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), नायक रशिद मोहम्मद (120 अग्निलरी/24 बटा.), कां. मगनजी दुलाजी (69 बटा.), कां. बस्ती राम (ग्रुप केन्द्र नागपुर), नायक गुलान सिंह (114 बटा.), कां. भुवन सिंह (7 बटा.) कां. राम दत्त (24 बटा.), कां. (महिला) पी. शांति (104/88 बटा.), बारबर ब्रिजलाल (ग्रुप केन्द्र रामपुर), कां. के. हरी प्रसाद (12 बटा.), कां. जी.वी. भास्कर (12 बटा.), नायक अनोखे लाल (120 बटा.), है.कां. जगदीश प्रसाद (55 बटा.), कां. अच्युत पटवारी (ग्रुप केन्द्र पिन्जौर), लां.नायक दीनदयाल सिंह (78 बटा.), कां. विजय सिंह (23 बटा.), कां. अशोक कुमार सिंह (94 बटा.), फार्मसिस्ट ए. मैनुअल

एडोसन (ग्रुप केन्द्र दोमापुर), कां. सेयद जफर हुसैन (ग्रुप केंद्र गाँधी नगर), कां. कैलाश चन्द्र (99 बटा.), लां. नायक सुखविंदर सिंह (54 बटा.), कां. सबाथांसी (84 बटा.), नायक/ड्रा. किशन सिंह (65 बटा.), कां. सैथिल वाडीवेल (78 बटा.), स.उ.नि. (महिला) जया वासुमैत्री (ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी), रंगरूट निवास सिंह (ग्रुप केन्द्र-2 अजमेर), इंस्पेक्टर शंकर लाल (61 बटा.), कां. धरमवीर सिंह (37 बटा.), है.कां. सोहन सिंह (27 बटा.), नायक मोहम्मद शरीफ (70 बटा.), लां. नायक एस. जोसेफ (70 बटा.), कां. कैलाश चन्द्र (70 बटा.), कां. पीथिया मुल्ला (70 बटा.), कां. राजेंद्र मोरे (70 बटा.), कां. आर. सी. मल्लिक (70 बटा.), कां. अब्दुल मन्नान (70 बटा.), कां. एस.के. दास (70 बटा.) तथा कां. जितेंद्र कुमार प्रधान (70 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार जून 93 में 98 बटालियन के कां. मन बहादुर की भी मृत्यु हुयी।

हिन्दी दिवस समारोह

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल उत्तरी सेक्टर के कार्यालयों में 14 सितम्बर 93 को हिन्दी दिवस के अवसर पर कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हिन्दी कार्याशालाएं, हिन्दी व्यवहार, नोटिंग/डाफ्टिंग, टाइपिंग, निबंध लेखन, वाक प्रतियोगिता तथा प्रश्नावली सहित अन्य कई कार्यक्रमों में 236 प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विजेता प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। महानिरीक्षक कार्यालय में यह पुरस्कार स्वयं महानिरीक्षक श्री एम.एस. यादव ने प्रदान किये।

ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर में भी इस अवसर पर हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। समारोह के समापन के अवसर पर अलाय स्टील प्लांट के प्रबंध निदेशक श्री जे. पाल राज मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर अपर उप महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए के.रि.पु. बल में हिन्दी की स्थिति एवं प्रगति की जानकारी दी।

नई दिल्ली स्थित के.रि.पु. बल के स्पेशल सेक्टर मुख्यालय में भी हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया तथा विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पुलिस उप महानिरीक्षक, स्पेशल रेंज को हिन्दी पखवाड़े के दौरान सर्वोत्तम कार्यालय माना गया तथा उसे राजभाषा शील्ड प्रेरणा प्रदान की गई। समारोह के समापन पर उप महानिरीक्षक श्री डी. के. सूरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर ने वर्ष 1992 के दौरान के. रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर में राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में किए गए कार्य की सराहना की है।

हम बच्चे विश्व में नया प्रकाश फैलाएंगे

जन-जन चेतना लाएंगे,
अक्रूर मानव आंतक हटाएंगे,
सत्यता के मार्ग पर चल,
सत्यवादी हरीश चन्द्र की नीति अपनाएंगे,
हम बच्चे विश्व में नया प्रकाश फैलाएंगे।
वन-वन वृक्षारोपण कर,
वन-जीवों का
मानव भय हटा, स्वतंत्र विचरण कराएंगे,
गौतम बुद्ध के दया मार्ग पर चल,
हम बच्चे विश्व में नया प्रकाश फैलाएंगे।

अक्षर-ज्ञान करा,
नारी स्वावलम्बी बनाएंगे,
नेहरू-गांधी के स्वप्न का,
वास्तविक इतिहास बनाएंगे,
हम बच्चे विश्व में नया प्रकाश फैलाएंगे।
जन-जन मैत्री भावना जगा,
सैनिक-कृषक को 'बक्शी' प्रेरित कर,
शास्त्री के 'जय-जवान'-'जय-किसान' का बोध कराएंगे,
हम बच्चे विश्व में नया प्रकाश फैलाएंगे।

इंस्पेक्टर पी.पी. बक्शी (स्टेनो)
महानिदेशालय

रे मानव! है कहां गई मानवता तेरी

आज चतुर्दिक गूंज रहा है उग्रवाद का नारा,
तिमिर निराशा फैल गया है, भव प्रांगण में सारा,
मनुज जगत में क्रांति लाकर, मानवता दिखलाओ,
विजय पताका कर में लेकर, प्रगति के पथ जाओ,
तभी बजा सकते हो जग में, विश्व शांति रणभेरी,
रे मानव, है कहां गई मानवता तेरी।
शोषण की जलती मशाल को तुम्हीं बुझा सकते हो,
मानव! मानवता के बल से, विश्व शान्तिमय कर सकते हो,

आतांकेत जन जग में जितने, साहस संबल उनको देना,
फूट डालने आये जो भी, उनका विनाश कर देना,
दिग दिगंत में सब गाये, गुणगान सखा फिर तेरी
रे मानव, है कहां गई मानवता तेरी।
तुम इतिहास बना सकते हो, विश्व-शांति के पथ चल कर,
अलगाववाद मिटा सकते हो, नई क्रांति के बाहुबल पर,
कुटिल-जनों, हठधर्मी जन का, अहंकार तुम दूर करो,
रहम-प्यार का दीप जलाकर, अंधकार तुम दूर करो,
त्राहि-त्राहि करती जनता हित तोड़ो कायरता की डोरी,
भयातंक फैला भारत में, करना इसको तुम ही दूर,
प्राण न्यौछावर करना लेकिन, रिपु को कर देना मजदूर,
मानवता का धर्म नहीं, दानवता कभी दिखाये,
राम-कृष्ण की इस धरती पर, अंधकार फैलाएं
प्रेम “प्रभात” किरणों से करना, अंधकार को दूर
रे मानव! है कहां गई मानवता तेरी।

हंसराज ओझा “प्रभात”
उप निरीक्षक (मं)
49 वटा.

अवकाश आने का इन्तजार

अब की बार लिखो खत तो, आने का पैगाम ही देना,
याद हमारी जब जब आए, मिलने की सौगात ही देना,
अब तो वर्षों बीत चुके हैं, खत पाकर भी दिल रोता है,
क्या परदेश में जाने पर, न आने का मन होता है,
आंखे सूखी पतझड़ छाए, होठों में वह प्यास कहां है,
गुमसुम सी हैं शून्य निगाहें, हंसने में वह चाह कहां है,
बहुत अकेलापन घेरे है, खत्म न होती लंबी रातें,
थकी थकी सी बोझिल सांसे, किस से दिल की करूं मैं बातें।
उपहार जो भेजे अब तक तुमने, वे मेरा उपहास उड़ाते,
गीत लिखे जो तुमने मुझ पर, वे भी मुझे रोज रूलाते,
देखो, अगला सावन अपना साथ में बीतें, साथ ही खेलें,

ऐसा ना हो, बिना तुम्हारे, सावन मेरी जान ही ले ले।

आर.आर. कोटनाला,
ग्रुप केन्द्र गोहाटी



तृतीय अंतर सेक्टर तैराकी प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम. के. सिंह

मुख्य सम्पादक : ए० एन० शर्मा। सम्पादक : अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना।
 मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक कें० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड,
 नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
 मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ोदा कलां, नई दिल्ली-110072।
 कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3275184, 3266571

54वें वार्षिकोत्सव पर विश्व

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-6

अंक-8

31 दिसंबर 93

10 पीप, शक 1915

के.रि.पु.बल
कथानक गीत का लोकार्पण



राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा के.रि.पु.बल कथानक-गीत का कैसेट जारी करते हुए



के.रि.पु.बल. के एक जवान की आश्रिता को अनुग्रह राशि भेंट करते हुए राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

खंड-VI अंक-8

31 दिसंबर, 1993

10 पौष, शक 1915

मुख्य संपादक

ए. एन. शर्मा

संपादक

अनिल गुप्ता

चित्र संकलन एवं आवरण चित्र

सतीश खन्ना

प्रकाशक

महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से ए.
एन. शर्मा

मुद्रक

सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

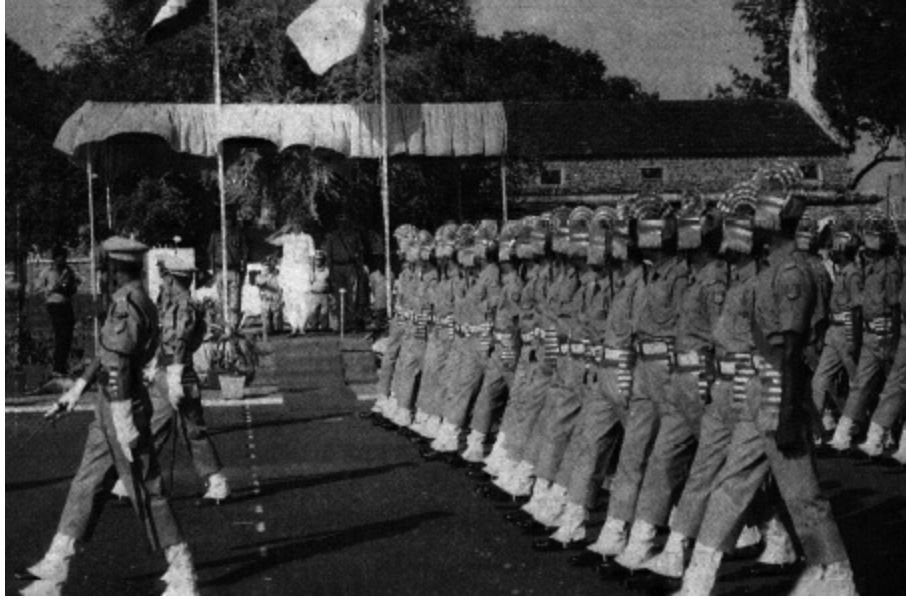
कम्पोजिंग एवं प्लेट. मेकिंग

फ्लेम ग्राफिक, दरिया गंज,

नई दिल्ली-110002,

फोन-3275184, 3266571

विषय सूची



संपादकीय

संदेश

के.रि.पु. बल-इतिहास और वर्तमान

के.रि.पु. बल कथानक गीत का लोकार्पण

पूर्ति का उद्घाटन

श्री डी.पी.एन. सिंह को भावभीनी विदाई

के.रि.पु. बल द्वारा उड़ीसा के एक वन का अंगीकरण

भूकंप पीड़ितों की सहायतार्थ

1993 के पदक विजेता

आंतरिक सुरक्षा अकादमी-एक परिचय

उत्तर-पश्चिम जोन

दक्षिण सेक्टर

स्पेशल सेक्टर

रोपेड एक्शन फोर्स

उत्तर-पूर्वी सेक्टर

केंद्रीय सेक्टर

पश्चिमी सेक्टर

पूर्वी सेक्टर

पंजाब

बिहार सेक्टर

हमारे प्रशिक्षण संस्थान

पुलिस स्मारक दिवस

के.रि.पु. बल में हिंदी

1993 में खेल के क्षेत्र में उपलब्धियां

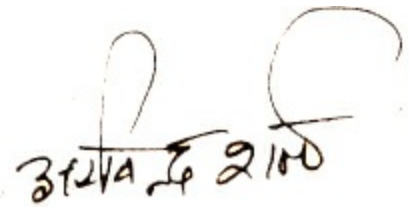
सम्प्रति सम्पादकीय

इस वर्ष के.रि.पु. बल अपनी 54 वीं वर्षगाँठ मना रहा है। यह मात्र एक वार्षिक उत्सव नहीं, एक संकल्प दिवस है। जो अब तक शहीद हुए हैं उनकी अमर शहादत को स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेकर, उनके द्वारा स्थापित परम्परा को ऊँचा रखने और आगे ले जाने का संकल्प दोहराने का दिवस।

के.रि.पु.बल ने अपने 54 साला इतिहास में अनेक गौरवपूर्ण क्षणों को जिया है। कर्तव्य पर लड़ते हुए मातृभूमि की गोद में सो जाना, या शत्रु दमन कर विजयी ध्वज फहराने के दो विकल्पों के अतिरिक्त तीसरी राह के.रि.पु.बल के जवानों के लिए अनजानी है। अपने इसी विजय पथ पर के.रि.पु.बल का साक्षात्कार 29 अक्टूबर 93 को एक और गौरवपूर्ण क्षण से हुआ, जब दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने के.रि.पु.बल के कथार्थक गीत का कैसेट जारी किया। इस गीत की रचना बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन.सिंह ने की है तथा इसे धुन दी है बम्बई के विख्यात संगीतकार रविंद्र जैन ने। निस्संदेह यह क्षण हमारे लिए एक ऐसी गौरवपूर्ण स्मृति है, जो वर्षों तक हमारे मानस पटलों पर अंकित रहेगी।

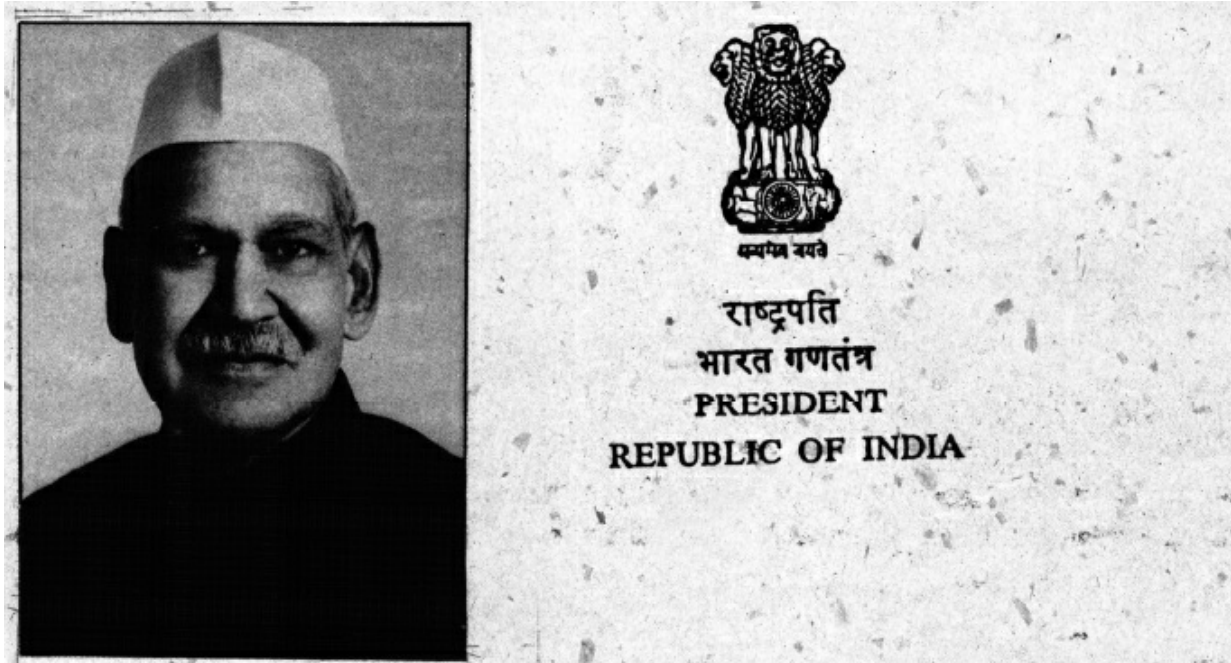
यह हमारे देश की कैसी विडम्बना है कि ज्यों ही एक समस्या का निदान होता है, दूसरी समस्या मुंह खोले सामने आ खड़ी होती है। असम के बाद पंजाब, फिर जम्मू कश्मीर और फिर उत्तर पूर्वी राज्य। ऐसी स्थिति में बल के किसी भी सदस्य के लिए आराम की कोई घड़ी नहीं है। बल के हर सदस्य को, हर पल, हर घड़ी कर्तव्यपालन के लिए सजग-सर्तक रहना पड़ता है। यही फोर्स का सम्मानित आदर्श जीवन है। यही हमारा अतीत था, यही वर्तमान है और यही भविष्य होगा।

हमारे कंधों पर एक बहुत बड़ा दायित्व है और वह है राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को अबाध गति से चलने देने का। हमें देश के प्रगति पथ के कंटेकों को साफ करना है। जब तक पूरे देश में शांति और अमन कायम नहीं हो जाता, तब तक विश्राम हमारे लिए असंभव है। हमारी हर वर्षगाँठ हमें इसी संकल्प को दोहराने का अवसर प्रदान करती है।



(अ.ना.शर्मा)

प्रेरणा



संदेश

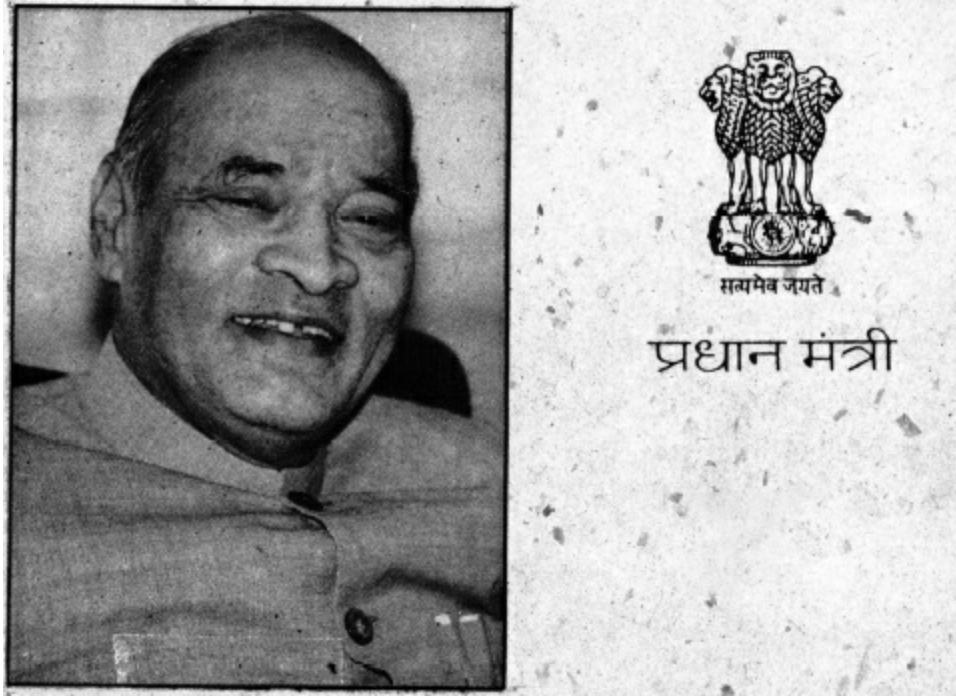
मुझे यह जानकारी प्रसन्नता है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इस माह अपनी 54 वीं वर्षगांठ मना रहा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने शान्ति बनाये रखने के लिए सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कर्तव्यपरायणता और देश सेवा की बहुत अच्छी मिसाल कायम की है।

मैं इस गौरवपूर्ण बल के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

शंकर दयाल शर्मा
॥ शंकर दयाल शर्मा ॥

नई दिल्ली,
17 दिसम्बर, 1993



संदेश

अपनी समर्पण भावना तथा सेवा से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अगम्य परिस्थितियों में भी उच्च कोटि की कार्य-कुशलता का परिचय देते हुए प्रशंसा अर्जित की है।

मुझे इस बात का हर्ष है कि यह बल समय की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न प्रदेशों की गम्भीर शान्ति-व्यवस्था समस्याओं को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पंजाब, जम्मू कश्मीर तथा पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवाद का सामना करने में इस बल के जवानों ने अपूर्व साहस और वीरता का परिचय दिया है।

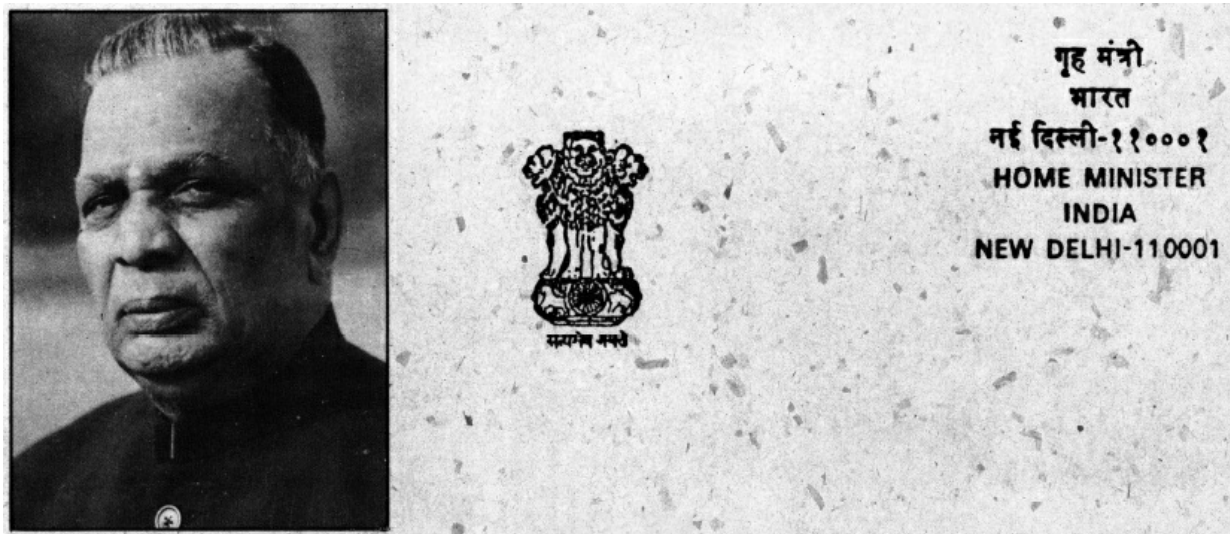
साम्प्रदायिक दंगों से निपटने के लिए रैपिड एक्शन फोर्स के गठन से न केवल इस बल का कार्य-क्षेत्र बढ़ा है बल्कि समाज, के प्रति इसकी जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है। यह बल अपनी जिम्मेदारी सफलतापूर्वक पूरी करेगा, हमें यह पूर्ण विश्वास है।

केन्द्रीय सुरक्षा बल भविष्य में भी अपनी गौरवशाली परंपराओं को बनाए रखेगा, इसी आशा के साथ इसकी 54वीं वर्षगांठ पर मेरी शुभकामनाएं।

॥ श्री ० वी० नरसिंह राव ॥

नई दिल्ली

26 नवम्बर, 1993



सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी 54वीं वर्षगांठ मना रहा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों का देश में आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में हमेशा ही अनुपम योगदान रहा है। कठिन परिस्थितियों में भी बल के जवानों ने सदैव अपने उच्च मनोबल तथा कार्यक्षमता का परिचय दिया है।

पहले महिला बटालियन और अब रैपिड ऐक्शन फोर्स के गठन से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की गरिमा तथा बहुआयामी कार्यक्षेत्र और बढ़ गया है। बल के ये दोनों ही संगठन जो अत्यन्त सकारात्मक भूमिका निभा, रहे हैं वह प्रशंसनीय है।

इस मौके पर मैं बल के सदस्यों एवं उनके परिवारजनों को बधाई तथा बल के उज्ज्वल एवं गौरवशाली भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

॥ शंकरराव चव्हाण ॥



RAJESH PILOT

गृह राज्य मंत्री (आंतरिक सुरक्षा)

गृह मंत्रालय

भारत

नई दिल्ली-११०००१

MINISTER OF STATE (INTERNAL SECURITY)

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

INDIA

NEW DELHI-110001

सन्देश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, देश का सब से पुराना अर्द्धसैनिक सुरक्षा संगठन है। इसकी परम्पराएं अत्यंत समृद्ध एवं गौरवशाली हैं। बल के जवानों ने अपने साहस, वीरता एवं समर्पण से इन परम्पराओं को दृढ़ किया है।

यह गौरव की बात है कि इस बल ने देश में अलगाववादी, साम्प्रदायिक, विघटनकारी तथा आतंकवादी ताकतों का सामना करते हुए कानून और व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पंजाब, जम्मू कश्मीर तथा पूर्वोत्तर राज्यों में इस बल के जवानों ने सराहनीय कार्य किया है। बल की महिला बटालियन भी अपने अन्य साथियों के साथ कंधे से कंधा मिला कर कार्य करती हुई बल के गौरव को बढ़ा रही है। साम्प्रदायिक दंगों से निपटने के लिए नवगठित रैपिड ऐक्शन फोर्स ने भी अपने एक वर्ष के अल्पकाल में ही पर्याप्त प्रशंसा अर्जित की है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 54वीं वर्षगांठ के अवसर पर मैं इस बल के सभी अधिकारियों और जवानों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

राजेश पायलट



गृह सचिव का सन्देश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने देश को अपनी अमूल्य सेवाएं अर्पित करते हुए ऊंचे दर्जे की निष्ठा, ईमानदारी, सहयोग, धनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, वीरता व साहस के कई उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

इस बल का इतिहास गौरवशाली परम्पराओं एवं उपलब्धियों से भरपूर है। आशा है कि आने वाले समय में ये परम्पराएं और अधिक पल्लवित एवम् पुष्पित होंगी, तथा बल के सदस्य कर्तव्य के क्षेत्र में उपलब्धियों तथा सफलताओं के नये कीर्तिमान स्थापित करेंगे। शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को पूरे देश में तैनात किया गया है तथा यह अपने कर्तव्य पालन में सदा खरा उतरा है, जिससे इसने जन मानस के हृदय में अपना स्थान बना लिया है।

बल की 54 वीं वर्षगांठ पर बल के स्वर्णिम एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

न. न. वोहरा
॥ एन०एन० वोहरा ॥

20. 12. 1993



संदेश

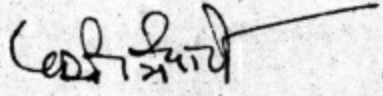
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 54वीं वर्षगांठ के अवसर पर बल के अधिकारियों, जवानों, अन्य कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों को हार्दिक शुभ-कामनाएं देते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

इस अवसर पर मैं उन सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा तथा सम्मान व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर देश की एकता और अखण्डता को सुरक्षित रखा है। आज पंजाब में व्याप्त शान्ति को पाने के लिए हमारे जवानों ने बड़ी संख्या में कुरबानियां दी हैं। वे आज भी अपूर्व साहस, वीरता और देश भक्ति की भावना मन में लिए अपने कर्तव्य पथ पर डटे हैं।

आज जहां कहीं भी आतंकवादी या अन्य हिंसात्मक गतिविधियां बढ़ती हैं तो वहां सबसे पहले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही शान्ति दूत के रूप में भेजा जाता है। समाज तथा शासन की यह आस्था हमारी अमूल्य धरोहर है। इस बल ने उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता और सेवा भक्ति की गौरवशाली परम्पराएं स्थापित की हैं। हमें इन परम्पराओं की रक्षा ही नहीं करनी है, अपितु धर्म निरपेक्षता, जन-विश्वास और जन सहयोग के एक नये युग का सूत्रपात भी करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम सघन प्रशिक्षण पर अधिक जोर दे रहे हैं, व्यवसायिक क्षमता को उच्चिकृत कर रहे हैं तथा बल के सभी सदस्यों के बीच व्याप्त राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक सहिष्णुता की भावना को और सुदृढ़ कर रहे हैं।

इस पावन अवसर पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हम सभी सदस्य देश में एकता और अखण्डता, शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए और दृढ़ प्रतिज्ञा होंगे, यह मेरी शुभ कामना है।

जयाहेन्द !



(श्री. वि. म. त्रिपाठी)

परम्परा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इतिहास और वर्तमान

54 वर्ष पूर्व 27 जुलाई, 1939 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का, जन्म नीमच में हुआ। अतः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के प्रत्येक सदस्य का नीमच के साथ एक भावनात्मक लगाव होना स्वाभाविक है। यह स्थान तथा इसके आसपास के स्मारक हमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के गौरवपूर्ण इतिहास की याद दिलाते हैं, जिसके हम एक अंग हैं। मध्य प्रदेश में राजस्थान की सीमा पर स्थित नीमच तेजी से आधुनिक शहर के रूप में उभर रहा है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नीमच के साथ पिछली आधी शताब्दी से भी अधिक समय से साथ बना हुआ है। हरे-भरे वातावरण से परिपूर्ण मालवा समीर से सराबोर नीमच अपने कलेवर में इतिहास की कई महत्वपूर्ण घटनाओं को समेटे हुए है।

विद्वानों के अनुसार, अतीत में यहां रहने वाले मीणा समुदाय के लोगों के नाम पर इस स्थान का नाम नीमच रखा गया। कुछ अन्य लोगों का विचार है कि ब्रिटिश शासन के दौरान यह नादर्न इंडिया मिलिट्री एण्ड केवलरी हैडक्वार्टर्स था तो अब अंग्रेजी में नीमच कहलाता है।

देश की अंग्रेजी हुकूमत द्वारा विख्यात दुर्ग निर्माता मेजर जनरल डेविड ओक्टरलोनी को नीमच छावनी का निर्माण करने का काम सौंपा गया था। उन्होंने 1918 में यहां अपना कार्यालय स्थापित किया और अपने बंगले का निर्माण कार्य शुरू किया जिसका नाम उनके नाम पर “द-ओक्टरलोनी-हाउस” रखा गया।

इस समय ओक्टरलोनी हाउस में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का अफसर मेस है। यह ऐतिहासिक स्मारक दूसरे कई भवनों तथा किले के बीच सिर ताने खड़ा हुआ है, जो गुजरे हुए समय का साक्षी है। इस छावनी को विक्टोरिया बैरक के नाम से जाना जाता है।

इसी नीमच शहर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्थापना 27 जुलाई, 1939, को

क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव पुलिस के नाम से हुई थी। इस बल का मुख्य कार्य कानून और व्यवस्था बनाए रखने में रजवाड़ों की सहायता करना था। जर्मनी तथा इटली के युद्धबंदियों की चौकसी करने, हुरों के आतंक से निपटने, मध्य भारत में डाकुओं के विरूद्ध अभियान चलाने आदि में भी इस बल का उपयोग किया गया।



भारत के प्रथम प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू बल के नीमच केंद्र में।

देश आजाद होने पर सी.आर.पी. के जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया और 1949 में संसद के एक अधिनियम द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के रूप में इस का पुनः नामकरण किया गया। इस अधिनियम में केरिपु की संरचना संघ के एक सशस्त्र बल के रूप में की गई। तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने नव-स्वतंत्र देश की बेदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप इस बल की बहु-आयामी भूमिका की पहले से कल्पना कर ली थी। संसद में बोलते हुए उन्होंने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस को असुरक्षा से ग्रस्त क्षेत्र में या शांति स्थापित करने वाले तत्व के रूप में वर्णित किया था। 19 मार्च, 1950 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा इस बल को

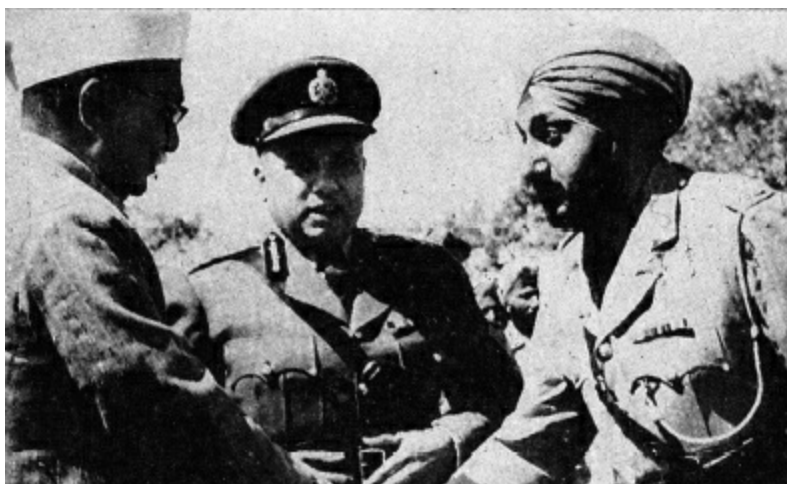
ध्वज प्रदान किया गया।

इस बल की मांग में निरंतर वृद्धि होते रहने के कारण बल का भी विस्तार होता रहा। भुज, पेप्सू तथा चंबल घाटी में केरिपु बल की टुकड़ियों के कार्य की अधिकारियों तथा लोगों ने सब जगह प्रशंसा की। हॉट स्पिंग (लद्दाख) में चीनी आक्रमण का प्रथम झटका केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने ही झेला था। 21 अक्टूबर 1959 को केरिपु बल की एक छोटी सी गश्ती टुकड़ी पर चीनियों के बहुत बड़े दल के द्वारा घात लगाई गई थी। इस मुठभेड़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवानों ने अपने प्राणों की बलि दी थी जिसकी याद में प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर का दिन संपूर्ण देश में “पुलिस स्मृति दिवस” के रूप में मनाया जाता है।

वर्तमान में बल की संख्या 1.5 लाख से अधिक है जिसमें 129 बटालियनें (123 ड्यूटी बटालियन, 5 सिगनल बटालियन और एक स्पेशल ड्यूटी ग्रुप बटालियन) 19 ग्रुप केन्द्र, 7 प्रशिक्षण संस्थान, 3 बेस अस्पताल तथा कई अन्य सहायक तत्व हैं। इन वर्षों में इसकी भूमिका में कई और किस्मों के कार्य जुड़ गए हैं। आज केन्द्रीय रिजर्व पुलिस संगठनों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही सर्वाधिक बहुमुखी बल है। एक भूमिका से दूसरी भूमिका में जाने को इसकी क्षमता आश्चर्यजनक है। सौंपे गए सभी कार्यों में बल ने सदा अपनी विश्वसनीयता तथा उच्च स्तर को कायम रखा है।

महिला बटालियन

देश में यही एक अर्द्ध-सैनिक बल है जिसे महिला बटालियन प्राप्त होने का गर्व प्राप्त है। महिला बटालियन ने मार्च, 1987 में अपना प्रशिक्षण पूरा किया था। सर्वप्रथम इसने मेरठ के दंगों में प्रशंसा अर्जित की और इसके बाद श्रीलंका में बेहतरीन कार्य के लिए इसे प्रशंसा मिली। महिला आन्दोलनकारियों से निपटने तथा तलाशी के कार्यों के लिए इस बटालियन की कंपनियां जम्मू-कश्मीर, फैजाबाद (उत्तरप्रदेश), गुवाहाटी और बिहार में भी सक्रियतापूर्वक ड्यूटी कर रही हैं।



डा. राजेंद्र प्रसाद बल के अधिकारियों के साथ।

द्रुत कार्य बल :

साम्प्रदायिक तथा अन्य सामाजिक तनावों से पैदा होने वाले दंगों और दंगों जैसी स्थितियों से निपटने के लिए 1992 में द्रुत कार्य बल (आर.ए.एफ.) का गठन किया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विद्यमान बटालियनों में से मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा उनके सर्विस रिकार्डों की जाँच के बाद आर.ए.एफ. के कार्मिकों को चुना गया है। आर.ए.एफ. की प्रत्येक बटालियन के साथ एक महिला प्लाटून भी है। द्रुत कार्य बल खड़ा करने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि दंगों की घटना के समय संबंधित समुदाय के साथ बर्ताव के लिए इस बल के पास निष्पक्ष और तटस्थ अधिकारी तथा जवान हों। इसका उद्देश्य यह भी था कि विभिन्न प्रकार के दंगों से निपटने के लिए और अधिक संख्या में व्यवसायिक तौर पर कुशल अधिकारी तथा जवान उपलब्ध हों। इस बल को अधिक गतिशील बनाने का प्रयास किया गया है ताकि कम-से-कम समय में यह बल हरकत में आ सके।

श्रीलंका में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस

श्रीलंका में के.रि.पु.बल जवानों की 2 बटालियनें एवं एक महिला कंपनी भारतीय शांति रक्षा सेना के अंग के रूप में तैनात की गई थी। लिट्टे का प्रथम हमला केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को सहना पड़ा जिसमें बल के 4 कर्मिकों को जान से हाथ धोना पड़ा। इस मुठभेड़ के साथ-साथ दूसरी मुठभेड़ों से यह सिद्ध हो गया कि अपरंपरा युद्ध में लिट्टे द्वारा किये गए हमलों को के.रि.पु.बल के कार्मिकों ने सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया। स्वर्गीय सिपाही टी.मोहनन् को “वीर चक्र” तथा निरीक्षक वी.पी.शर्मा को “सेनापदक” से सम्मानित किया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला बटालियन की महिला सिपाही विमला देवी को “सेनापदक” प्रदान किया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 15 बहादुर कार्मिकों ने श्रीलंका में अपनी जान गंवायी।

परिचालन उपलब्धियां

जनवरी, 1992 से 30 जून, 1993 तक के.रि.पु.बल ने पूरे देश में 2361 उग्रवादियों/आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा अन्य 761 को मार गिराया। इस अवधि के दौरान के.रि.पु.बल ने ए. के.47 राइफल, ए.के.56 राइफल, ए.के. 74 राइफल्स, राकेट लांचर, थामसन गन इत्यादि जैसे 1343 बड़े हथियार बरामद किये। इस अवधि के दौरान के.रि.पु.बल के 81 कार्मिकों ने जान गंवायी तथा 403 जख्मी हुए।

प्रतिविद्रोही तथा आतंकवादी गतिविधियों के विरूद्ध कार्यवाही :

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्य रूप से पंजाब, जम्मू कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों तथा उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में ऐसी कार्रवाई कर रहा है।

वर्ष 1983 से के.रि.पु.बल पंजाब में राज्य सरकार की सहायता कर रहा है। पंजाब

में आतंवाद के आवेग का धक्का पंजाब पुलिस के बाद ज्यादा से ज्यादा के. रि.पु.बल को झेलना पड़ा है। जनवरी 93 से 30 जून, 93 की अवधि में के.रि.पु.बल ने 34 आतंकवादियों का पकड़ा, 115 को मुठभेड़ों में मार गिराया तथा 165 बड़े हथियार पकड़े। ज्ञातव्य है कि विगत एक दशक के दौरान के.रि.पु.बल ने 2521 आतंकवादियों को पकड़ा व 5670 बड़े हथियार बरामद किए हैं। इस सबके लिए हमें भारी कीमत चुकानी पड़ी है। इस अवधि में 189 कर्मचारियों ने ड्यूटी के दौरान अपने प्राण न्योछावर किए तथा 500 जखमी हुए या जीवन भर के लिए अपंग हो गए।



सरदार पटेल बल को ध्वज प्रदान करते हुए।

पंजाब के पश्चात् के.रि.पु.बल की अधिकतम तैनाती कश्मीर में है। संबंधित अवधि (1 जनवरी 93 से 30 जून 93), के दौरान के.रि.पु.बल ने 8 उग्रवादियों/आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, तथा के.रि.पु.बल के साथ विभिन्न मुठभेड़ों में 5 अन्य उग्रवादी मारे गए। इन आपरेशनों में के.रि.पु.बल को काफी ऊंची कीमत चुकानी पड़ी। 7 अधिकारियों/जवानों ने अपने प्राण न्योछावर किए व 37 जखमी हुए। ज्ञातव्य है कि आतंकवाद विरोधी आपरेशनों में के.रि.पु.बल को लगाए जाने के बाद से 118 अधिकारियों एवं जवानों को ड्यूटी के दौरान जान गंवानी पड़ी 1083 जखमी अथवा अपंग हो गए। दूसरी ओर विभिन्न मुठभेड़ों में 207 उग्रवादी/आतंकवादी मारे गए तथा 2188 को गिरफ्तार किया गया। के.रि.पु. बल ने 1013 बड़े हथियार भी बरामद किये।

वर्ष 1993 में हमारी उपलब्धियायां

राहत एवं सहायता अभियान :

ऑपरेशन सफलताओं में अपनी पहचान बनाते हुए, बल ने आपात स्थिति में राहत एवं सहायता प्रदान करने में उपयोगी भूमिका अदा की है। बाढ़, सूखा, अग्नि कांड व अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान हमारे जवानों द्वारा की गई सेवाओं के कारण के.रि.पु.बल ने बहुत ख्याति अर्जित की है।

वर्ष 1993 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मुख्य उपलब्धियां

परिचालन के क्षेत्र में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। 30 नवम्बर, 93 तक उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों की देश भर में आतंकवादियों के साथ हुई 106 मुठभेड़ों में 150 आतंकवादी मारे गए तथा 11 गंभीर रूप से घायल हुए। इन मुठभेड़ों में 645 आतंकवादी गिरफ्तार किए गए तथा 468 घातक हथियार और भारी मात्रा में सजीव गोली बारूद बरामद किया गया।

सम्मान :

अपने जन्म से लेकर के.रि.पु.बल ने एक जार्ज क्रास, एक वीर चक्र, दो पद्मश्री, वीरता के लिए तीन किंग्स पुलिस व फायर सर्विस पदक, वीरता के लिए राष्ट्रपति के 130 पुलिस पदक, वीरता के लिए 349 पुलिस पदक, चार विशिष्ट सेवा पदक, एक युद्ध सेवा पदक, पांच सेना पदक, 51 प्रधान मंत्री जीवन रक्षा पदक, तथा एक जीवन रक्षा पदक अर्जित किया है।

प्रशिक्षण :

के.रि.पु.बल के पास माउंट-बाबू में अपनी एक आंतरिक सुरक्षा अकादमी है जिसमें के.रि.पु.बल के सीधे भर्ती राजपत्रित अधिकारियों को ही नहीं बल्कि देश व, विदेश को अन्य पुलिस फोर्सों के अधिकारियों को भी बुनियादी तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जाता है।

नीमच (मध्य प्रदेश) तथा आवडी (तमिलनाडु) में, दो केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज विद्यमान हैं। साथ ही 4 रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र नीमच (म.प्र.), आवडी (तमिलनाडु), पल्लीपुरम (केरल) व श्रीनगर (जम्मू -कश्मीर) में स्थित हैं। इन प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा बल के अधिकारियों व कार्मिकों के लिए बुनियादी प्रशिक्षण, सेवाकालीन प्रशिक्षण व पदोन्नति कोर्सों का आयोजन किया जाता है। इनमें अन्य राज्यों की पुलिस फोर्सों, सीमा शुल्क (कस्टम), आबकारी (एक्साइज) मंत्रिमंडल सचिवालय (केबीनेट सिक्रेटरीयट) के अधिकारियों व अन्य रैंकों के प्रशिक्षणों का भी आयोजन किया जाता है।

सरकार ने के.रि.पु.बल के लिए तीसरे केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज को नान्देड़ महाराष्ट्र में स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान की है। इसका शिलान्यास केन्द्रीय गृहमंत्रि श्री एस.बी. चव्हाण द्वारा दिनांक 5 अप्रैल, 1993 को किया गया।

संचार:

आधुनिकीकरण की ओर एक कदम बढ़ाते हुए के.रि.पु.बल में “आटोमैक्स” के नाम से विख्यात कम्प्यूटर आधारित स्वयं-चालित संदेश-स्विचिंग-पद्धति स्थापित की

गई है, तथा संदेश प्रेषण में विलम्ब व मानवीय भूल को संभावना को काफी हद तक दूर कर दिया गया है।

कम्प्यूटर :

आधुनिकीकरण योजना के एक अंग के रूप में, बल के मुख्य कार्यों जैसे वेतन रोल, सा.भ.नि.मोटर-वाहन, आग्नेयास्त्र, अन्य भण्डार व परिचालन आंकड़ों (आप्स डाटा) के कम्प्यूटीकरण हेतु एक कम्प्यूटर प्राप्त किया गया है।

हमारी प्रतिज्ञा

एक शक्तिशाली समाज में, तेजी से बदल रहे सामाजिक समीकरणों, विभिन्न मानव-जातियों, धर्मों व भाषाई समूहों की बढ़ती आकांक्षाओं के कारण आने वाले समय में देश व के.रि.पु.बल की परीक्षा लेने के लिए बाहरी शक्तियों द्वारा अस्थिरता पैदा करने की साजिशें चलती रहेंगी। अपने “सेवा व भक्ति” के उद्देश्य को ऊंचा रखते हुए, के.रि.पु.बल प्रतिज्ञा करता है कि वह इन चुनौतियों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करेगा तथा “राष्ट्र के शांति रक्षक” के नाम को बनाए रखेगा।

प्रतीक के रि.पु.बल कथानक गीत का लोकार्पण

29 अक्टूबर, 93 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह के बीच भारत के राष्ट्रपति माननीय डा. शंकर दयाल शर्मा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कथानक गीत के एक कैसेट को जारी किया। इस गीत की रचना के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन.सिंह ने की है तथा इसकी धुन बनाई है रवींद्र जैन ने। यह गीत बल की प्रशंसा में एक स्तुति गान के रूप में है। यह गीत इस बल की अनुपम परम्परा सेवा और भक्ति के संदर्भ के साथ प्रारंभ होता है। बाद में इस गीत में बल के अखिल भारतीय स्वरूप, धर्मनिरपेक्षता के प्रति आस्था, महिलाओं को दिए गए विशेष स्थान तथा सभी कठिनाइयों के होते हुए भी कर्तव्यपरायणता और समर्पण की भावना को दर्शाया गया है।

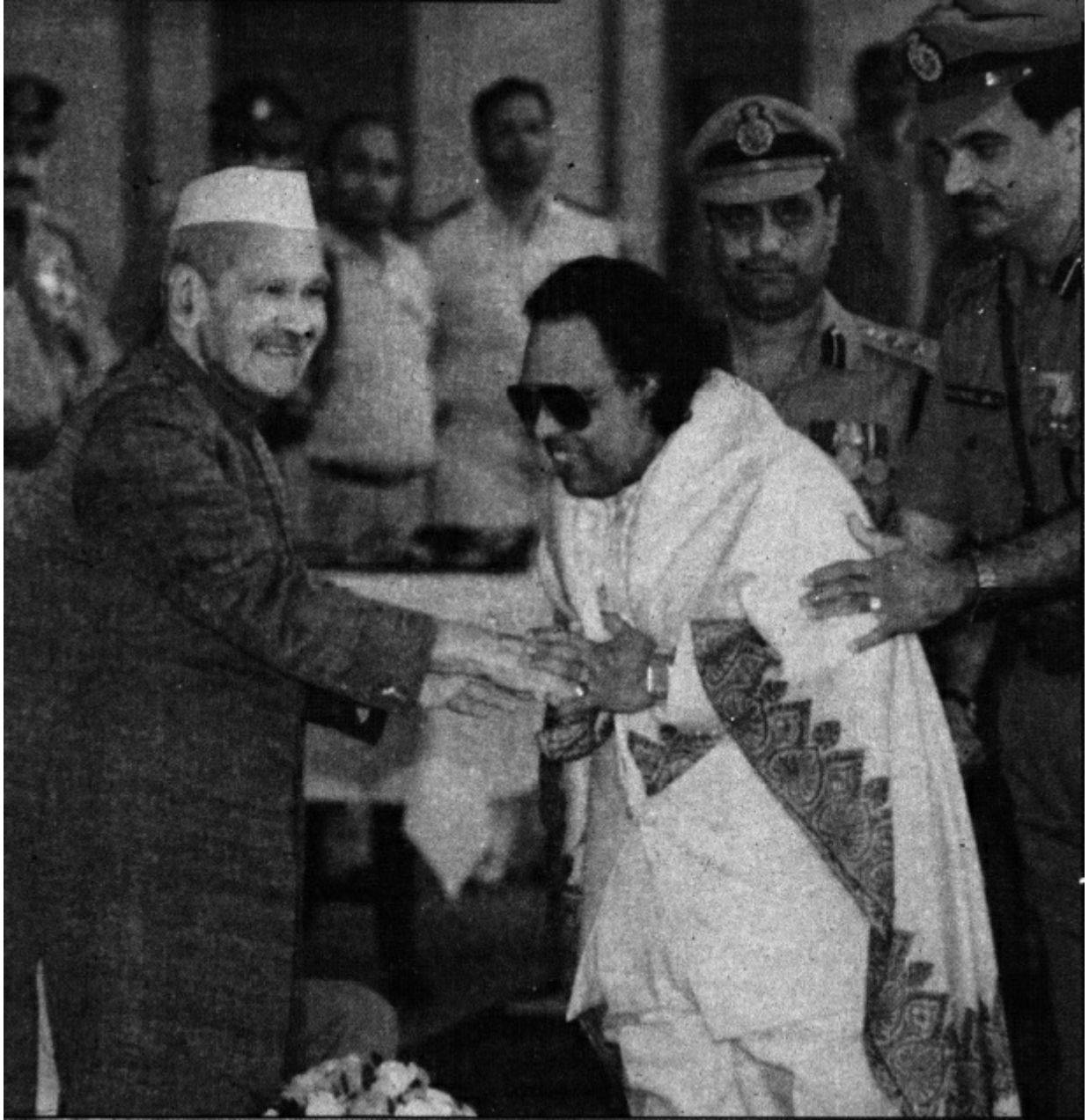
सभी उपयुक्त अवसरों पर यह गीत बल के सदस्यों द्वारा गाया जाएगा और इस की धुन बैंड पर बजाई जाएगी। आगे चल कर यह गीत बल की परम्परा का एक हिस्सा बन जाएगा और आने वाले वर्षों में बल के सदस्यों को प्रेरणा देता रहेगा।

इस समारोह का प्रारंभ महानिदेशक श्री डी.पी.एन.सिंह द्वारा व्यक्त किए गए

आभार वक्तव्य से हुआ। बाद में गृह मंत्री श्री एस.बी.चव्हाण ने स्वागत भाषण देते हुए राष्ट्रपति महोदय को बल के गौरवपूर्ण इतिहास तथा परंपराओं का परिचय दिया। बल द्वारा राष्ट्र सेवा में दिए गए बलिदानों तथा बल की उपलब्धियों की गृह मंत्री ने भरपूर प्रशंसा की।

महानिदेशक महोदय ने राष्ट्रपति को बल की ओर से एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया। जबकि श्रीमती डी.पी.एन.सिंह ने स्मृति स्वरूप श्रीमती विमला शर्मा को एक पारंपरिक कलाकृति भेंट की। अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी की धर्मपत्नी ने भी श्रीमती विमला शर्मा को एक फूलों का गुलदस्ता भेंट किया।

राष्ट्रपति महोदय ने इस गीत के संगीतकार रविंद्र जैन को एक शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया। इस सम्मान से अविभूत रविंद्र जैन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि के.रि.पु.बल के गीत की संगीत रचना उनके लिए एक अपूर्व अनुभव है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि राष्ट्र के प्रथम नागरिक के हाथों जारी कथानक गीत का यह कैसेट कल कोटि कोटि जने का प्रिय होगा। राष्ट्रपति के हाथों अपने सम्मान को उन्होंने आफताब के हाथों जर्ने का सम्मान बताया। उन्होंने अपने ये उद्गार एक कवित्त के रूप में पेश किए।



कथानक गीत के संगीतकार श्री रविंद्र जैन को सम्मानित करते हुए राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा।

इस अवसर पर राष्ट्रपति महोदय का परिचय उन छः विधवाओं से भी कराया गया, जिनके पति आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए हैं। राष्ट्रपति महोदय ने इन आश्रिताओं को सम्मानपूर्वक एक अनुग्रह राशि भी भेंट की।

समारोह के अंत में रविंद्र जैन के प्रभावशाली संगीत में गुथे सी.आर.पी.एफ. गीत के कैसेट को राष्ट्रपति महोदय ने जारी किया। इस कैसेट की एक प्रति महानिदेशक श्री डी.पी.एन.सिंह ने राष्ट्रपति को भेंट की। राष्ट्रपति द्वारा कैसेट की प्रति का आनावरण होते ही पूरी फिजां में ये गीत गुंज उठा। विचारोत्तजक बोल तथा प्रभावशाली संगीत के कारण गीत ने उपस्थित श्रोताओं को अविभूत कर दिया। और

गोत के समापन के बाद भी कई क्षणों तक श्रोता उसके प्रभाव में डूबे रहे।

इस मौके पर कई केंद्रीय मंत्रियों सहित अति महत्वपूर्ण व्यक्ति और के.रि.पु.बल के वरिष्ठ अधिकारी अपनी पत्नियों सहित उपस्थित थे।



राष्ट्रपति को के.रि.पु.बल की ओर से स्मृति चिह्न भेंट करते हुए महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह



श्रीमति विमला शर्मा को स्मृति स्वरूप एक कलाकृति भेंट करते हुए श्रीमति डी. पी. एन. सिंह

कल्याण

के. रि. पु. बल के शापिंग काम्पलेक्स
'पूति' का उद्घाटन



के.रि.पु. बल के शापिंग काम्पलेक्स पूर्ति का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती मारग्रेट अल्वा श्रीमती मारग्रेट अल्वा, कार्मिक एवं लोक शिकायत व पेंशन राज्य मंत्री ने 9 नवम्बर, 93 को दीप जला कर के.रि.पु.बल के प्रथम शापिंग काम्पलेक्स “पूर्ति” का उद्घाटन किया।

शापिंग काम्पलेक्स में सारे देश में फैले के.रि.पु.बल के विभिन्न कल्याण केंद्रों से प्राप्त वस्तुएं बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं।

के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल के बच्चों ने मंत्री के सम्मान में एक स्वागत गीत गाया। श्रीमती एस.वी.एम. त्रिपाठी, महिला कल्याण बोर्ड की उपाध्यक्ष ने श्रीमती अल्वा के स्वागत में कहा कि “पूर्ति” की स्थापना सर्जनात्मक योग्यता को दिशा निर्देश देने तथा के.रि.पु.बल की उन प्रतिभाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई है, जो कि इस कार्य में अपना योगदान दे सकती हैं।

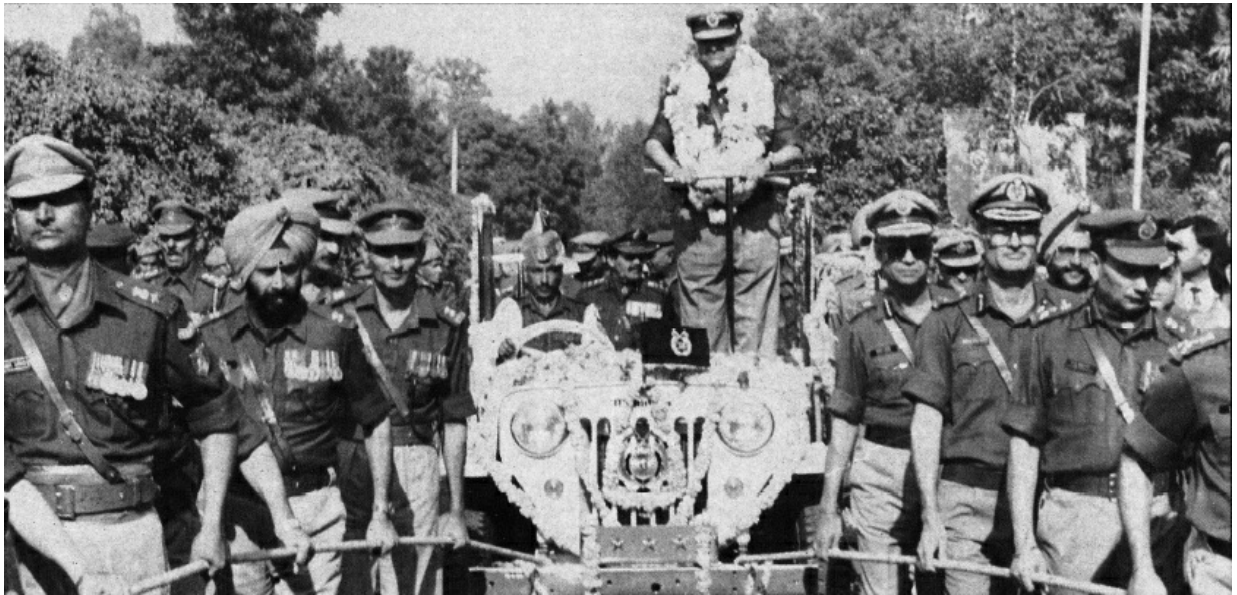
इस मौके पर उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए श्रीमती अल्वा ने इस दिशा में पहल करने के लिए के.रि.पु.बल महिला कल्याण बोर्ड की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि इनसे के.रि.पु.बल की महिलाओं, विधवाओं तथा अन्य लोगों को सर्जनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी तथा रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे। उन्होंने के.रि.पु.बल की महिलाओं को अपने संगठन में अधिक से अधिक जुड़ने का आह्वान किया और कहा कि उनके जुड़ने से फोर्स का मानवीय आधार उभर का सामने आयेगा।



श्रीमती अल्वा के.रि.पु. बल के शॉपिंग कॉम्प्लेक्स पूर्ति . की उपभोक्ता सामग्रियों का निरीक्षण करते हुए।
अन्त में के.रि.पु.बल महिला कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम सिंह ने मंत्री महोदया को कल्याण बोर्ड की ओर से एक स्मृति चिह्न भेंट किया।

भावना

श्री डी.पी.एन.सिंह को भावभीनी विदाई



के.रि.पु. बल के अधिकारी एवं कर्मचारी अपने महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को उनकी सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सदस्यों ने 30 नवम्बर '93 को अपने महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को उनकी सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई दी। इस मौके पर बल के नई दिल्ली ग्रुप केन्द्र में एक शानदार परेड का आयोजन किया गया जिसमें बल की महिला टुकड़ी सहित छः मार्चिंग दस्तों ने भाग लिया।

1957 बैच तथा राजस्थान कैडर के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री डी.पी.एन.सिंह एक वर्ष 10 माह तक के.रि.पु. बल के महानिदेशक रहे। उन के कार्यकाल में के.रि.पु.बल ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। उन्हीं के सेवाकाल के दौरान अस्थायी कम्पनियों का गठन बन्द किया गया, प्रशिक्षण बटालियनों की व्यवस्था की गई, नये ग्रुप केन्द्र स्वीकृत किये गये, रेपिड एक्शन फोर्स का गठन हुआ, के.रि.पु.बल के कथानक गीत की रचना की गई तथा उड़ीसा में के.रि.पु.बल ने सुरक्षा तथा संरक्षण के लिए एक वन का अंगीकरण किया।

इस मौके पर भावुक हो उठे। श्री डी.पी.एन.सिंह ने कहा कि के.रि.पु.बल जैसी गौरवपूर्ण फोर्स के नेतृत्व का उन्हें भार सौंपने के लिए वह केन्द्र सरकार के आभारी हैं। उन्होंने कहा कि विगत में के.रि.पु.बल ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। मगर उन्हें विश्वास है कि आगे आने वाली उपलब्धियों का प्रकाश उनको धूमिल कर देगा।

विगत में श्री डी.पी.एन.सिंह के महत्वपूर्ण पदभारों में उप महानिरीक्षक उदयपुर रेंज, महानिरीक्षक परिचालन सीमा सुरक्षा बल, महानिदेशक जेल राजस्थान तथा ब्यूरो आफ, पुलिस रिसर्च एंड डेवलपमेंट के महानिदेशक के पदभार शामिल हैं। श्री डी.पी.एन. सिंह को विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है। श्री सिंह अध्ययन तथा साहित्यिक गतिविधियों में गहन रुचि रखते हैं तथा उन्हें बाक्सिंग व हाकी में विशेष अभिरुचि है।

बल के अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने अगला आदेश मिलने तक श्री डी.पी.एन. सिंह से बल के महानिदेशक का कार्यवाहक पदभार ग्रहण किया। श्री त्रिपाठी 1961 बैच के उत्तर प्रदेश काडर के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी हैं।

संकेत

के.रि.पु.बल द्वारा उड़ीसा के वन का अंगीकरण



उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री बीजू पटनायक, के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह को वन के अंगीकरण से संबंधित ताम्रपत्र भेंट करते हुए।

भुवनेश्वर, उड़ीसा में 27 नवम्बर, 1993 को आयोजित एक भव्य समारोह के बीच उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री बीजू पटनायक ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक को बरबरा वन के अंगीकरण से संबंधित कागजात सौंपे।

लगभग 20 हजार एकड़ क्षेत्र में फैले इस संरक्षित एवं हरे भरे जंगल के संरक्षण एवं सुरक्षा का जिम्मा अब के.रि.पु.बल ने संभाल लिया है। इस मौके पर उड़ीसा के वन मंत्री श्री ए.पी.सिंह भी उपस्थित थे।

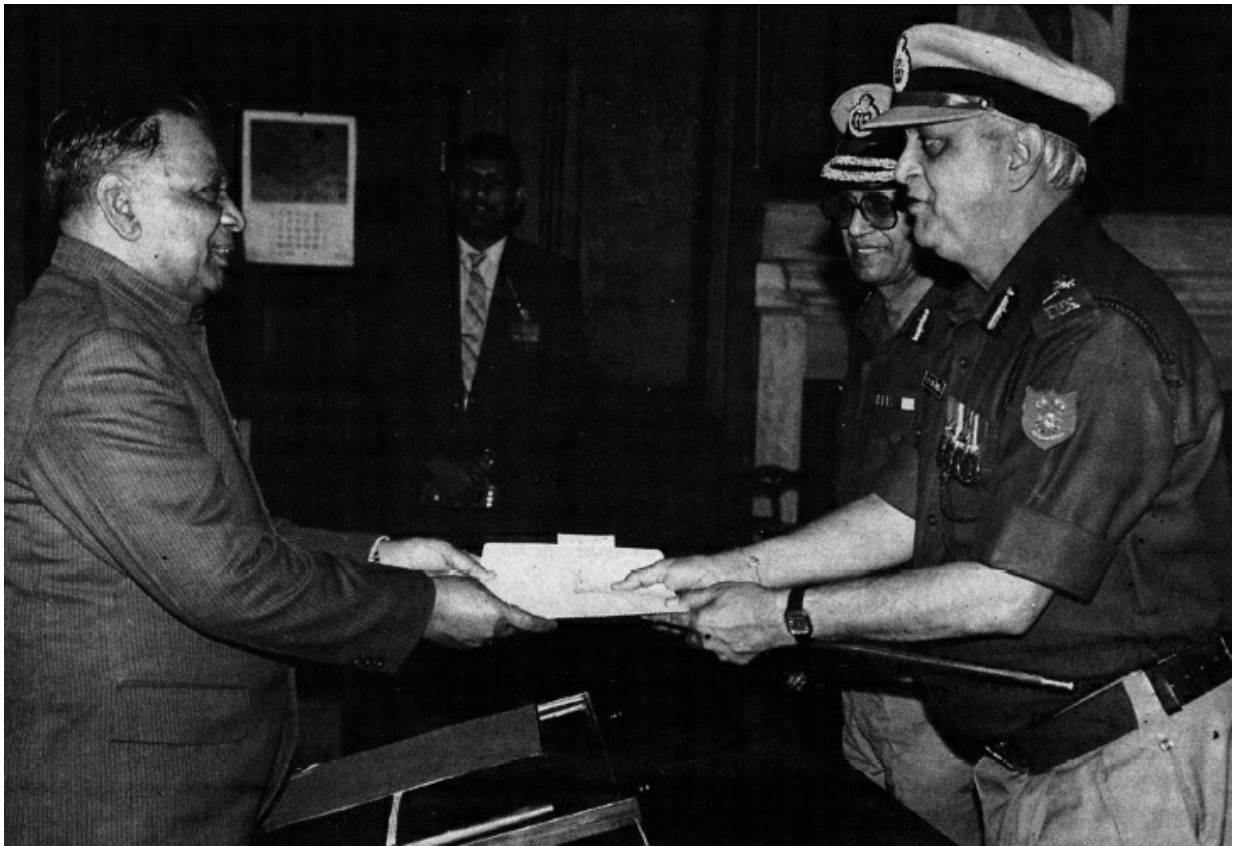
इस मौके पर अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा जन समुदाय के विशाल हुजूम को संबोधित करते हुए श्री बीजू पटनायक ने के.रि.पु.बल की अनुशासनात्मक एवं कर्तव्य के प्रति समर्पित सेवाओं की प्रशंसा करते हुए आशा व्यक्त की कि बल अपनी इस नई भूमिका में भी खरा उतरेगा।

इस मौके पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन सिंह ने उड़ीसा के मुख्य मंत्री को इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि उन्होंने इस सर्वथा नई भूमिका के लिए के.रि.पु.बल का चुनाव किया। उन्होंने मुख्य मंत्री को स्मृति चिह्न भी भेंट किया।

इस वन को एक लघु वन विहार के रूप में विकसित करने के अतिरिक्त के.रि.पु.बल साल एवं अन्य दुर्लभ वृक्षों के इस विशाल वन में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण भी करेगा। इस वन में पर्यावरण सुरक्षा के अतिरिक्त के.रि.पु. बल स्थानीय पुलिस को इस वन में हथियारबन्द तस्करों द्वारा की जाने वाली साल तथा टीक के पेड़ों की अवैध कटाई को रोकने में भी सहायता प्रदान करेगा। बल इस इलाके में अवैध रूप से शिकारियों द्वारा जानवरों की की जाने वाली हत्याओं पर रोक लगा कर उड़ीसा सरकार को इस वन के संरक्षण में सहायता प्रदान करेगा। इस वन में बल द्वारा सुरक्षा के लिए बनायी जाने वाली संतरी पोस्टों से इलाके के जन जातीय लोगों

को भी सुरक्षा प्रदान की जा सकेगी, जो कि अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से इन वनों पर निर्भर करते हैं।

राहत महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ितों को 38 लाख की सहायता



गृह मंत्री को सहायता राशि का चेक भेंट करते हुए महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह तथा अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में आये विनाशकारी भूकम्प के पीड़ितों की सहायतार्थ अपने एक-एक दिन के वेतन का योगदान देकर 38 लाख रुपये की राशि एकत्र की। बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन.सिंह ने अपर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी के साथ इस राशि का चेक 30 नवम्बर, 93 को प्रधानमंत्री के, महाराष्ट्र भूकम्प पीड़ित राहत कोष के लिए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण को भेंट किया।

बल के सदस्यों को ओर से दी गई इस राशे का चेक 2 दिसम्बर, 93 को श्री चव्हाण ने प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव को उनके राहत कोष के लिए भेंट किया।

ज्ञातव्य है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने भूकम्प की विनाश लीला के तत्काल बाद डाक्टरों का एक दल दवाईयों और अन्य चिकित्सकीय सहायताओं के साथ भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्रभावित क्षेत्रों में भेजा था, जिसने भूकम्प पीड़ितों को तत्काल बड़े पैमाने पर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराईं।

गौरव

वर्ष 1993 के पदक विजेता

राष्ट्रपति का शौर्यवीरता का पुलिस पदक

उपाधीक्षक विशम्भर सिंह (मरणोपरांत)

33 बटालियन

शौर्यवीरता के पुलिस पदक बार

कमांडेण्ट डी.ए. धनंजैया (66 बटा.), डिप्टी कमांडेण्ट वी.वी. सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल हरपाल सिंह (66 बटा.) तथा सहायक कमांडेण्ट रामपाल सिंह (76 बटा.)।

शौर्यवीरता के पुलिस पदक

सब इंस्पेक्टर सरजू पांडे (72 बटा.), कांस्टेबल एम.एन. गुंडले (72 बटा.), सब इंस्पेक्टर बजरंगी धर दूबे (3 बटा.), कांस्टेबल अब्दुल कलाम (84 बटा.), कांस्टेबल हरपाल सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल आर.के. पाटिल (66 बटा.), कांस्टेबल पी. सुधाकरन नायर (84 बटा.), सहायक कमांडेंट हरदेव सिंह (66 बटा.), लांस नायक मनफूल सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल सी. सी. दुरई (66 बटा.), कांस्टेबल बी.एन. यादव (66 बटा.), हैड कांस्टेबल टी.के. पदतारे (75 बटा.), कांस्टेबल महावीर प्रसाद (75 बटा.), कांस्टेबल पी. गिरीश (76 बटा.), कांस्टेबल यू.के. मंडल (76 बटा.), इंस्पेक्टर

सुरेंद्र सिंह (62 बटा.), लांस नायक वी. मोहन (64 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी एच.एस. नेगी (75 बटा.), हैड कांस्टेबल केशव बहादुर (75 बटा.), हैड कांस्टेबल लक्ष्मण राम (75 बटा.), लांस नायक महावीर प्रसाद (75 बटा.), कांस्टेबल राम निवास (75 बटा.) मरणोपरांत, कांस्टेबल सी.आर. मंजुनाथ (75 बटा.), कांस्टेबल जिले सिंह (84 बटा.), सहायक कमांडेंट पी.एस. राजोरा (10 बटा.), हैड कांस्टेबल जय करन सिंह (10 बटा.), कांस्टेबल सुनील मोचारी (10 बटा.), सब इंस्पेक्टर जुगल किशोर जोशी (13 बटा.), कांस्टेबल सतनाम सिंह (36 बटा.) तथा हैड कांस्टेबल रण सिंह (70 बटा.)।

गणतंत्र दिवस'93 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक

जी. झा
महानिरीक्षक (स्पेशल सेक्टर)

एम.एल.गुलेरिया
उप महानिरीक्षक (परिचालन)
(श्रीनगर)

गौरव सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

ग्रुप केंद्र गुवाहाटी के अपर उप महानिरीक्षक जे.बासनेट, आर.टी.सी.-2 आवड़ी (मद्रास) के प्रधानाचार्य आर.के.बी.शर्मा, कमांडेंट के.एस.वी. सुब्रह्मण्यन (3 सिगनल बटालियन), कमांडेंट मोहेंद्र सिंह सेठी (18 बटालियन), कमांडेंट बच्चन सिंह रावत (उप महानिरीक्षक रामपुर के स्टाफ अधिकारी), कमांडेंट सविंदर सिंह (87 बटालियन), कमांडेंट प्रीतम सिंह (अपर महानिदेशक उत्तर पश्चिम जोन कार्यालय), सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) नरेंद्र कुमार अवस्थी (महानिदेशालय), कमांडेंट दामोदरन (106 बटालियन), डिप्टी कमांडेंट इंदरजीत सिंह गिल (23 बटालियन), डिप्टी कमांडेंट लक्ष्मण सिंह नेगी (ग्रुप केंद्र हैदराबाद), सहायक कमांडेंट अनोखे लाल (25 बटालियन), सूबेदार मेजर लेख राज शर्मा (ग्रुप केंद्र इम्फाल), इंस्पेक्टर भूप सिंह (6 बटालियन), इंस्पेक्टर बट्टी प्रसाद शर्मा (99 बटालियन), इंस्पेक्टर रणबीर सिंह (27 बटालियन), सब इंस्पेक्टर नथी लाल (सिगनल ग्रुप केंद्र), सब इंस्पेक्टर भगत सिंह (1 बटालियन), हैड कांस्टेबल मूर्ति सिंह (1 बटालियन), हैड कांस्टेबल के. चेलाप्पन (13 बटालियन), हैड कांस्टेबल भीला नाथ (14 बटालियन), कांस्टेबल प्रीतम सिंह (75 बटालियन), कांस्टेबल तुलसीदास (6 बटालियन) तथा वाशरमैन सूरज राम

(72 बटालियन)।

स्वतंत्रता दिवस '93 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक

आर. सी. अग्रवाल
उप महानिरीक्षक
(अब महानिरीक्षक) परिचालन।

ई. एस. बख्तावर
उप महानिरीक्षक
(भोपाल)

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक ग्रुप केंद्र हैदराबाद-ए. गुहा राय, कमांडेंट आर.के. सिंह (11 बटालियन), कमांडेंट/सहायक निदेशक (प्रशासन) एस.एस. रावत महानिदेशालय, कमांडेंट/सहायक निदेशक (लेखा) एस.सी. शर्मा कार्यालय महानिरीक्षक मध्य सेक्टर लखनऊ, द्वितीय कमान अधिकारी एस. रामालिंगम 18 बटालियन/आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंट आबू, सहायक कमांडेंट वी. के. शर्मा आ.सु. अकादमी माउंट आबू, डा.पी.सी. साहू कमांडेंट/सीनियर चिकित्सा अधिकारी बेस अस्पताल-3, सूबेदार मेजर/कार्यालय अधीक्षक (कार्यालय अपर महानिदेशक उत्तर-पश्चिम क्षेत्र) हीरो गुरबानी, सूबेदार मेजर एम. गोपालकृष्णन (ग्रुप केंद्र हैदराबाद), सूबेदार मेजर/कार्यालय अधीक्षक (आं.सु. अकादमी) पी.एन. सिमलोटे, निरीक्षक घनश्याम (82 बटालियन), निरीक्षक (तकनीक) सुमेर सिंह (प्रथम बेंतार वाहनी), उप निरीक्षक शंकर दयाल सिंह (10 बटालियन), उप निरीक्षक प्रकाश चन्द (26 बटालियन), उप निरीक्षक ओम प्रकाश (ग्रुप केन्द्र रामपुर), उप निरीक्षक एन. गोपीकुटन्न नायर (110 बटालियन), उप निरीक्षक (परिवहन) प्रकाश चंद्र (आं.सु. अकादमी), हैड कांस्टेबल सुदामा राम (74 बटालियन), हैड कांस्टेबल एच.पी. दूबे (52 बटालियन), हैड कांस्टेबल हीरा सिंह (4 बटालियन), हैड कांस्टेबल योगेश्वर प्रसाद (88 बटालियन), कांस्टेबल (बिगुलर) एन.सी. जोन (ग्रुप केंद्र आवडी), कांस्टेबल अली अक्सर (10 बटालियन), कांस्टेबल पी. योहयनन (62 बटालियन), कुक एन.के. कुटी नायर (ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम), बारबर सुंदर लाल (67 बटालियन)।

पृष्ठभूमि

आंतरिक सुरक्षा अकादमी-एक परिचय

आंतरिक सुरक्षा अकादमी, राजस्थान की अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में एक पर्वतीय स्थल (1200 मीटर ऊंचे) आबू पर्वत में फरवरी, 1975 में स्थापित की गई थी। अकादमी राज्य पुलिस तथा केन्द्रीय पुलिस संगठनों के अधिकारियों के प्रशिक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह देश का एकमात्र संस्थान है जो विभिन्न ओहदों के राजपत्रित अधिकारियों के लिए आंतरिक सुरक्षा विषयों पर कोर्स संचालित करता है।

.. श्री आर.एस. मूशहारी, भा.पु.से., 7 मार्च, 1993 से इस अकादमी के निदेशक हैं। उन्होंने व्यवसायिक तथा अन्य संबंधित विषयों पर विभिन्न समाचार पत्रों के लिए अनेक लेखों का योगदान किया है। वे प्रशासन विकास अध्ययन हेतु मलेशिया, इण्डोनेशिया और सिंगापुर का भ्रमण कर चुके हैं।

प्रशिक्षण कोर्स

आंतरिक सुरक्षा अकादमी, के.रि.पु. बल के कार्मिकों के लिए विभिन्न कोर्सों के साथ ही साथ अखिल भारतीय स्तर पर आंतरिक सुरक्षा कोर्सों का आयोजन करती है। आंतरिक सुरक्षा अकादमी द्वारा चलाये जाने वाले कोर्सों का विवरण निम्नानुसार है :

के.रि.पु.बल कोर्स

कमाण्डेंट रिफ्रेशर कोर्स, उप कमाण्डेंट/वरिष्ठ सहायक कमाण्डेंट रिफ्रेशर कोर्स, सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी कोर्स, चिकित्सा अधिकारी कम्बेटाइजेशन कोर्स, 'राजपत्रित अधिकारी री-ओरिएन्टेशन कोर्स, कमाण्डो कोर्स, कम्पनी कमाण्डर रिफ्रेशर कोर्स, सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों का द्वितीय चरण प्रशिक्षण कोर्स, सिगनल/तकनीकी कैडर से आनुक्रमिक पुलिस अधीक्षकों के लिए री-ओरिएन्टेशन कोर्स, महानिदेशक द्वारा समय-समय पर यथा निर्धारित कोई अन्य कोर्स।

अखिल भारतीय स्तर के कोर्स

पुलिस अधीक्षकों एवं जिला मजिस्ट्रेटों के लिए आंतरिक सुरक्षा कोर्स
राज्यों के वरीष्ठ अधिकारियों और केन्द्रीय पुलिस संगठनों में 6 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके अधिकारियों तथा राज्यों के जिला मजिस्ट्रेटों एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेटों के लिए आंतरिक सुरक्षा, कोर्स।

पुलिस उप महानिरीक्षकों के लिए संगोष्ठियां।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर यथा निर्णित कोई अन्य कोर्स।



आंतरिक सुरक्षा अकादमी ने अब तक पुलिस उप महानिरीक्षकों के लिए 36 संगोष्ठियों, जिला मजिस्ट्रेटों/पुलिस अधीक्षकों के लिए 61 कोर्सों एवं राज्यों तथा केन्द्रीय संगठनों के उप पुलिस अधीक्षकों के लिए 122 कोर्सों का आयोजन किया है।

सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों का बुनियादी प्रशिक्षण

इसका उद्देश्य के.रि.पु.बल के सहायक कमाण्डेंटों, जो कि सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी (वर्ग अ) के रूप में नियुक्त होते हैं को बुनियादी प्रशिक्षण देना है। यह दो चरणों में आयोजित होता है, जिसके प्रथम चरण में जंगल कैम्प के तीन सप्ताह सहित 55 सप्ताहों में बुनियादी प्रशिक्षण पूरा होता है। एक वर्ष फील्ड में रहने के पश्चात् बुनियादी प्रशिक्षण के छह सप्ताहों के द्वितीय चरण में प्रशिक्षण के लिए अधिकारीगण आते हैं। इसके पाठ्यक्रम में ड्रिल, शस्त्र ड्रिल पी.टी., शैल आरोहण, बिना हथियार की लड़ाई, तैराकी, वाहन चालन, टाइपिंग, फील्ड क्राफ्ट तथा युद्धकला, हथियार प्रशिक्षण, विभिन्न हथियारों से फायरिंग, कानून प्रक्रिया, प्रशासन, प्रबन्ध, व्यवहारवादी विज्ञान आदि सम्मिलित हैं। अपना सफलतापूर्वक बुनियादी प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत 23वें बैच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी दिनांक 20 अगस्त, 1993 को पास आउट हुए, जिनकी दीक्षांत परेड की सलामी महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने ली।

रिफ्रेशर कोर्स

नये कौशलों, तकनीकों द्वारा ज्ञान प्रदान करते हुए प्रशिक्षणार्थियों की निष्पादन योग्यता को सुधारने के लिए इस अकादमी में अनेक कोर्स चलाए जाते हैं। ये कोर्स तीव्र गति से परिवर्तित होती हुई कार्य मांगों तथा भूमिका आशावादिता की चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाने हेतु सहभागियों को उनके मानसिक अनुभव स्तरों के विस्तार में सहायता करते हैं। अकादमी में चलाए जाने वाले कुछ मुख्य कोर्स हैं-

(अ) कमाण्डेंट रिफ्रेशर कोर्स

(ब) उप. कमाण्डेंट/वरिष्ठ सहायक कमाण्डेंट रिफ्रेशर कोर्स

(स) कम्पनी कमाण्डर रिफ्रेशर कोर्स

(द) सिगनलों तकनीकी कैडरों के अधिकारियों के लिए री-ओरिएन्टेशन कोर्स।

तथा चिकित्सा अधिकारी
कम्बटाइजेशन कोर्स
कमाण्डो कोर्स

आंतरिक सुरक्षा कोर्स

(अ) जिला मजिस्ट्रेटों/पुलिस अधीक्षकों के लिए आंतरिक सुरक्षा कोर्स

(ब) पुलिस उप अधीक्षकों के लिए आंतरिक सुरक्षा कोर्स

(स) पुलिस उप महानिरीक्षकों के लिए आंतरिक सुरक्षा संगोष्ठी

इस वर्ष पुलिस उप महानिरीक्षकों के लिए आंतरिक सुरक्षा संगोष्ठी का आयोजन 11 से 16 अक्टूबर '93 तक किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन अपर महानिदेशक श्री एस. वी. एम. त्रिपाठी ने किया। संगोष्ठी के मुख्य विषय थे बहुसंख्यक समाज में संघर्ष-आंतरिक सुरक्षा पर इसके प्रभाव और आंतरिक सुरक्षा प्रबंध-इनकी समस्याएं तथा संभावनाएं।

इन सब के अतिरिक्त अकादमी में समय-समय पर अनेक अतिथि वक्ताओं को भी आमंत्रित किया जाता रहता है। अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी अकादमी का दौरा करते रहते हैं। इस वर्ष अकादमी में आने वाले मुख्य व्यक्तियों में महाराष्ट्र के उप गृह एवं औद्योगिक श्रम मंत्री डा. राजेंद्र बी. गौड़, पंजाब के महानिदेशक श्री के. पी. एस. गिल, पंजाब के राज्यपाल श्री सुरेंद्र नाथ, राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य ज्ञान प्रकाश पिलानी तथा राजस्थान के राज्यपाल बलिराम भगत प्रमुख थे।

हिंदी दिवस के अवसर पर अकादमी में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए।

लेखा-जोखा

उत्तर पश्चिमी जोन

उत्तर पश्चिमी जोन के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न युनिटों ने इस वर्ष अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। इस सेक्टर की 74 बटालियन के हैड कान्स्टेबल सुदामा को इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया।

इस बटालियन ने 2 जनवरी, 93, को एक घर में छापा मार कर दो ए.के. 56 राइफलों सहित अन्य हथियार तथा भारी असला बरामद किया। 22 जुलाई, 93 को इसने श्रीनगर में दो कुख्यात आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा 3 अगस्त को श्रीनगर में ही फिर इसने काफी असला बरामद किया।

खेल के क्षेत्र में उत्तर पश्चिमी जोन के इंटर बटालियन बालीबाल मुकाबले में इस बटालियन ने दूसरा स्थान ग्रहण किया।

इस सेक्टर की 76 बटालियन की विभिन्न कंपनियां मेघालय, दिल्ली, इलाहाबाद बिहार तथा राजस्थान में कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए तैनात रहीं। खेल के क्षेत्र में भी इस बटालियन ने इंटर बटालियन मुकाबलों में मोटर वाहन प्रतियोगिताओं, कुश्ती तथा जूडो में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा जिमनास्टिक, बालीबाल, फर्स्ट एंड तथा कबड्डी में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

इस सेक्टर की 84 बटालियन की फरीदकोट में तैनात एक कम्पनी की 1 जनवरी को आतंकवादियों से हुई एक मुठभेड़ में खालिस्तान कमाण्डो फोर्स का स्वयंभू ले. जनरल राजवीर सिंह उर्फ जस्सी सिंह मारा गया तथा भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किया गया। यह बल की बहुत बड़ी सफलता थी।

25 अगस्त को इस बटालियन की एक कम्पनी ने दीमापुर नागालैण्ड में 13,000 रुपये लूटकर भाग रहे एक ओटोरिक्षा चालक को गिरफ्तार किया तथा 28 अगस्त को एफ कम्पनी की ही एक टुकड़ी ने चोरी कर ले जायी जा रही दो टुक लकड़ी बरामद की। 6 सितम्बर को इसी कम्पनी ने दीमापुर में एक घोषित अपराधी को गिरफ्तार किया। 5 सितम्बर को इस बटालियन की एफ कम्पनी ने दीमापुर में एक संदिग्ध आतंकवादी को गिरफ्तार किया।

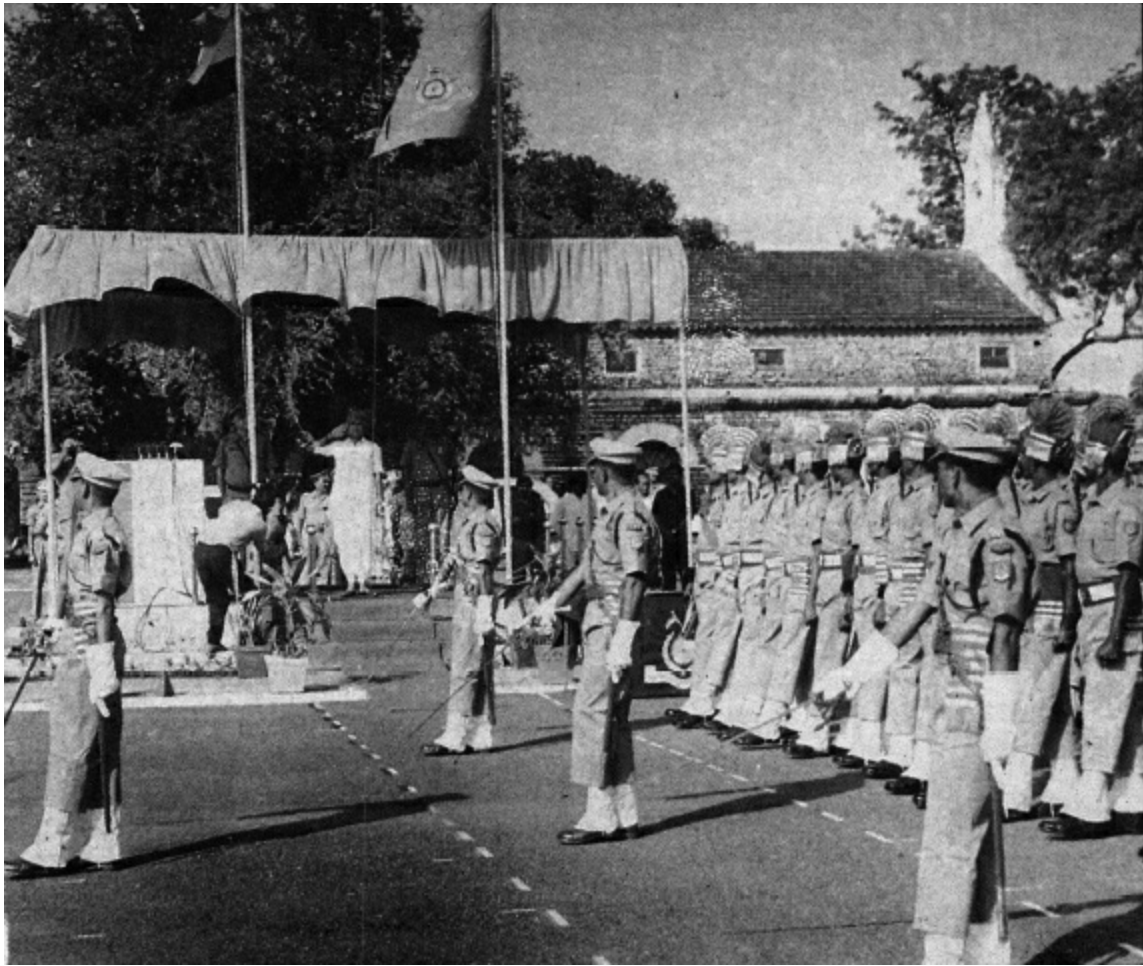
इस बटालियन के दो जवानों को इस वर्ष शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया।

इस सेक्टर की 86 बटालियन की 4 कम्पनियां इसके मुख्यालय थिजामा (कोहिमा) से लगभग 150 किलोमीटर दूर आतंकवादग्रस्त इलाकों में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए तैनात हैं। 8 जुलाई को इस पार्टी ने एक पेट्रोल टैंकर से लगभग 7 क्विंटल देशी गांजा बरामद किया। इनकी उपस्थिति से इलाके में अपेक्षाकृत शान्ति रही। इस सेक्टर की 96 बटालियन जो कि रोपड़, पंजाब में तैनात है-के जवानों के साथ 18 जनवरी, 93 को मुरीन्डा क्षेत्र में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में एक

कुख्यात आतंकवादी फकीर सिंह मारा गया।

21 मार्च को इसी क्षेत्र में बटालियन के जवानों की उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में बब्बर खालसा गुट के दो कुख्यात आतंकवादी मारे गए। 24 अप्रैल को कोटली गांव में इस बटालियन की ई कम्पनी के जवानों ने फिर बब्बर खालसा गुट के आतंकवादियों को घेरा। इस मुठभेड़ में फिर दो आतंकवादी मारे गए। 10 अगस्त को फतेहगढ़ साहिब में हुई मुठभेड़ में एक कुख्यात आतंकवादी मारा गया जिसके सिर पर 10 लाख रुपये का इनाम था मगर इस मुठभेड़ में बल के जवानों ने कई घातक हथियार तथा गोली बारूद बरामद किया।

दक्षिण सेक्टर



नीमच में स्थापना दिवस परेड की सलामी लेते हुए गृह राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दक्षिण सेक्टर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैदराबाद, मद्रास तथा नीमच रेंज आती हैं। श्री डी.आर.कार्तिकेयन इस सेक्टर के महानिरीक्षक हैं। इसी सेक्टर के अन्तर्गत पड़ने वाले ग्रुप केन्द्र हैदराबाद को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र घोषित किया गया है। हैदराबाद रेंज के तीन कार्मिकों को इस वर्ष विशिष्ट

सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किये गए।

आर.ए.एफ. की 99 बटालियन हेतु गाजुलारामारम, आन्ध्र प्रदेश में 50 एकड़ भूमि अधिगृहित की गई है।

युसुफगुडा हैदराबाद में पुलिस उप महानिरीक्षक के कार्यालय तथा स्थानीय कामिकों हेतु आवासों के निर्माण के संबंध में कार्रवाई, प्रगति पर है।

इस रेंज का परिचालन कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण आन्ध्र प्रदेश राज्य में फैला है। वर्ष 1993 में इस रेंज के अधीन 65 बटालियन की चार कम्पनियां तथा 109 बटालियन की चार कम्पनियां परिचालन कार्यों के लिए तैनात रहीं। इसके अतिरिक्त 90 तथा 113 बटालियन का मुख्यालय भी इसी रेंज में स्थित है। परिचालन के क्षेत्र में इन युनिटों के जवानों ने कानून व व्यवस्था बनाए रखने में विशेष उपलब्धियां हासिल कीं।

कल्याण कार्यक्रमों के क्षेत्र में भी इस रेंज ने रक्तदान शिविर के आयोजन के अतिरिक्त अन्य कई कार्यक्रम चलाए।

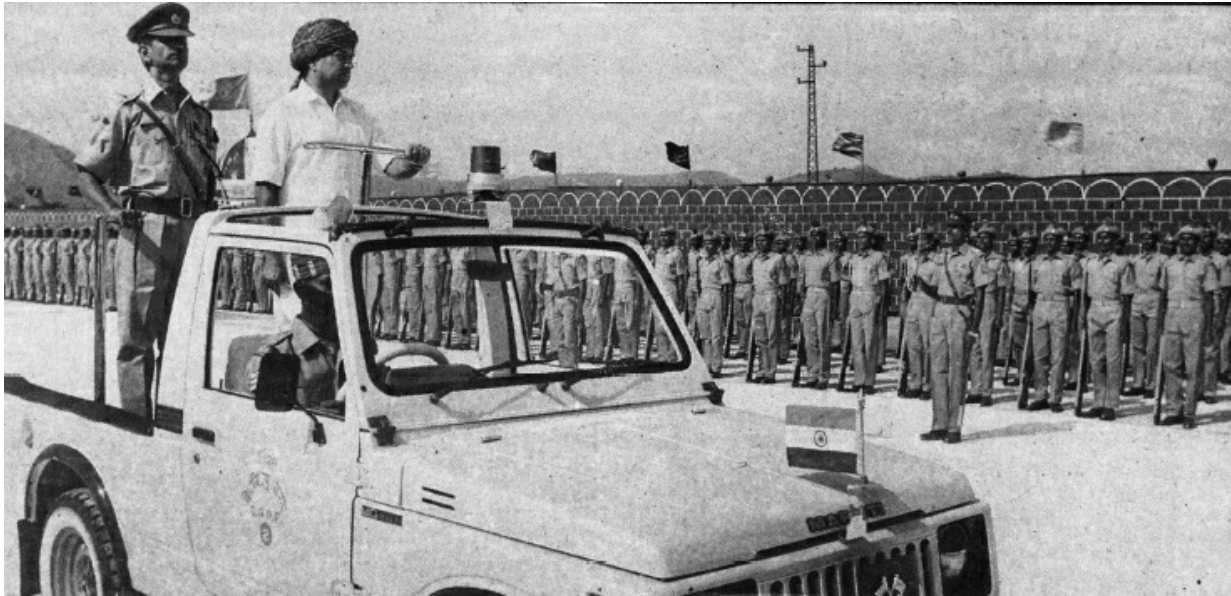
खेलकूद में भी हैदराबाद रेंज ने दक्षिण क्षेत्र की कुश्ती प्रतियोगिता जीत ली। कबड्डी प्रतियोगिता में भी हैदराबाद प्रथम रहा। बालीबाल, जिमनास्टिक, बास्केट बाल, हाकी तथा तैराकी प्रतियोगिताओं में इस रेंज को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ।

इस सेक्टर के अन्तर्गत आने वाला नीमच केन्द्र इस वर्ष अनेक गतिविधियों का केन्द्र रहा। वर्ष के प्रारंभ में राजधानी से गए पत्रकारों के एक बड़े दल ने नीमच का दौरा किया। देश के लगभग हर बड़े समाचार पत्र का प्रतिनिधि तथा रेडियो, दूरदर्शन की टीम इस दल में शामिल थी। इन पत्रकारों को महानिरीक्षक श्री कार्तिकेयन ने के.रि.पु.बल के इतिहास, कार्य पद्धति, प्रशिक्षण तथा जीवनचर्या के हर पहलू से परिचित कराया। उन्हें शूटिंग, निहत्थे लड़ाई, जिमनास्टिक, आतंकवादी मुठभेड़ों के सजीव प्रदर्शन, दिखाए गए।

इसी केन्द्र में पहली बार 27 जुलाई, 93 को के.रि.पु.बल का स्थापना दिवस मनाया गया। स्थापना दिवस परेड़ की सलामी आन्तरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट ने ली। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने प्रतिवर्ष नीमच में स्थापना दिवस मनाए जाने की घोषणा सहित अन्य कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। उन्होंने के.रि.पु.बल केन्द्रीय कल्याण निधि में 54 लाख रूपए का अनुदान देने की घोषणा भी की।

दक्षिण सेक्टर की बटालियनें देश के विभिन्न हिस्सों में तैनात हैं तथा इन्होंने परिचालन तथा खेलकूद के क्षेत्र में अपने-अपने इलाकों में विशेष उपलब्धियां हासिल की हैं। जवानों के कल्याण कार्यक्रमों में भी दक्षिण सेक्टर ने विशेष कार्य किए हैं। इस सेक्टर के ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम ने हिन्दी के क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल कर विशेष ख्याति पायी है।

स्पेशल सेक्टर



124 बटालियन की दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते हुए श्री राजेश पायलट

अर्द्धसैनिक बलों की बढ़ती हुयी मांग को देखते हुए सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए वर्ष 1991 में 20 नई बटालियनों के गठन की स्वीकृति दी। ये सभी बटालियनें प्रारंभ में अलग-अलग महानिरीक्षकों के दायित्व क्षेत्र में आती थीं, मगर बाद में प्रशासनिक नियंत्रण के लिए एक नए सेक्टर का निर्माण किया गया, यही सेक्टर स्पेशल सेक्टर कहलाता है। इसका मुख्यालय दिल्ली में हैं तथा इस के महानिरीक्षक श्री जी. झा है।

इन सभी बटालियनों ने अपना प्रशिक्षण 1992 के मध्य में सम्पूर्ण किया। आज ये सभी बटालियनें देश के विभिन्न हिस्सों में परिचालन ड्युटियों पर तैनात हैं तथा इस क्षेत्र में इन्होंने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं जिसमें खूखार आतंकवादियों की गिरफ्तारी तथा भारी मात्रा में हथियारों तथा गोली बारूद की बरामदगी शामिल है। इस वर्ष इस सेक्टर की 124 और 128 बटालियनों की दीक्षांत परेड भी संपन्न हुई। 124 बटालियन की जयपुर में हुई दीक्षांत परेड की सलामी आन्तरिक सुरक्षा राज्य मंत्री भी राजेश पायलट ने ली, जबकि 128 बटालियन की सलामी जालंधर, पंजाब में पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ने ली। 1992 में 124 तथा 128 बटालियनों के प्रशिक्षित जवानों को पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में कार्यरत बटालियनों में रिक्त पड़े स्थानों में स्थानान्तरित कर दिया गया था। तदुपरांत इन दोनों बटालियनों ने एक एक हजार रंगरूटों को प्रशिक्षण दिया जिनकी दीक्षांत परेड इस वर्ष सम्पन्न हुई।

वर्तमान में इस सेक्टर की सभी बटालियनें देश की आतंकवाद विरोधी, मुहिम तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने में अपना योगदान दे रही हैं।

खेलकूद के क्षेत्र में भी इस सेक्टर ने अपनी नवीन प्रतिभाओं के बल पर अपने लिए एक विशेष स्थान बनाया है। पिछले एक दो वर्षों में होने वाली के.रि.पु.बल की

हर खेल प्रांतीयोगेता में इस सेक्टर के युवा खिलाड़ियों का जोश और उत्साह दशकों को मोहित करता रहा है।

112 बटालियन के उपनिरीक्षक तिलक थापा का चयन टोक्यो जापान में होने वाली जीगारो कान कप अंतर्राष्ट्रीय जूडो चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए किया गया है। 112 बटालियन के ही कांस्टेबल सी.ए.भास्कर का चुनाव केन्द्रीय जिमनास्टिक टीम के लिए कर लिया गया है।

125 बटालियन ने जून, 93 में हुई अंतर बटालियन कुश्ती प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कल्याणकारी कार्यक्रमों तथा पर्यावरण के प्रति भी इस सेक्टर के नौजवान सजग हैं। इस सेक्टर की विभिन्न युनिटों ने अपने-अपने क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया है।

126 बटालियन के सिपाही जी.डी. नाहर सिंह ने अपनी जान पर खेल कर कुएं में डूब रही एक बालिका को मरने से बचाया। यह सुनते ही कि एक बच्ची कुएं में गिर गयी है, तैरना न जानते हुए भी नाहर सिंह कुएं में कूद पड़ा तथा काफी संघर्ष के बाद उस बच्ची को बचा लिया, मगर इस संघर्ष में नाहर सिंह खुद भी गंभीर रूप से घायल हो गया।

रेपिड एक्शन फोर्स

साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निपटने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 10 बटालियनों को रेपिड एक्शन फोर्स बटालियनों में तब्दील कर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। इस अक्टूबर में अपना प्रथम वर्ष पूर्ण करने वाली इस फोर्स ने अपने खाते में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां दर्ज की हैं।

मात्र एक साल के कार्यकाल में इस फोर्स के तीन कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक, 15 कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा 2 कार्मिकों को महानिदेशक के प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया जा चुका है।

इस वर्ष आर.ए.एफ. की दिल्ली स्थित 103 बटालियन स्थल पर इंटर सेक्टर क्रास कन्टी रेस का आयोजन किया गया, जिसमें बल की सभी 10 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में उत्तर पश्चिमी जोन प्रथम, स्पेशल सेक्टर तथा दक्षिण सेक्टर द्वितीय तथा दक्षिण सेक्टर तृतीय स्थान पर रहा। प्रतियोगिता का उद्घाटन आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सी.पाल सिंह ने किया तथा उन्होंने ही प्रतियोगिता के अन्त में विजेताओं को पुरस्कार भी दिए।

हालांकि आर.ए.एफ. के रि.पु.बल के सब सेक्टरों में सबसे नया तथा मात्र एक वर्ष की आयु का सेक्टर है, मगर फिर भी के.रि.पु.बल के अंतर सेक्टर मुकाबलों में इस का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा है। इस वर्ष मोटर वाहन प्रतियोगिताओं में इसे प्रथम स्थान, कबड्डी में प्रथम स्थान, शूटिंग में द्वितीय स्थान, वालीबाल में तृतीय स्थान तथा दौड़कूद, तैराकी, जिमनास्टिक तथा हाकी में चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

आर.ए.एफ. के 48 कार्मिकों ने वधा के सेन्टर आफ साइन्स फोर विलेजस् में कम लागत के घर बनाने की विधि का प्रशिक्षण लिया। इस तरह के घर का निर्माण 103 बटालियन स्थल पर किया गया जिसका उद्घाटन 20 जुलाई, 93 को बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने किया।

इस जुलाई में पूर्वी दिल्ली में आई भयंकर बाढ़ से न केवल नागरिक आबादी के कई घर तबाह हो गए अपितु आर.ए.एफ. की 103 तथा 99 बटालियन के कैम्प भी बाढ़ के जल में डूब गए। आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सी.पाल. सिंह ने दिल्ली के मुख्य सचिव तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिल कर कई राहत कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई तथा आर.ए.एफ. कार्मिकों ने सुचारू रूप से व्यापक स्तर पर राहत, पुनर्वास तथा चिकित्सीय कार्यों में भाग लिया। आर.ए.एफ. के जवानों के इस कार्य ने उस क्षेत्र के रहने वाले लोगों के बीच उसे बेहद लोकप्रिय बना दिया।

आर.ए.एफ. की विभिन्न युनिटों ने इस वर्ष वर्षाकाल में अपने-अपने क्षेत्रों में 15,000 से अधिक वृक्षों का वृक्षारोपण कर अपने क्षेत्र को हरा भरा बनाने के लिए एक मुहिम का प्रारम्भ किया।

आर.ए.एफ. की 103 बटालियन ने इस वर्ष जुलाई माह में आर.ए.एफ. कार्मिकों के परिवारों के लिए एक परिवार कल्याण केन्द्र की स्थापना की। इसका उद्घाटन 10 जुलाई, 93 को बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने किया। इस मौके पर उन्होंने बल के 10 कार्मिकों की पत्नियों को सिलाई मशीनें भेंट की तथा श्रीमति डी.पी.एन.सिंह ने श्रीमति सरस्वती देवी को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु महिला का पुरस्कार प्रदान किया।

प्रौढ़ शिक्षा के सम्बन्ध में भी आर.ए.एफ. के कार्मिक जागरूक हैं। आर.ए.एफ. की 103 बटालियन स्थल पर एक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र कार्य कर रहा है, जहां बल के कार्मिकों के अशिक्षित परिजनों को बटालियन के अधिकारियों की पत्नियां शिक्षा देती हैं।

इस वर्ष 7 अक्टूबर, 93 को अलीगढ़ स्थित आर.ए.एफ. की 104 बटालियन स्थल पर आर.ए.एफ. का प्रथम स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर आयोजित भव्य परेड की सलामी बल के महानिदेशक श्री डी.पी.एन. सिंह ने ली तथा उन्होंने हिंसा पर उतारू उत्तेजित छात्रों की भीड़ पर काबू पाने के आर.ए.एफ. के कौशल के प्रदर्शन को भी देखा। इस मौके पर उन्होंने बल के 30 कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किए। आर.ए.एफ. ने इस वर्ष 20 अगस्त से 5 सितम्बर तक नई दिल्ली में आर.ए.एफ. उपमहानिरीक्षक के कार्यालय में सद्भावना दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम भी आयोजित किए।

आर.ए.एफ. आज देश के लिए कितनी महत्वपूर्ण फोर्स है इसका अन्दाजा प्रधानमंत्री के इस वक्तव्य से लगाया जा सकता है जो कि उन्होंने 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए दिया। उन्होंने कहा कि “मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमने कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए अपने पुलिस बलों में

आर.ए.एफ. का गठन किया है। इस फोर्स को 5 बटालियनों प्राशिक्षणरत हैं। हम दंगों पर तेजी तथा सफलता से काबू पाने के लिए विशेष रूप से संगठित तथा प्रशिक्षित इन बटालियनों की संख्या और अधिक बढ़ाना चाहते हैं। इस फोर्स को अन्य पुलिस बलों की अपेक्षा विशेष प्रशिक्षण दिया गया है।”

उत्तर-पूर्वी सेक्टर

देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में बल की इकाईयों की प्रशासनिक एवं परिचालन सम्बन्धी व्यवस्थाओं के लिए स्थापित उत्तर-पूर्वी सेक्टर ने इस वर्ष बल के कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण एवं कल्याण से संबंधित कई कार्यक्रम चलाए। ग्रुप केन्द्र गोहाटी, दीमापुर तथा इम्फाल में सीधे नियुक्त ड्राइवरों के लिए ड्राइवर तथा मैकेनिक कोर्स चलाया गया। सेक्टर के सभी ग्रुप केन्द्रों में बेसिक बिगुलर कोर्स चलाया गया। गोहाटी, खटखटी तथा इम्फाल में बल की 77 कम्पनियों को पी-इन्डक्शन रोटेशनल ट्रेनिंग दी गई। ग्रुप केन्द्र इम्फाल में मंत्रालियक तथा अस्पताल के स्टाफ के लिए कोर्स चलाए गए। गोहाटी में गैस तथा इलेक्ट्रिक वैल्डिंग का कोर्स चलाया गया। बेस अस्पताल, गोहाटी में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी कोर्स चलाया गया तथा बल में होने वाली आकस्मिक मौतों की रोकथाम तथा उचित चिकित्सीय देखभाल संबंधित कोर्स का संचालन भी किया गया।

इस दौरान बल के जी.डी. कार्मिकों की व्यावसायिक दक्षता को बढ़ाने के लिए उन्हें रोटेशनल तथा प्री-इन्डक्शन ट्रेनिंग देने पर जोर दिया गया। इसके लिए पुलिस तथा जन सम्पर्क व मानव अधिकारों के सिद्धान्तों जैसे विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए जहां कहीं किसी कम्पनी को प्रशिक्षण के मुक्त नहीं किया जा सका वहां उसके लिए उसकी कार्यस्थली पर ही इस प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई ताकि उसके कार्मिक नये हथियारों तथा उनकी परिचालन की नवीन विधियों से अवगत हो सकें।

यह सेक्टर उत्तर पूर्व में स्थित बल की युनिटों को वस्त्र, उपकरण, हथियार, तथा अन्य सामग्री सप्लाई करने के लिए एक डिपो का संचालन भी करता है। आन्दोलन, बन्द तथा बाढ़ जैसी विभिन्न रुकावटों के बावजूद इस डिपो ने उत्तर पूर्व में स्थित बल की युनिटों की सप्लाई लाईन को बनाये रखा। इस सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम.पी.सिंह ने स्वयं इस सेक्टर के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न युनिटों तथा बटालियनों का दौरा कर प्रशासनिक तथा परिचालन संबंधी कार्यों का विश्लेषण किया। इस बल की युनिटें उत्तर पूर्वी क्षेत्रों के अतिरिक्त पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में भी तैनात हैं।

इस सेक्टर ने इस वर्ष खाली पड़ी रिक्तियों के भरने के लिए लिए भी विशेष कदम उठाए।

इस वर्ष इस सेक्टर के 6 कार्मिकों , को विशिष्ट सेवाओं के पलिस पदकों से सम्मानित किया गया।

इस सेक्टर के ग्रुप केन्द्रों में बल के कार्मिकों के परिजनों के लिए आवास,

चाँकेत्सा, शिक्षा तथा मनोरंजन के लिए अनेक कदम उठाये गए। इस क्षेत्र के ग्रुप केंद्रों ने कर्तव्य पर मारे गए बल के कार्मिकों के परिजनों की कठिनाइयों से अर्वगत होने के लिए कल्याण सप्ताहों का आयोजन किया। इस सेक्टर ने मिजोरम में आई.टी.आई. तथा पोलिटेक्निक में बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए स्थान आरक्षित कराने के सम्बन्ध में भी प्रयास किया।

परिचालन के क्षेत्र में इस सेक्टर की बटालियनों में नागालैण्ड तथा मणिपुर में विद्रोहियों के विरुद्ध कठिन परिस्थितियों में लड़ते हुए विशेष सफलताएं प्राप्त की हैं। इन क्षेत्रों में उसकी कुछ उल्लेखनीय सफलताओं में मई, 93 में इम्फाल में भड़के साम्प्रदायिक दंगों के दौरान निभाई गई उसकी भूमिका है। ई/127 बटालियन के सहायक कमान्डेन्ट हरपाल सिंह ने 4 बसों तथा 3 टुकों में सवार एक विशेष समुदाय के लोगों को उस समय बचा लिया जबकि वे दूसरे समुदाय के हिंसा पर उतारू 5,000 से अधिक लोगों द्वारा घेर लिए गए थे। श्री हरपाल सिंह ने यह सफलता बिना गोली चलाए हासिल की।

27 अगस्त, 93 को दिन दहाड़े इम्फाल के तारा बाजार में 119 बटालियन के जवानों पर आतंकवादियों ने घात लगाई। बल के जवानों ने वीरता से उनका मुकाबला किया तथा इस मुकाबले में 3 आतंकवादी मारे गए। लेकिन इस सफलता के एवज में बल को अपने दो वीर सिपाहियों की जान से हाथ धोना पड़ा।

इनके अतिरिक्त 13 और 117 बटालियन की टुकड़ियों ने एक-एक आतंकवादी को पकड़ा तथा 13 बटालियन की ही टुकड़ी ने दीमापुर में एक आतंकवादी को गिरफ्तार किया। 117 बटालियन की एक टुकड़ी ने मोन में एक आतंकवादी गिरफ्तार किया। 13 बटालियन की एक टुकड़ी ने दो व्यक्तियों को जाली करेंसी के साथ गिरफ्तार किया। 13 तथा 67 बटालियन को एक टुकड़ी ने एक घर की तलाशी के दौरान तीन एन.एस.सी.एन (के) के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया तथा 16 बटालियन की टुकड़ी ने मणिपुर के गांव मतभंग में के.एन.एफ. के संस्थापक अध्यक्ष नेहलूम किपगोन को एक मुठभेड़ में मार गिराया, उसके सिर पर 10,000 का इनाम था। इनके अतिरिक्त पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में स्थित इस सेक्टर की बटालियनों ने भी परिचालन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की हैं।

केन्द्रीय सेक्टर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नये सेक्टरों में से एक है। श्री एस.सी.चौबे इस सेक्टर के महानिरीक्षक हैं। उत्तर प्रदेश में तैनात बल की युनिटों का दायित्व इस सेक्टर के पास है।

प्रशासन तथा कल्याण के क्षेत्र में -इस सेक्टर ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। इस सेक्टर की 62 बटालियन की सभी मैसों को इस वर्ष खाना पकाने की गैस के कनेक्शन उपलब्ध करा दिए गए हैं। सदस्यों के ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजन के लिए ग्रुप

केन्द्र रामपुर में एक डिश एंटीना लगाया गया है।

इस वर्ष ग्रुप केन्द्र रामपुर में मंत्रालियक तथा अस्पताल के स्टाफ के लिए बेसिक कोर्स भी चलाया गया।

खेल के क्षेत्र में इंटर सेक्टर मुकाबलों में इस सेक्टर ने कुश्ती प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान तथा मोटर परिवहन, निशानेबाजी व जिमनास्टिक प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

परिचालन के क्षेत्र में इस सेक्टर की 62 बटालियन की अप्रैल माह में पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई दो मुठभेड़ों में एक आतंकवादी मारा गया तथा ए.के.56 राइफल, एक पिस्टल तथा रिवाल्वर सहित भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किया गया। — इस सेक्टर की पंजाब स्थित 7 बटालियन की अप्रैल माह में आतंकवादियों के साथ हुई तीन मुठभेड़ों में दो आतंकवादी मारे गए तथा दो को गिरफ्तार किया गया। इन मुठभेड़ों में बटालियन के जवानों ने एक ए.के.47 राइफल सात अन्य रायफलें, माउजर तथा एक वायरलैस सेट सहित अन्य विध्वंसक सामग्री बरामद की।

इस सेक्टर की गोहाटी स्थित 124 अग्निलरी बटालियन ने चार तलाशी अभियानों के दौरान काफी मात्रा में नकदी, विध्वंसक पदार्थ, हथियार तथा नशीले द्रव्यों सहित अन्य सामग्री बरामद की।

इस सेक्टर की पंजाब स्थित 80 बटालियन की आतंकवादियों के साथ हुई चार मुठभेड़ों में 17 आतंकवादी मारे गए तथा आठ ए.के.47 राइफलें, तीन ए.के.74 राइफलें, चार मशीनगन, एक राइफल तथा चार पिस्तौलों/रिवाल्वरों सहित भारी मात्रा में अन्य विध्वंसक सामग्री, गोली बारूद तथा हथियार बरामद किये। इन मुठभेड़ों में बल के दो कार्मिक भी घायल हुए।

उत्तरी सेक्टर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उत्तरी सेक्टर का मुख्यालय नई दिल्ली में होने के कारण यह सेक्टर के.रि.पु.बल की मुख्य गतिविधियों का केन्द्र रहता है। वर्तमान में इस सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम.एस. यादव हैं। इस सेक्टर ने कल्याण के क्षेत्र में कई कार्यक्रम शुरू किये हैं। बल के नई दिल्ली बेस अस्पताल तथा आर.के. पुरम अस्पताल में दो होम्योपैथी डाक्टरों की व्यवस्था की गई है। इस सेक्टर की प्रायः हर युनिट को टी.वी. तथा वी.सी.आर. उपलब्ध कराये गये हैं।

खेल के क्षेत्र में भी इस सेक्टर की टीम कुश्ती तथा बास्केट बॉल टूर्नामेंट में प्रथम रही। इस सेक्टर के तीन कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गये तथा सात कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा पत्र प्रदान किये गये।

इसे सेक्टर की 85 बटालियन की कुछ टुकड़ियां अरूणाचल प्रदेश के ऐसे इलाकों में तैनात हैं जहां का सड़क मार्ग केवल महीने दो महीने के लिए ही खुला

रहता है। इन इलाकों के लिए वायु सम्पर्क न होने के कारण इस वर्ष जनवरी '93 माह में बटालियन की “ए” और “ई” कम्पनी के जवानों ने कुछ दूर तक जीपों पर तथा लगभग 44 किलोमीटर तक बर्फ में चलकर अपनी पीठ पर 20 किलो के राशन के बैग लाद कर अपने साथियों तक राशन पहुंचाया। अरूणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री फरवरी, 93 में हुनली तथा रोईंग स्थित ऐसी ही दो पोस्टों पर गए तथा वहां तैनात बल के जवानों के कार्य से प्रभावित होकर उन्हें नकद पुरस्कार प्रदान किये।

परिचालन के क्षेत्र में इस सेक्टर की बटालियनों ने कई उपलब्धियां हासिल की। इस सेक्टर की तीन बटालियन ने मई माह में पंजाब में दो कुख्यात आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। 19 बटालियन की एक टुकड़ी के साथ जम्मू में हुई आतंकवादी मुठभेड़ में दो कुख्यात आतंकवादी मारे गये तथा ए.के. 56 राइफल तथा एक स्पेन निर्मित पिस्तौल बरामद की गई। इस सेक्टर की 13 बटालियन की एक टुकड़ी ने दीमापुर में तीन अपहर्ताओं के चुंगल से एक लड़के को बचाकर तीनों अपहर्ताओं को गिरफ्तार किया 40 बटालियन की एक टुकड़ी के साथ पंजाब के मण्ड एरिया में हुई एक आतंकवादी मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए। इस सेक्टर की 38 और 47 बटालियन की टुकड़ियों ने तलाशी अभियान के दौरान श्रीनगर में एक आतंकवादी को गिरफ्तार कर सजीव ग्रेनेड बरामद किए। आबोहर पंजाब स्थित 55 बटालियन की एक टुकड़ी की मार्च माह में आतंकवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने कई - घातक हथियार तथा विध्वंसक सामग्री भी बरामद की।

पश्चिमी सेक्टर



नांदेड में सी.टी.सी.-3 का शिलान्यास करते हुए गृह मंत्री श्री एस. बी. चव्हाण

के.रे.पु.बल का पांश्वेमी सेक्टर के.रे.पु.बल के नवानोमैत सेक्टरों में से एक है। श्री एस.एन.माथुर इस सेक्टर के महानिरीक्षक हैं। इस सेक्टर के तत्वाधान में इस वर्ष नान्देड़ में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण ने बल के तृतीय केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज की नींव रखी। इस वर्ष के प्रारम्भ में बम्बई में भड़के साम्प्रदायिक दंगों को शान्त करने में भी इस सेक्टर की भूमिका अहम रही।

इस सेक्टर की 24 बटालियन के कमान्डेन्ट श्री आर.एस.साहनी को वर्ष 1992-93 की हिन्दी डिक्टेसन प्रतियोगिता का प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। अंतर सेक्टर प्रतियोगिताओं की निशानेबाजी प्रतियोगिता में इस बटालियन ने प्रथम, क्रास कन्टी तथा कुश्ती प्रतियोगिता में द्वितीय तथा प्राथमिक उपचार में तृतीय स्थान प्राप्त किया। ईटानगर में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में इस बटालियन की टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया तथा उसे अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल ने एक शील्ड प्रदान की।

इस सेक्टर की 29 बटालियन की एक टुकड़ी की 7 जनवरी, 93 को आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में 10 आतंकवादी मारे गए। जिसमें दशमेश रेजीमेंट तथा भिंडरावाले टाइगर्स फोर्स का एक एक मुखिया तथा दो अन्य खूखार आतंकवादी शामिल थे। इनसे भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किए गये। यह एक बहुत बड़ी सफलता थी। 22 फरवरी को फिर आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में खालिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय गोरिल्ला फोर्स के एक मुखिया और उप मुखिया सहित 3 आतंकवादी मारे गए। 26 मार्च को हुई एक अन्य मुठभेड़ में एक स्वयंभू ले. जनरल तथा एरिया कमान्डर मारा गया। 2 मई को फिर एक मुठभेड़ में स्वयंभू ले. जनरल मारा गया। इन सभी मुठभेड़ों में भारी मात्रा में हथियार तथा गोली बारूद बरामद किये गए।

इस सेक्टर की 30 बटालियन ने 27 फरवरी को 30 किलो गांजे के साथ गिरफ्तार कर 30 व्यक्तियों को दीमापुर पुलिस को सौंप दिया। 27 फरवरी को ही फिर इस बटालियन की 'सी' कम्पनी के जवानों ने एक व्यक्ति को अवैध हथियारों सहित गिरफ्तार किया।

इस सेक्टर की 73 बटालियन की करतार पुर पंजाब में 11 मार्च, 93 को आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में एक कुख्यात आतंकवादी मारा गया तथा बल का एक जवान भी वीरगति को प्राप्त हुआ। इस बटालियन की कुछ कम्पनियां तराई में आतंकवाद विरोधी अभियान में तैनात की गई थीं। 24 जून को नैनीताल जिले के हजीरा गांव में एक फार्महाउस की तलाशी लेते हुए आतंकवादियों से मुठभेड़ हो गई। बल के जवानों द्वारा तत्काल कार्रवाई करने से एक आतंकवादी मारा गया तथा उसके पास से हथियार व अन्य विस्फोटक सामग्री प्राप्त की गई। इस सेक्टर की, 79 बटालियन ने 16 जून को 12 बम बरामद कर किसी अनहोनी घटना को होने से टाल दिया। इसी सेक्टर की 97 बटालियन ने भी समय पर कार्रवाई कर 5 अप्रैल को भारी विध्वंसक सामग्री बरामद की। इस बटालियन ने पश्चिमी क्षेत्र अंतर बटालियन बास्केट बाल, शूटिंग, हाकी तथा जूडो प्रतियोगिता में

प्रथम स्थान हासिल किया। इस सेक्टर की 64 बटालियन ने साल भर में आतंकवादियों के साथ हुई 12 मुठभेड़ों तथा तलाशी अभियानों में भारी मात्रा में हथियार तथा असला बरामद किया।

पूर्वी सेक्टर



इन्टर सेक्टर फुटबाल प्रतियोगिता की ट्रॉफी ग्रहण करती हुई पूर्वी सेक्टर की टीम केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पूर्वी सेक्टर ने परिचालन, प्रशासन तथा खेलकूद के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएं हासिल की हैं। लगातार तीसरे साल 53वीं वार्षिकोत्सव परेड में इस सेक्टर के मार्चिंग दस्ते को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ी घोषित किया गया। हालांकि इस सेक्टर की अधिकांश बटालियनें अपेक्षाकृत शांत स्थलों पर तैनात हैं, फिर भी पंजाब स्थित 66 बटालियन को परिचालन के क्षेत्र में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ बटालियन घोषित किया गया। इस सेक्टर की कमान महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद के हाथों में हैं।

इस सेक्टर की 39, 43, 66, 93 और 94 बटालियनें पंजाब के अपेक्षाकृत शांत इलाकों में तैनात हैं। फिर भी इन बटालियनों के जवानों ने कई दुर्दांत आतंकवादियों को पकड़ा है तथा भारी संख्या में हथियार तथा गोली बारूद बरामद किया है।

इस सेक्टर की 10 और 83 बटालियन पूर्वोत्तर क्षेत्र में तैनात है, जहां इन बटालियनों के जवानों ने भारी संख्या में उल्फा आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है तथा उनसे भारी मात्रा में लूटी गयी सामग्री बरामद की है।

अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा पूर्वी सेक्टर की एक ओर विशेषता है। त्रिपुरा और सिक्किम के राजभवन, पंजाब, के, विधायक और मंत्री तथा असम के मुख्यमंत्री

को सुरक्षा के लिये इसी सेक्टर के जवान तैनात हैं।

इस सेक्टर की 38 बटालियन के कांस्टेबल मानिक हट्टी के साहसपूर्ण कारनामे से इस सेक्टर तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नाम रोशन हुआ है। कश्मीर में अपनी तैनाती के दौरान उसने उच्च श्रेणी के साहस, कर्तव्यपरायणता, निष्ठा तथा कर्म के प्रति प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए अपनी जान पर खेल कर झेलम नदी में डूबते हुए चार युवकों को बचा लिया। इस प्रकार के रि.पु.बल के जवानों ने कश्मीर के स्थानीय नागरिकों के सामने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि मानक जीवन की रक्षा के लिए वे अपनी जान पर खेलने से भी नहीं हिचकते।

पंजाब स्थित 39 बटालियन के जवानों ने उस वक्त पंजाब विद्युत बोर्ड के कई कार्मिकों की जान बचाई जबकि वे एक ट्रांसफार्मर में आग लग जाने के कारण बुरी तरह घिर गए थे। इस प्रकार इस बटालियन के जवानों ने तीन बहुमूल्य जीवन बचा लिए। निस्संदेह यह साहस तथा समर्पण से भरा एक सराहनीय कार्य था जिसकी स्थानीय नागरिकों तथा प्रशासन ने भरपूर प्रशंसा की।

इस सेक्टर की 43 बटालियन के जवानों ने अपना एक दिन का वेतन बाढ़ पीड़ितों की सहायताार्थ पंजाब के मुख्यमंत्री के राहतकोष में दान कर दिया।

हमेशा की तरह इस वर्ष भी पूर्वी सेक्टर क्रीड़ा क्षतिज पर छाया रहा। फुटबाल तथा जिमनास्टिक की चैंपियनशिप इसी सेक्टर के पास है। क्रीड़ा के अन्य क्षेत्रों में भी इनकी भूमिका तथा उपलब्धियां उल्लेखनीय रही हैं।

इस सेक्टर के 8 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए। 3 कार्मिकों को स्वतंत्रता दिवस 1993 के अवसर पर विशिष्ट सेवाओं के लिए तथा 10 राजपत्रित अधिकारियों तथा 4 अन्य कार्मिकों को 53 वें वार्षिकोत्सव पर महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा पत्र प्रदान किये गए।

काफी समय से महसूस किए जा रहे सामूहिक प्रशिक्षण के तहत 10, 83 तथा 93 बटालियन ने इस वर्ष प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस सेक्टर ने ड्राइवरों तथा मैकेनिकों के लिए दो स्पेशल कोर्स चलाये। तथा अस्पताल के ग्रुप “सी” और “डी” स्टाफ के लिए भी दो कोर्स चलाए। यह सेक्टर मंत्रालियक स्टाफ को भी प्रशिक्षित करता है।

इस वर्ष इस सेक्टर ने 478 रंगरूट भर्ती किए। इस सेक्टर ने इस वर्ष 141, 142, 143 तथा 144 अस्थायी बटालियन भी खड़ी की।

इस सेक्टर की 70 बटालियन को वर्ष 1992-93 के लिए पंजाब स्थित सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन घोषित किया गया है।

पंजाब

पंजाब अपने लम्बे, काले, आतंक, त्रास, हिंसा और अशांति के दौर के बाद अब एक निश्चित चैन भरी, सुखद भविष्य का आभास देती नए दौर की सुबह में सुख

समृद्धि से पारंप्रण जीवन के सपनों में खोया अंगड़ाइयां लेता जाग रहा है।

पिछले साल अपने वार्षिकोत्सव अंक में हमने पंजाब के दौर से लौटने के बाद तैयार की गई रिपोर्ट में लिखा था कि पुलिस को आतंकवादी के विरुद्ध संघर्ष में मिल रही सफलताओं के कारण पंजाब के नागरिकों में फिर से आत्मविश्वास लौटने लगा है। लोग अब अपने घरों से डरे सहमे बाहर नहीं निकलते। उस दौरे में कई गांवों के सरपंचों ने हमसे कहा था कि यदि पुलिस इसी प्रकार कार्य करती रही, तो यह असंभव नहीं कि अगले साल छः महीने के अंदर ही पंजाब एक बार से अपनी उसी पुरानी खुशहाल और मदमस्त जिन्दगी में लौट आए। हमें खुशी है कि पंजाब के नागरिकों की यह आशा पूर्ण हुई और एक बार फिर से पंजाब में लाल लहू से नहाए नंगे नाच रहे आतंकवाद के भूत पर शांति, अमन सुख और समृद्धि का सफेद कफन डाल दिया गया।

पंजाब शांति के जिस मुकाम पर आज खड़ा है, उसे वहां तक लाने के लिए पंजाब पुलिस के साथ के.रि.पु.बल के जवानों ने भारी कीमत अदा की है। 1983 से ही के.रि.पु.बल पंजाब में आतंकवाद के आवेग के सम्मुख अडिग चट्टान की भाँति खड़ा है। पंजाब पुलिस के बाद इस आवेग का सर्वाधिक धक्का के.रि.पु.बल को ही झेलना पड़ा है। अकेले इसी वर्ष पहले छः महीनों में के.रि.पु.बल ने सम्पूर्ण पंजाब में 34 खूंखार आतंकवादियों को गिरफ्तार किया, तथा इस दौरान विभिन्न मुठभेड़ों में 115, आतंकवादी मारे गए। इस दौरान बल के जवानों ने 165 घातक हथियार भी बरामद किए। ये आंकड़े उस दौर के हैं, जबकि आतंकवाद का आवेग अपने उतार पर था। पिछले पूरे एक दशक में जब आतंकवाद अपने उत्कर्ष पर था, तो वहां बल के जवानों ने भारी संख्या में अपने बलिदान दे कर इस आवेग को थामे रखा। वहीं उन्होंने उल्लेखनीय सफलताएं भी प्राप्त कीं। इस एक दशक में के.रि. पु.बल ने 2521 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा 5670 घातक हथियार बरामद किए। एवल में बल के 189 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 500 या तो गंभीर रूप से जखमी हुये या जीवन भर के लिए अपंग हो गए।

1993 में पंजाब में के.रि.पु.बल की उपलब्धियां

पंजाब तथा चण्डीगढ़ स्थित बल की युनिटों के जवानों की इस वर्ष 30 अक्टूबर, 93 तक आतंकवादियों के साथ 65 मुठभेड़ें हुयीं। इन मुठभेड़ों में 143 आतंकवादी मारे गए। इन मुठभेड़ों में बल के तीन जवान मारे गए तथा दो गम्भीर रूप से घायल हुए। इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 14 जी.पी.एम.जी., 52 ए.के. 47 रायफलें, सात ए.के. 74 रायफलें, चार ए.के. 56 रायफलें, छः राकेट लांचर, 13 राकेट, तीन स्टेनगन, 32 पिस्तौल रिवाल्वर, 56 विभिन्न प्रकार की रायफलें/गनों तथा वायरलैस सैट, सायनाइड, रिमोट कंट्रोल, बुलेट प्रूफ जैकेट सहित भारी मात्रा में अन्य विध्वंसक सामग्री तथा मोटरगाड़ियां बरामद कीं। सद्भावना के तौर पर पंजाब स्थित बल की युनिटों के सदस्यों ने अपने वेतनों में से 4, 48, 214 रुपए एकत्र कर बाढ़ पीड़ितों की

राहत के लिए पंजाब के मुख्यमंत्रियों के राहत कोष में भेंट किए।

आतंकवादियों से लड़ना, भिड़ना, उनके मनसूबों पर पानी फेर देना, देश की शांति व्यवस्था बनाए रखने में अपने प्राणों की बाजी लगा देना के.रि.पु.बल के जवान की एक सामान्य दिनचर्या है। इसके अतिरिक्त इन सब व्यवस्तताओं के बावजूद वह अपने लिए खेदकूद आदि के लिए भी समय निकाल लेता है। इस वर्ष महानिरीक्षक परिचालन पंजाब क्षेत्र के अधीन आने वाली विभिन्न, रेंजों के बीच इंटर आप्स रेंज प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें कबड्डी मुकाबलों में फिरोजपुर रेंज की 62 बटालियन प्रथम तथा जालंधर रेंज की 122 वीं बटालियन दूसरे स्थान पर रही। बालीबाल मुकाबलों में चण्डीगढ़ रेंज की 107 बटालियन प्रथम तथा जालंधर रेंज की 68 बटालियन द्वितीय रही।

बास्केट बाल मुकाबलों में जालंधर रेंज की 92 बटालियन प्रथम तथा 120 बटालियन द्वितीय रही।

रस्साकशी में चण्डीगढ़ रेंज की 92 बटालियन प्रथम तथा फिरोजपुर रेंज की 66 बटालियन द्वितीय रही। निशानेबाजी के मुकाबलों में फिरोजपुर रेंज की 105 बटालियन प्रथम तथा फिरोजपुर रेंज की ही 66 बटालियन द्वितीय रही।

टेनिस मुकाबलों में महानिरीक्षक श्री आर.के.शर्मा और अपर उप महानिरीक्षक आर.एस.गिल प्रथम तथा 66 बटालियन के कमान्डेन्ट आर.सी.पुरी और 95 बटालियन के डिप्टी कमान्डेन्ट जे.एस. गिल द्वितीय रहे।

रिपोर्ट-अनिल

बिहार सेक्टर

बिहार सेक्टर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नवनिर्मित सेक्टर है। अपने लघु स्वरूप के बावजूद इस सेक्टर ने खेलकूद तथा कल्याण कार्यक्रमों में विशेष उपलब्धियां हासिल की हैं। वर्तमान में इस सेक्टर के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी हैं।

ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट बिहार सेक्टर का अकेला ग्रुप केन्द्र है। इस कारण इस ग्रुप केन्द्र को व्यस्तता कुछ अधिक रहती है। बावजूद इस के इस ग्रुप केन्द्र तथा इसकी यूनिटों के कार्मिकों ने अपने अपने क्षेत्रों में कई राहत कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है। लखनपुर, गोसाई गांव, मरांची, घोसवरी गांव, मोकामाघाट बाजार स्थित पावर हाऊस फैमिली लाइन, मोकामा माल गोदाम तथा हाथीदह स्थित मैक डावेल कम्पनी में अलग-अलग समय में लगी भीषण आग पर काबू पाने में इस सेक्टर के कार्मिकों का योगदान सराहनीय रहा तथा उसकी स्थानीय नागरिकों तथा प्रशासन ने भरपूर प्रशंसा भी की। बल के कार्मिकों की तुरंत सहायता के कारण जान व माल की

भारों तबाहों को बचा लिया गया।

9 सितंबर, 93 को ग्रुप केन्द्र कैम्प के नजदीक स्थित टालघाट के पास एक भयंकर रेल दुर्घटना हो गयी। दुर्घटना की सूचना मिलते ही ग्रुप केन्द्र के जवान तत्काल घटनास्थल पर पहुंचे तथा राहत कार्यों में जुट गए। उन्होंने घायलों की सुश्रूषा की तथा उन्हें अस्पताल पहुंचाने में मदद की। बल के जवानों के सेवा भाव तथा कर्तव्यपरायणता से सभी अविभूत थे।

इस ग्रुप केन्द्र के जवानों ने मार्च, 93 माह में झारखंड मुक्ति मोर्चा द्वारा चलाए गए आन्दोलन में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने में विशेष योगदान दिया। इस ग्रुप केन्द्र ने आन्दोलनकारियों का सामना करने के लिए चार अश्रु गैस दस्ते भी उपलब्ध कराए।

इस सेक्टर की 95 बटालियन की “डी” कम्पनी के एक जवान को राजपुरा और सराय बंजारा के बीच रेल पटरी की सुरक्षा ड्यूटी के दौरान एक कपड़े के थैले में 8,500 रुपए मिले जो स्टेशन मास्टर को सौंप दिए गए। बाद में ये राशि दीन मोहम्मद नामक व्यक्ति को सौंप दी गई, जिसके हाथ से ये थैला सफर के दौरान गिर गया था।

9 सितंबर, 93 को भारत बंद के दौरान 126 बटालियन की “बी” कम्पनी जोरहाट असम में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात थी। ड्यूटी के दौरान नायक आजम खां को एक मोटरसाइकिल सवार युवक पर संदेह हुआ और उसने अपने साथियों के सहयोग से उपयुक्त योजना बनाकर उस युवक को गिरफ्तार कर लिया। रमन अराली नामक उस युवक के पास से स्पेन निर्मित .32 बोर की एक रिवाल्वर तथा जिंदा कारतूस मिले। वह युवक एक घोषित सजायाफ्ता आतंकवादी था।

इन के अतिरिक्त त्रिपुरा तथा देश के अन्य भागों में परिचालन के लिए तैनात इस सेक्टर की बटालियनों ने अनेक उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त कीं।

खेलकूद के क्षेत्र में भी यह सेक्टर अग्रणी रहा। सेक्टर स्तर की प्रतियोगिताओं में इस सेक्टर ने फर्स्ट एंड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। हाकी तथा जूडो प्रतियोगिताओं में यह सेक्टर द्वितीय रहा तथा कुश्ती प्रतियोगिताओं में इसे तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

पटना रेंज की अंतर बटालियन खेलकूद प्रतियोगिताओं में एथलेटिक्स, फुटबाल, बालीबाल, हाकी और कबड्डी प्रतियोगिताओं में इस सेक्टर की 95 बटालियन प्रथम रही तथा क्रास कंट्री, फर्स्ट एंड, एम.टी. तथा कुश्ती प्रतियोगिता में उसे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ।

ज्ञान गंगा

जहां सत्य है, वहां शुद्ध ज्ञान है, जहां ज्ञान है, वहां आनंद ही हो सकता है.

बगैर अहिंसा के सत्य की खोज असंभव है.

मनुष्य अपनी कम से कम जरूरत के अलावा जो कुछ लेता या संग्रह करता है, वह भी चोरी है.

दुर्भावना मनुष्यत्व का कलंक है.

मनुष्य के दुःख का कारण स्वयं है मनुष्य ही है.

जीवन में आदर्श की पूरी सिद्धि कभी नहीं होती.

दुखी मनुष्य को यह हक नहीं है कि वह काम ही न करे.

आत्मशुद्धि में से आत्मज्ञान होता है.

सत्य इतिहास से परे है.

गतिविधियां प्रशिक्षण संस्थान



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रशिक्षण संस्थान वर्ष भर प्रशिक्षण गतिविधियों के

केन्द्र रहते हैं। बल के इन संस्थानों में बल के रणबांकुरे, वीर सिपाहेयाँ एवं अधिकारियों को आधुनिकतम प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है। बल के राजपत्रित अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए माउन्ट आबू, राजस्थान में आन्तरिक सुरक्षा अकादमी कार्यरत है। इसके अतिरिक्त नीमच तथा आवड़ी में बल के दो केन्द्रीय प्रशिक्षण केन्द्र भी कार्य कर रहे हैं। इन केंद्रों में बल के सब-इंस्पेक्टर तथा अन्य अधीनस्थ अधिकारियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के चार रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र नीमच, आवड़ी, पल्लीपुरम तथा श्रीनगर में कार्य कर रहे हैं। इन प्रशिक्षण केन्द्रों में रंगरूट कांस्टेबलों को प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त मोटर परिवहन, क्वार्टर मास्टर तथा मंत्रालियक स्टाफ से संबंधित अन्य कोर्स भी समय-समय पर चलाये जाते रहते हैं।

इन केन्द्रों के अतिरिक्त रामपुर में बल का एक केन्द्रीय हथियार केन्द्र भी है जहां इस वर्ष बेसिक एम्युनिशन टेक्नीकल कोर्स चलाया गया।

हैदराबाद तथा रामपुर में हमारे आर्म वर्कशाप केन्द्र भी कार्यरत हैं। इन केन्द्रों में भी इनके कर्मचारियों के लिए उनसे संबंधित कोर्स चलाया गया। बेस अस्पताल-एक में भी पैरा मेडिकल नर्सिंग सहायक कोर्स चलाया गया। ग्रुप केन्द्र-1 में बैंड तथा बिगुलर से संबंधित कोर्स चलाया गया।

1993 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने केन्द्रीय तथा राज्य पुलिस संगठनों के 24 कार्मिकों को निहत्थे हथियार कौशल का प्रशिक्षण दिया तथा केन्द्रीय पुलिस बलों के 18 कार्मिकों को भीड़ पर काबू पाने से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के आवड़ी केन्द्र में इस वर्ष आतंकवाद तथा विद्रोहात्मक गतिविधियों पर काबू गाने से संबंधित एक कोर्स की शुरुआत की गई। इस कोर्स में बल के सभी पदों पर कार्यरत 61 कार्मिकों ने भाग लिया।

इस वर्ष सीतापुर, उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश पुलिस कार्मिकों को बल के प्रशिक्षकों ने आतंकवाद तथा विद्रोहात्मक स्थितियों पर काबू पाने से संबंधित एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण प्रदान किया।

इसी प्रकार बल के प्रशिक्षकों ने जम्मू कश्मीर के 120 प्रशिक्षु पुलिस कार्मिकों को आधुनिकतम हथियारों से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया।

गुनाह छिपा नहीं रहता, वह मनुष्य के मुंह पर लिखा रहता है.

श्रद्धा की परीक्षा सबसे कठिन अवसर पर होती है.

मनुष्य मारना सीखे, उससे पहले उसमें मरने की शक्ति होनी चाहिए.

स्मृति

पुलिस स्मारक दिवस

21 अक्टूबर, एक भावभीना दिवस है, हमारी संवेदनाओं को जगाता है इस दिवस का स्मरण। पर साथ ही एक गौरव, कर्तव्य के प्रति सदैव सजग सतर्क रहते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देने के भाव का संचार भी हमारे शरीर में कर जाता है 21 अक्टूबर। 21 अक्टूबर पुलिस स्मारक दिवस है। 1959 में इसी दिन के.रि.पु.बल के 10 वीर रण बांकुरे हाट स्प्रिंग में संख्या में अपने से बेहद बड़ी, अधिक आधुनिक शस्त्रों से सज्जित एक चीनी टुकड़ी से मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। हालांकि ये घटना 34 वर्ष पूर्व की है, मगर उन वीरों की शहादत आज भी प्रत्येक भारतीय पुलिस कर्मी के मन मस्तिष्क पर प्रेरणा की अमिट छाप बन कर छापी हुयी है। हम इस दिन हाट स्प्रिंग के अपने उन वीर साथियों को याद करते हैं, साथ ही याद करते हैं, उन पुलिस कर्मियों को जो विगत में आतंकवादी मुठभेड़ों में या विकट कानून व्यवस्था की स्थितियों में बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हुए हैं।

ज्यों-ज्यों हमारी आंतरिक सुरक्षा पर घात प्रतिघात बढ़ते जा रहे हैं, त्यों-त्यों हमारे देश के पुलिसकर्मियों का कार्य अधिक तनावपूर्ण, अधिक जोखिमपूर्ण होता जा रहा है। साथ ही अपनी मातृभूमि पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले बहादुर पुलिस कर्मियों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी होती जा रही है। हाट स्प्रिंग प्रकरण के बाद से लेकर अब तक इस संख्या में खासी बढ़ोत्तरी हो चुकी है। 1960 के दशक में कर्तव्य पर मारे गए पुलिस कर्मियों की कुल संख्या 1,543 थी, जबकि अगले दशक में यह संख्या बढ़कर 3,352 हो गयी। 1980 के दशक में इस संख्या में और वृद्धि हुई तथा यह आंकड़ा 7,144 तक जा पहुंचा।



अकेले 1987 से 1992 तक के पाँच वर्षों में ही 5,283 पुलिस कर्मी आतंकवादियों, देशद्रोही तथा समाज विराधी तत्वों के विरूद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इस अवधि में सर्वाधिक पंजाब पुलिस के 1,096 जवान मारे गए। जबकि इस अवधि में उत्तर प्रदेश में 552, बिहार में 188, आंध्र प्रदेश में 179, असम में 156, जम्मू कश्मीर में 127, हरियाणा में 123, महाराष्ट्र में 112, मध्य प्रदेश में 103, राजस्थान में 75, कर्नाटक में 74, गुजरात में 72, नागालैंड में 71, दिल्ली में 68 तथा मणिपुर में 51 पुलिसकर्मी मारे गए। केन्द्रीय पुलिस संगठनों के जवानों द्वारा दी गई कुल 1,987 शहादतों में सबसे बड़ा आंकड़ा सीमा सुरक्षा बल तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का रहा। इन पांच वर्षों में सीमा सुरक्षा बल के 1000 कर्मी, वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि के.रि.पु.बल के 637 जवान कर्तव्य की बलिवेदी पर शहीद हो गए।

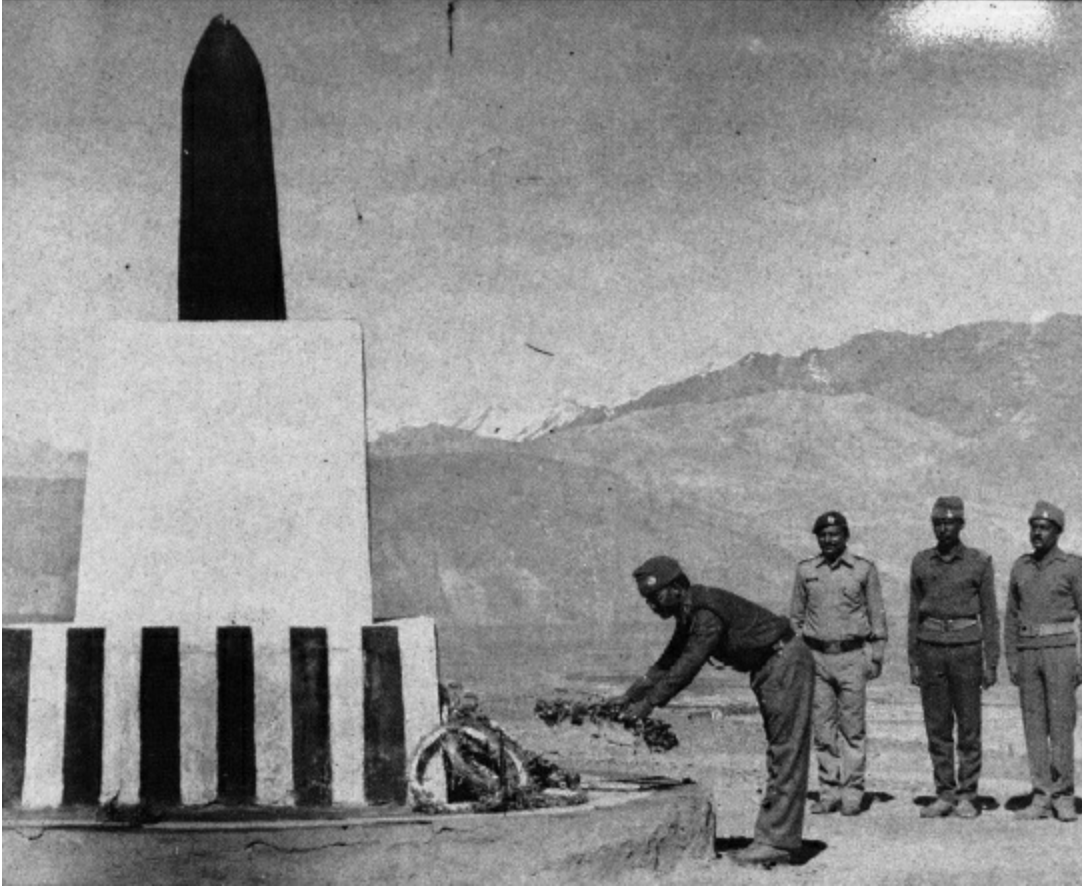
इस संबंध में ब्यूरो आफ पुलिस रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा किया गया एक विश्लेषण बताता है कि देश में कार्यरत पुलिस कर्मियों को भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्तव्यों को अंजाम देते हुए अपनी जान गंवानी पड़ी है। इन कर्तव्यों में अपराधियों की खोज, डकैत विरोधी अभियान, दंगों पर काबू पाने के प्रयास तथा अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा जैसे कर्तव्य भी शामिल हैं, मगर पुलिस बलों को सर्वाधिक हानि आतंकवाद तथा देशद्रोही गतिविधियों के विरूद्ध छेड़े गए अभियानों के दौरान उठानी पड़ी है।

अपने कर्तव्य को अंजाम देते हुए शहीद हुए इन पुलिसकर्मियों में से आधिकांश युवा थे। 1990 में ब्यूरो आफ पुलिस रिसर्च तथा डवलपमेंट द्वारा किया गया एक शोध बताता है कि 1983 से 87 के बीच कर्तव्य पर मारे गये 1000 पुलिस कर्मियों में से 45 प्रतिशत 36 वर्ष से कम आयु के थे। लगभग 11 प्रतिशत 25 वर्ष से भी कम आयु के थे तथा 14 प्रतिशत 26 से 30 वर्ष तक के थे।

मातृभूमि की सेवा में बलिदान देश की पुलिस सेवाओं के लगभग हर रैंक ने दिए हैं। आलोच्य पांच वर्षों (1987-92) में मारे गए पुलिस कर्मियों में 38 पुलिस अधीक्षक या कमान्डेन्ट स्तर के थे, जबकि 71 उपाधीक्षक रैंक के थे। अधीनस्थ श्रेणी में मारे गए पुलिस कर्मियों में 116 इंस्पेक्टर, 440 सब इंस्पेक्टर तथा 250 सहायक सब इंस्पेक्टर शामिल हैं। पुलिस शक्ति का सबसे बड़ा हिस्सा उसकी कांस्टेबलरी है, और इसी रैंक को सर्वाधिक प्रहार का सामना भी सबसे पहले करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप पुलिस बलों को जान हानि भी सर्वाधिक यहीं उठानी पड़ती है। इस समयावधि में मारे गए पुलिस कर्मियों में 786 हैड कांस्टेबल, 443 नायक और लांस नायक तथा 2,998 कांस्टेबल शामिल हैं।

पूरी दुनिया में, कहीं भी, किसी भी देश की पुलिस ने इतनी बड़ी संख्या में कर्तव्य की बलिवेदी पर जवानों को नहीं खोया है। 1829 में इंग्लैंड में स्थापित मेट्रोपोलिटन पुलिस को 1991 तक कर्तव्य की वेदी पर अपने मात्र 220 जवान और अधिकारी खोने पड़े हैं। 80 के दशक में अमेरिका में केवल 801 पुलिसकर्मी असामाजिक तत्वों से लड़ते हुए मारे गए। जबकि इंग्लैंड में 80 के दशक में प्रतिवर्ष औसतन दो पुलिस कर्मियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। अमेरिका में यह औसत 80 रहा। जबकि अपने देश में पिछले पांच वर्षों में प्रति वर्ष यह औसत 1056 का रहा है। दरअसल भारतीय पुलिस की यह हानि इससे अधिक है, क्योंकि कुछ मामलों में आतंकवादियों ने पुलिस कर्मियों के पूरे के पूरे परिवारों को ही समाप्त कर दिया है।

इतनी बड़ी तादाद में होने वाली यह हानि अब देश और अधिक नहीं सह सकता। हमें अपनी क्षमता, शक्ति और साधनों का पुनर्मूल्यांकन करने की जरूरत है। पुलिस बलों के प्रशिक्षण पर भी पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य के लिए ऐसे पुलिसकर्मी तैयार किये जा सकें जो कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी तमाम जोखिमों को पार करते हुए विजयी ध्वज लिए बाहर आ सकें, बिना किसी जान और माल की हानि के।



हाट स्प्रिंगज स्थित पुलिस स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि अर्पित करते पुलिस कर्मी

यह सही है कि पुलिस की नौकरी एक जोखिम भरा व्यवसाय है तथा यदाकदा यहां जान भी गंवानी पड़, सकती है, लेकिन उनकी ये शहादतें उनके परिजनों को तोड़ न दें, इसलिए उनका भी पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। उनके कल्याण कार्यक्रमों पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। यह कदम कर्तव्य पर लड़ने वाले पुलिस कर्मियों में एक नये उत्साह तथा स्फूर्ति का संचार करेगा तथा खतरों से भरे अपने कर्तव्य को अंजाम देने के लिए उनमें नए विश्वास को भी पैदा करेगा। मगर ये दायित्व सरकार के साथ साथ समाज का भी है।

21 अक्टूबर हमें हमारे इसी दायित्व का स्मरण कराता है। हम इस दिन अपने उन वीर साथियों को श्रद्धांजलि देते हैं, जो आज हमारे बीच नहीं हैं। इस दिन समाज तथा जनता को भी सोचना है कि हम हमारे बीच पसर चुकी हिंसा को कैसे अपनी नसों से निकाल बाहर करें। इसके लिए अकेली पुलिस कुछ नहीं कर सकती, हां यदि समाज और जनता साथ दे, तो कोई बड़ी बात नहीं कि सुख और शांति से परिपूर्ण जिस समाज का सपना हमारी पहली पीढ़ियां देखती रही हैं, उसे हम प्राप्त कर ही लें।

संदर्भ

के. रि. पु. बल में हिंदी

लार्ड क्लाइव ने भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना की थी तो मैकाले ने अंग्रेजियत की बेल को फैलाया था। अंग्रेजी के कारण ही हमारी परंपराएं दूषित हुईं और आपस में भेदभाव बढ़ा है। इसी विचार को प्रकट करने के लिए 14 सितम्बर को के.रि.पु. बल सहित देश के सभी भागों में 14 सितम्बर को लोगों ने अंग्रेजी की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा व राजभाषा बनाने के लिए शपथें लीं।

दरअसल राष्ट्रीय चेतना, एकता तथा विकास के लिए की जाने वाली संगोष्ठियां, समारोह, दिवस आदि मात्र एक परंपरा समझकर टाल दिये जाते हैं। हमारे घर में कोई दूसरा आदमी आकर घुस जाए तो क्या हमें यह कभी बर्दाश्त होगा, कदापि नहीं? फिर जिस भाषा ने हमें तोड़ा है, दूषित किया है, भेदभाव बढ़ाया है, क्यों न हम उसे तिलांजलि दे दें। जिस प्रकार देश का राष्ट्रीय झंडा एक है, राष्ट्रीय गीत एक है, उसी तरह हमारी राष्ट्रभाषा व राजभाषा भी एक है। भारत के संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है, साथ ही कुछ राज्य सरकारों ने भी हिन्दी को अपने राज्य की भाषा के रूप में मान्यता दी है। किन्तु केन्द्र सरकार के काम-काज में अपनायी जाने के लिए हिन्दी अभी भी दहलीज पर खड़ी हुई है, उसे इस प्रकार सीमा में बांध दिया गया है कि वह केवल दरवाजों पर, सड़कों पर व दीवारों पर लटक कर रह गई है। यह बात तो उसी प्रकार हुई जैसे हम सभी गाय को माता मानते हैं, उसकी पूजा करते हैं किन्तु घर में कोई भी उसे स्थान देने के लिए राजी नहीं। जो पूजनीय है उसके लिए घर में जगह क्यों नहीं? हिन्दी दीवारों व चौखटों पर लटकने के लिए नहीं बल्कि उसे फाइल की भाषा बनाएं, शिक्षा का माध्यम बनाकर राष्ट्रीय भेदभाव को मिटाएं।

के.रि.पु. बल अपनी स्थापना के समय से लेकर आज तक देश की अलग अलग संस्कृतियों, संप्रदायों, बहुभाषी जातियों व लोगों को आपस में जोड़ने का संगम रहा है। 1975 से पूर्व बल की फाइलों में एक भी हिन्दी शब्द नहीं लिखा जाता था। कर्मचारियों/अधिकारियों को पढ़ने व लिखने में अत्यधिक झिझक थी। कार्यालय-भाषा की कोई शब्दावली हमारे पास नहीं थी। उसी दौरान महा-निदेशालय में हिन्दी अनुवादक का पद बना तथा वर्ष 1977 में तत्काल 5 पद और बनवाए गये। बस यहीं से बल में हिन्दी के विकास के चरण बढ़ते गये और आज बल में एक हिन्दी अधिकारी व 34 हिन्दी अनुवादक तथा करीब इतने ही हिन्दी टाइपिस्ट मौजूद हैं। हर कार्यालय में दो-दो, चार-चार तथा महानिदेशालय में 26 देवनागरी टाइपराइटर उपलब्ध हैं। विगत में अलग से हिन्दी टाइपिस्टों व हिन्दी स्टेनोग्राफरों की भी भर्ती की गई है।

आज बल के अन्दर राजभाषा प्रयोग को बढ़ाने के प्रति हम दो मील-पत्थर ऐसे स्थापित कर चुके हैं कि भारत के किसी भी केन्द्र सरकार के कार्यालय में ऐसा शायद देखने को नहीं मिलेगा। पहला है स.उ.नि. (लिपिक) की भर्ती से सामान्य अंग्रेजी की अनिवार्यता को हटाना और दूसरा है बेसिक ट्रेनिंग के बाद संबंधित कार्मिकों को

हिन्दी, हिन्दी टाइपिंग व हिन्दी स्टेनोग्राफी आनेवाये रूप से सिखाना। पिछले सत्र में हमारे 23 कार्मिक प्रशिक्षित हो चुके हैं तथा वर्तमान में 21 कार्मिक प्रशिक्षण ले रहे हैं। बल में फोर्स आर्डर अनिवार्यतः हिन्दी में जारी हो रहा है। हिन्दी प्रयोग में और अधिक तेजी लाने के लिए हिन्दी कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं, समारोह एवं निरीक्षण आदि किये जा रहे हैं। राजभाषा नीति सही प्रकार लागू करने के लिए हाल ही में बल को वर्ष 1990-91 के लिए सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया तथा गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड बल के महानिदेशक महोदय ने गृह राज्य मंत्री जी से विज्ञान भवन में 16 जून 93 को आयोजित एक भव्य समारोह में प्राप्त की।



गृह राज्य मंत्री श्री रामलाल राही से राज भाषा शील्ड ग्रहण करते हुए महानिदेशक श्री डी. पी. एन. सिंह बल के कार्मिकों ने अखिल भारतीय स्तर की कई प्रतियोगिताओं में भी प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किये हैं। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित 27 वीं अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में ग्रुप केन्द्र रामपुर के श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव ने चल वैजयन्ति शील्ड व 351 रु. का नकद पुरस्कार हासिल कर बल का गौरव बढ़ाया। ग्रुप केन्द्र, पिंजोर के श्री के.डी. पटियाल तीसरे स्थान पर रहे। नोटिंग व डाफ्टिंग में 126 बटा. शिवपुरी के श्री आर.पी. सिंह ने तृतीय स्थान, निबंध प्रतियोगिता में कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक, के.रि.पु.बल, शिलांग के सर्व श्री विश्वजीत व भद्रेश्वर बोरा ने विशिष्ट स्थान प्राप्त कर 201-201 रुपये के पुरस्कार प्राप्त किये और इसी कार्यालय के श्री आर.आर. धर ने 101 रुपये का पुरस्कार प्राप्त किया।

उपयुक्त के आतिरेक्त पिछले कई वर्षों से तिरुवनंतपुरम स्थित हमारा ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम, वहां स्थित केन्द्र सरकार के 88 कार्यालयों के बीच आयोजित प्रतियोगिताओं में लगातार 3 वर्ष से भी अधिक समय से वैजयन्ति शील्ड हासिल करता रहा है और इस का श्रेय तत्कालीन अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री महेन्द्र प्रसाद को जाता है।

वर्तमान में ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर में पदस्थ श्री महेन्द्र प्रसाद के तत्वावधान में हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह 20 सितंबर 93 को आयोजित किया गया। अपने अल्पकाल में ही उन्होंने इस्पात संयंत्र, माइनिंग एंड ऐलाइड मशीनरी कार्पोरेशन, केन्द्रीय कार्यालयों, प्रतिष्ठानों एवं संस्थाओं के अध्यक्षों को इस समारोह के साथ जोड़कर कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग बढ़ाने के प्रति एक उत्कृष्ट प्रयास का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि श्री जे.पॉलराज, कार्यकारी निदेशक, मिश्र इस्पात संयंत्र ने इस समारोह को ऐतिहासिक बताते हुए ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर के प्रयासों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों को अपने प्रयासों के साथ जोड़ने के लिए श्री महेन्द्र प्रसाद की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

पूर्वोत्तर राज्यों में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों के बीच हिन्दी स्पर्धा में हमारी 78 वीं बटा. ने दूसरा स्थान तथा पु.उ.म.नि. कार्यालय गुवाहाटी ने वर्ष 1990-91 के दौरान चौथा स्थान अर्जित किया है तथा वर्ष 1991-92 में ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी व ग्रुप केन्द्र इम्फाल ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान पर रह कर टाफियां जीती हैं। 78 वीं बटा., के. रि.पु.बल, ऐजवाल का दिनांक 24.9.91 को संसदीय राजभाषा समिति ने निरीक्षण किया तो बटालियन के काम-काज व कमांडेंट श्री धूमसिंह पुंडीर से सदस्य इतने प्रभावित हुए कि ऐजवाल स्थित अन्य कार्यालयों के निरीक्षण में बटा. व कमांडेंट पुंडीर की बार-बार प्रशंसा की गई। हाल ही में 28 सितंबर 93 को समिति ने उत्तरी सेक्टर कार्यालय में भी दौरा किया और यह देखने को मिला कि पिछले दो माह में उत्तरी सेक्टर में शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में किया गया जो इस बात का सबूत है कि हिन्दी में कार्य करना आसान है और किसी भी तरह के संदेह का कोई आधार नहीं है। समिति ने हिन्दी टाइपिस्टों व हिन्दी स्टेनोग्राफरों की भर्ती पर बार-बार बल दिया।

महानिदेशालय में भी 14 सितम्बर 93 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इससे पूर्व हिन्दी व्यवहार, नोटिंग/डाफ्टिंग, टायपिंग प्रतियोगिताएं की गई तथा हिन्दी कार्यशाला भी चलाई गई। महानिदेशक महोदय ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये। इस अवसर पर गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य श्री आर.एस. गुप्ता को भी आमंत्रित किया गया था। हिन्दी अधिकारी ने बल की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा सहायक निदेशक (प्रशा.) ने सभी को महानिदेशक महोदय का संदेश पढ़ कर सुनाया। महानिदेशक महोदय ने सुझाव दिया कि हिन्दी प्रयोग को बढ़ाने में हमने अहिन्दी भाषियों को भी साथ लेकर चलना है अतः शनैः शनैः प्रगति करनी है। किसी भी पौधे को एक साथ ढेर-सारा पानी या खाद देने से लाभ की जगह नुकसान ही पहुँचता है। अतः अभी से दैनिक जीवन में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग

करें इससे आपको शब्दावली का भी ज्ञान होगा और झिझक भी दूर होगी।

जब देश आजाद हुआ तो किसी ने बापू से जाकर पूछा कि अब तो देश आजाद हो गया है आप देशवासियों के नाम क्या संदेश देना चाहेंगे? महात्मा गांधी ने एक क्षण चुप रहने के बाद उस व्यक्ति से कहा कि “सभी देशवासियों को यह सूचना दे दो कि महात्मा गांधी को अंग्रेजी बिल्कुल नहीं आती।” उनके कहने के लहजों में छिपे भाव को व दूरदर्शिता को काश हम समझ गये होते तो हमारा प्रजातंत्र और मजबूत होता, हमारा आपस का अपनत्व बढ़ता।

एस. एन. सिंह (हिंदी अधिकारी)

उपलब्धियां

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेलकूद

खेलकूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की रोजमर्रा जिन्दगी का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। बल में समय-समय पर अनेक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है तथा बल के खिलाड़ी कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धाओं में भाग लेकर देश तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की गरिमा को बढ़ाते रहते हैं। खेलकूद के क्षेत्र में यह वर्ष केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। इस वर्ष की मुख्य उपलब्धियां निम्न है:

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

इस वर्ष कोलोराडो, अमेरिका में हुए विश्व पुलिस खेलों में बल के तैराक सहायक कमान्डेन्ट एस. राधाकृष्णन ने 50 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक सुकाबले में रजत पदक जीता। इन्हीं प्रतियोगिताओं में इंस्पेक्टर राजेन्द्र सिंह ने 4x400 मीटर रिले में स्वर्ण तथा 110 मीटर बाधा और हाई जंप मुकाबलों में रजत पदक जीते।

इस वर्ष जून में मिनाक, बेलारूस में हुई अन्तर्राष्ट्रीय जूडो प्रतियोगिता में बल के इंस्पेक्टर तिलक थापा ने 65 किलोग्राम श्रेणी में कांस्य पदक जीता। तिलक थापा ने हैमिल्टन कनाडा में हुई विश्व जूडो प्रतियोगिता में भी भाग लिया।

राष्ट्रीय स्तर पर

बल के पहलवान हैड कांस्टेबल राम कुमार ने सांगली, महाराष्ट्र में हुई वरिष्ठ राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेकर कांस्य पदक जीता। के.रि.पु. बल ने इस वर्ष 10 स्वर्ण, 6 रजत तथा 8 कांस्य पदक प्राप्त कर 42वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं की ट्रॉफी जीत ली।

बल के इंस्पेक्टर राजाराम ने 100 मीटर तथा 200 मीटर बैक स्टोक तथा 400 मीटर व्यक्तिगत मैडले में नये कीर्तिमान स्थापित किए। हमारे तैराकों ने 4 x 400 मीटर व्यक्तिगत मैडले में भी नये रिकार्ड बनाये।



श्री एन.के. तिवारी उपनिदेशक (प्रशिक्षण एवं खेल) उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा से 42वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं की ट्रॉफी ग्रहण करते हुए।



केंद्रीय कार्मिक एवं लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री श्रीमती मार्गरेट अल्वा के.रि.पु.बल. के प्रथम शापिंग कॉम्पलेक्स पूर्ति का उद्घाटन करते हुए

के.रि.पु.बल कथानक-गीत

सेवा-भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहाता है,
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भारत माता ही माता है।

इतिहास साक्षी उस लौह-पुरुष ने वरद-हस्त इन पर रक्खा,
अब भारत क्या संसार नहीं ऐसा फौलाद बनाता है।

नारी ने इनमें पाई प्रतिष्ठा नर से पीछे नहीं रही,
वीरांगना वो कर देती है जो वीर नहीं कर पाता है।

मिट्टी-पानी इनको गढ़ने कोने-कोने से लाते हैं,
इस देश का कोना-कोना इनको संकट समय बुलाता है।

हर मौसम लहराने वाला भारत का ये खाकी झण्डा,
जितनी ही आंधी चलती है उतना ही ये लहराता है।

लाखों वीरों का ये दल-बल इस महाधर्म का पालक है,
पूजा नमाज़ जैसे भी करें पर भारत भाग्य विधाता है।

डूबते होंगे डरने वाले मरने वाले मरते होंगे,
इस दल का वीर नहीं मरता वह तो शहीद हो जाता है।

अमर शहीद जिंदाबाद, ... भारत माँ जिंदाबाद
सी.आर.पी.एफ. जिंदाबाद सी.आर.पी.एफ. जिंदाबाद ॥

